Reg. No. B. 719.

ॐ

जैनहितैषी ।

साहित्य, इतिहास, समाज और धर्मसम्बन्धी लेखोंसे विभूषित

मासिकपत्र ।

सम्पादक और प्रकाशक—नाथूराम प्रेमी ।

ग्यारहवाँ भाग । | पौष । श्रीवीर नि०संवत २४४१ | ३ रा अंक ।

विषयसूची ।

		पृष्ठ.
१	विविध प्रसंग	१२७
२	जयपुर राज्य, अँगरेज़ सरकार और सेठीजीका मामला	१५५
३	लुक़मानका क़ौल (कविता)	१६३
४	दान और शीलका रहस्य	१६५
५	वैश्य (कविता)	१७४
६	उदासीनाश्रम	१७६
७	हृदयोद्गार (कविता)	१८३
८	सहयोगियोंके विचार	१८५

वार्षिक मूल्य उपहार सहित २।=) ।
वर्षके प्रारंभसे ग्राहक बनाये जाते है ।

पत्रव्यवहार करनेका पता—
मैनेजर, जैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, बम्बई ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जैनहितैषीके उपहार-ग्रन्थ

अब पूर्वनिश्चित मूल्यमे न मिलेंगे ।

अब यदि आप मँगावेंगे तो,

चार आने ज्यादह देना होंगे ।

अर्थात्

अब दो रुपये सात आनेका वी. पी.

भेजा जायगा ।

इससे एक पैसा भी कम नहीं ।

चिट्ठी लिखते समय यह साफ़ साफ़ लिखना मत भूल जाइए कि उपहारके दो तरहके ग्रन्थोंमेंसे कौन तरहके ग्रन्थ चाहिए:—

आत्मोद्धार और कठिनाईमें विद्याभ्यास

अथवा

धर्मविलास और नेमिचरित ।

अपना ग्राम, पता, ग्राहक न० आदि साफ़ लिखिए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जैनहितैषी।

श्रीमत्परमम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात्सर्वज्ञनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

१ वाँ भाग { पौष, वीर नि० सं० २४४१। } अंक ३

विविध प्रसंग।

१ जैनसाहित्यकी समालोचना।

न—साहित्यको अन्य साहित्योंकी बराबरीका आसन दिलानेके लिए-संसारकी दृष्टि उसकी ओर आकर्षित करनेके लिए जिस तरह उच्चश्रेणीके जैनसाहित्यको प्रकाशित करनेकी और उसकी आलोचनात्मक चर्चा करनेकी आवश्यकता है उसी तरह जो निम्नश्रेणीका रद्दी और दुर्बल साहित्य है उसकी कड़ी समालोचना होनेकी भी ज़रूरत है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि हमारे साहित्यका एक अंश जितना ही उत्कृष्ट मार्मिक और विविधगुणसम्पन्न है उसी तरह उसका एक अंश—विशेष करके वह जो पिछले समयमें भट्टारकों

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तथा उनके शिष्यों द्वारा निर्मित हुआ है—बहुत ही गिरा हुआ उथला और गुणहीन है। इस बातका उल्लेख हम और भी कई बार कर चुके हैं और ऐसे कुछ ग्रन्थोंकी समालोचना प्रकाशित करनेका उद्योग भी कर रहे हैं। हर्षका विषय है कि इस ओर हमारे एक सहयोगीका भी ध्यान आकर्षित हुआ है। जैनहितेच्छुके ९–१० अंकमें सूरतके 'दिगम्बरजैन आफिस' से प्रकाशित हुए 'श्रीपाल-चरित्र' की २०–२१ पृष्ठकी विस्तृत समालोचना प्रकाशित हुई है। हम सिफारिश करते हैं कि जो सज्जन गुजराती भाषा समझ सकते हों उन्हें उक्त समालोचना अवश्य पढ़ना चाहिए और देखना चाहिए कि जो ग्रन्थ हमारे समाजमें अधिकतासे प्रचलित हैं और धार्मिक भावोंकी जागृति करनेवाले बतलाये जाते हैं उनका साहित्य किस श्रेणीका है और उनसे लोगोंको कैसी शिक्षायें मिलती हैं। समालोचनाके प्रत्येक अंशसे हम सहमत नहीं हैं तो भी हम उसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते—वह बहुत अच्छे ढंगसे लिखी गई है। ज़रूरत है कि इस प्रकारकी समालोचनायें और भी प्रकाशित की जायँ और उनके द्वारा निम्न साहित्यको नीचे गिराकर प्राचीन उत्कृष्ट साहित्यका गौरव और आदर बढ़ाया जावे।

---

२ रामायणके बन्दर कौन थे ?

बाल्मीकि—रामायणमें रामचन्द्रकी सेनाके हनुमान, जांबवन्त, सुग्रीव आदिको बन्दर, रीछ आदि बतलाया है। सनातनधर्मी भाइयोंका

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यही विश्वास है कि हनुमान आदि मनुष्य नहीं थे; वे बन्दर रीछ आदि प्राणियोंमेंसे थे। किन्तु यह बात आजकलके विचारशील विद्वानोंको असंभव मालूम होती है। इस विषयमें वे तरह तरहके अनुमान करते हैं। कोई उन्हें अनार्य जातिके मनुष्य, कोई द्रविड़ जातीय मनुष्य और कोई वानरादिके समकक्षी मनुष्य कल्पित करते हैं। इस विषयमें मराठी 'विविधज्ञानविस्तार' में कई लेख निकल चुके हैं। सितम्बरके अंकमें एक महाशयने यह सिद्ध किया है कि वे लेमूरियन जातिके प्राणी थे। जहाँ पर इस समय हिन्दमहासागर है, वहाँ एक समय एक बड़ा भारी भूखण्ड था। वह सण्डा द्वीपसे एशियाके दक्षिण तटको घेरता हुआ आफ्रिकाके पूर्वतट तक विस्तृत था। इस प्राचीन विशाल खण्डको एक विद्वान्ने लेमूरिया नाम दिया है; क्योंकि उसमें बन्दर सरीखे प्राणी रहते थे। लेमूरिया एक प्रकारके मनुष्योंसे मिलते हुए बन्दर थे। इसका प्रतिवाद दिसम्बरके अंकमें श्रीयुक्त चिन्तामणि विनायक वैद्य एम. ए. एल एल. बी. नामक प्रसिद्ध विद्वान्ने किया है। आपने रामचन्द्रका समय ईस्वी सनसे लगभग चार हज़ार वर्ष पहले अनुमान किया है और इसमें मुख्य प्रमाण यह दिया है कि महाभारतके युद्धमें दुर्योधनकी ओरसे लड़नेवाला कोसलाधिपति बृहद्बल नामका राजा रामका वंशज था। पुराणोंमें और महाभारतमें इसका उल्लेख है। यह रामकी ३० वीं पीढ़ीमें था। एक पीढ़ीके यदि ३० वर्ष गिने जावें तो महाभारतसे लगभग ९०० या हज़ार वर्ष पहले रामचन्द्रका समय आता है। महाभारतका समय ई० सन् से ३१०१ वर्ष पहले

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रायः सिद्ध हो चुका है और विश्वासके योग्य है। इस हिसाबसे ई० सन्के चार हज़ार वर्ष पहले रामचन्द्रकी वानर-सेना थी। परन्तु भूगर्भशास्त्रज्ञ विद्वानोंके मतसे उस समय हिन्दुस्तानकी और हिन्दमहासागरकी स्थिति जैसी इस समय है लगभग वैसी ही थी—महासागरके स्थानमें कोई बड़ा भारी भूखण्ड न था और न उस समय लेमूरियन जातिके बन्दरोंका अस्तित्व ही संभव है। अतएव रामायणमें जो वानरोंका वर्णन है वह बिलकुल काल्पनिक है। आगे चलकर वैद्य महाशयने उक्त वानरोंके विषयमें जो अनुमान किया है वह जैनरामायण या पद्मपुराणसे बिलकुल मिलता हुआ है। वे लिखते हैं कि "मैंने रामायणके विषयमें एक अँगरेज़ी ग्रन्थ लिखा है। उसमें मैंने बतलाया है कि इन हनुमानादिके निशानों पर—ध्वजाओं पर—बानरादिके चिन्ह होंगे और उन्हीं चिन्होंके कारण उन्हें वानरादि नाम मिले होंगे। एक जातिकी ध्वजा पर बन्दरका चित्र होगा, दूसरीकी ध्वजापर रीछका, तीसरी पर गीधका और इस कारण उन लोगोंको वानर, रीछ, गृध्र नामसे पुकारते होंगे। निशानों पर जानवरोंके चित्र बनवानेकी पद्धति आजकलके सुसभ्य राष्ट्रोंमें भी ज़ारी है। अँगरेज़ोंके निशान पर सिंह, रशियनोंके निशान पर रीछ, और जर्मनीके निशान पर गरुड़ है!....इस तरह ध्वजचिन्होंके कारण जुदाजुदा जातिके लोगोंकी वानर रीछ आदि संज्ञा पड़ गई होगी और आगे रामायणके लिखनेवालोंको ये संज्ञायें वास्तविक मालूम हुई होंगी—वाल्मीकिजीने उन्हें साक्षात् वानरादि ही समझ लिया होगा। दक्षिणमें अब भी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बहुतसे वंश और देश जानवरोंके नामोंसे प्रसिद्ध हैं। देशस्थ ब्राह्मणोंके टट्टू, रेडे (पाड़ा या भैंसा) आदि उपनामों या अटकोंको तो सभी जानते हैं; परन्तु दक्षिणके इतिहासमें माहिषिक और मूषक लोगों तकका पता लगता है। वर्तमान महसूरराज्य माहिषोंका ही वंशज है और महिषपुरका अपभ्रंश होकर महसूर बन गया है।" जैनोंके यहाँ जो राम-रावणकी कथा है उसमें भी यही कहा है कि वानरवंशी वे कहलाते थे जिनकी ध्वजाओंमें तथा मुकुटोंमें वानरका चिन्ह था। वे श्रेष्ठ क्षत्रिय मनुष्य थे; जंगली लोग या बन्दर नहीं थे। जैनरामायणमें यह भी बतलाया है कि वानरवंशियोंके कुलमें वानरका चिन्ह क्यों पसन्द किया गया था। इसके विषयमें एक कथा भी लिखी है। जैनरामायणकी बतलाई हुई यह बात उस समय और भी विशेष महत्त्वकी और माननीय जान पड़ते लगती है जब कि हम उसकी प्राचीनताका विचार करते हैं। इस विषयके उपलब्ध संस्कृत ग्रन्थोंमें सबसे प्राचीन कथाग्रन्थ संस्कृत पद्मपुराण है जो कि रविषेणाचार्यका बनाया हुआ है और जो वीर निर्वाण संवत् १२०४ में अर्थात् आजसे लगभग सवा बारह सौ वर्ष पहले बना है। अभी-तक लोग इसे ही सबसे पहला रामकथाका जैनग्रन्थ समझते थे; परन्तु अभी हाल ही 'पउमचरिय' नामक प्राकृत ग्रन्थका पता लगा है जो कि उससे बहुत पहले वीर निर्वाण संवत् ५३० अर्थात् विक्रम संवत् ६० का बना हुआ है। अर्थात् आजसे लगभग दो हज़ार वर्ष पहले भी जैनसम्प्रदायके अनुयायियोंका यह विश्वास था कि वानरवंशी लोग बन्दर नहीं किन्तु मनुष्य थे—ध्वजाओंमें

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वानरका चिन्ह रहनेके कारण वे वानरवंशी कहलाते थे। इसी बात-को माननीय वैद्यजीने कहा है। हमें विश्वास है कि वैद्यमहा-शयने जैनरामायणकें इस भागका अवलोकन अवश्य किया होगा; क्योंकि आपका जैनोंसे अच्छा परिचय रहा है। यदि न किया हो तो हम आशा करते हैं कि अब अवश्य ही करेंगे और इस विषयको और भी अधिक स्पष्ट रूपमें विद्वानोंके समक्ष उपस्थित करेंगे।

---

३ सबसे प्राचीन जैन ग्रन्थ।

पुराणोंमें सबसे पुराना जैनपुराण श्रीरविषेणाचार्यका पद्म-पुराण समझा जाता है। यह वीर निर्वाण संवत् १२०४ का बना हुआ है। यथाः—

द्विशताभ्यधिकेन समा सहस्रे समतीतेर्धचतुर्थवर्षसंयुक्ते।
जिनभास्करवर्द्धमानसिद्धे चरितं पद्ममुनेरिदं निबद्धम्॥

अब तक इसके पहलेका बना हुआ कोई भी पुराण उपलब्ध नहीं था। हरिवंशपुराण, आदिपुराण आदि भी इसके पीछेके बने हुए हैं। पुष्पदन्त कविके प्राकृतपुराण तो आदिपुराणसे भी पीछेके हैं। जहाँ तक हम जानते हैं अभीतक श्वेताम्बर-सम्प्रदायका भी कोई पुराण ग्रन्थ इससे पहलेका प्राप्त नहीं हुआ है। परन्तु अभी एक नये ग्रन्थका पता लगा है जिसका नाम 'पउमचरिय' है और पाठक यह जानकर और भी प्रसन्न होंगे कि इस ग्रन्थको भावनगरकी जैनधर्मप्रसारक सभाने छपा कर प्रकाशित भी कर दिया है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यह ग्रन्थ प्राकृत भाषामें है और इसमें पउमचरिय– (पद्म चरित) या रामचन्द्रजीका चरित वर्णित है। ग्रन्थ बड़ा है। ११८ उद्देश या अध्यायोंमें विभक्त है। पत्राकार ३३६ पृष्ठोंमें छपा है। काग़ज़ और छपाई बहुत अच्छी है। शुद्धताके विषयमें इतना ही कहना काफ़ी होगा कि इसका संशोधन जर्मनीके सुप्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर हर्मन जैकोबीके हाथसे हुआ है। युद्ध शुरू हो जानेके कारण जैकोबी महाशयकी लिखी हुई भूमिका इसके साथ सम्मिलित नहीं हो सकी है, इस लिए इस ग्रन्थके सम्बन्धकी विशेष ऐतिहासिक और तात्त्विक बातें जाननेके एक अच्छे मार्गसे हम कुछ दूर जा पड़े हैं। तो भी आशा की जाती है कि जब तक जैकोबी महाशयकी भूमिका प्रकाशित नहीं होती है तब तक हमारे देशी विद्वान् ही इस ग्रन्थका अध्ययन मनन करके इसके विषयमें कुछ अधिक प्रकाश डालनेका प्रयत्न करेंगे।

इस ग्रन्थके रचयिताका नाम विमलसूरि या विमलाचार्य है। ग्रन्थके अन्तमें वे अपना परिचय इस प्रकार देते हैं:–

राहू नामायरिओ ससमयपरसमयगहियसब्भाओ।
विजओ य तस्स सीसो नाइलकुलवंसनंदियरो॥ ११७॥
सीसेण तस्स रइयं राहवचरियं तु सूरिविमलेणं।
सोऊणं पुव्वगए नारायणसीरिचरियाइं॥ ११८॥
जेहि सुयं ववगयमच्छरेहिं तब्भत्तिभावियमणेहिं।
ताणं विहेउ बोहिं विमलं चरियं सुपुरिसाणं॥ ११९॥

इइ नाइलवंसदिणयर राहूसूरिपसीसेण महप्पेण पुव्वहरेण विमलायरिएण विरइयं सम्मत्तं पउमचरियं॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अर्थात्—अपने धर्म और दूसरे धर्मोंके विषयमें सद्भावको धारण करनेवाले एक 'राहु' नामके आचार्य थे । वे नागिलवंशके थे । उनके शिष्यका नाम विजय था । विजयके शिष्य विमलसूरिने यह राघवचरित (रामचन्द्रका चरित) अपने पहलेके नारायण-बलभद्रके चरितोंको श्रवण करके बनाया । जो लोग मत्सरको छोड़कर भक्तिभावसे सुनते हैं उन्हें सत्पुरुषोंके विमल चरित बोधिके अर्थात् दर्शन-ज्ञान-चरित्रके कारण होते हैं ।

ग्रन्थकर्ता इसकी रचनाका मूल और रचना-समय इस प्रकार बतलाते हैं :—

एयं वीरजिणेण रामचरियं सिट्ठं महत्थं पुरा,
पच्छाखंडलभूइणा उ कहियं सीसाण धम्मासयं ।
भूओ साहुपरंपराए सयलं लोये ठियं पायडं,
एत्ताहे विमलेण सुत्तसहियं गाहानिबद्धं कयं ॥ १०२ ॥
पंचेव य वाससया दुसमाए तीसवरिससंजुत्ता ।
वीरे सिद्धिमुवगए तओ निबद्धं इमं चरियं ॥ १०३ ॥

अर्थात्—इस तरह पहले भगवान् महावीरने रामचरित कहा था । उनके बाद इन्द्रभूति गणधरने अपने शिष्योंसे कहा था । फिर यह साधुओंकी परम्पराके द्वारा प्राकृतिक रूपमें इस लोकमें चला आ रहा था,सो अब विमलसूरिने इसे गाथाओंमें बनाया । यह सूत्रसहित है। अर्थात् इसका मूल कथाभाग परम्परागत ज्योंका त्यों है । यह चरित दुःषमकालमें उस समय बना जब महावीरभगवान्को मुक्त हुए ५३० वर्ष हुए थे ।

इससे साफ़ साफ़ मालूम होता है कि यह आजसे १९११ वर्ष

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पहले अर्थात् विक्रमसंवत् ६० का बना हुआ है और इस कारण यह बात भी कही जा सकती है कि अभी तक केवल पुराण ही नहीं और भी जितने दिगम्बर जैनग्रन्थ उपलब्ध हैं उन सबसे यह प्राचीन है। उमास्वामी, कुन्दकुन्दाचार्य आदिके विषयमें कहा जाता है कि वे विक्रमकी पहली शताब्दिमें हुए हैं; परन्तु इसके लिए अभी तक कोई अच्छा प्रमाण नहीं मिला है; बल्कि साधुपरम्पराका विचार करनेसे वे तीसरी चौथी शताब्दिके लगभगके सिद्ध होते हैं। ऐसी अवस्थामें इसी ग्रन्थको सबसे अधिक प्राचीनता प्राप्त होती है और इसके निर्माणका समय बिलकुल निश्चित है—अनुमानोंके आधार पर इसकी स्थिति नहीं है।

दिगम्बरसम्प्रदायके ग्रन्थोंके अनुसार श्वेताम्बरसंघकी उत्पत्ति विक्रमकी मृत्युके १३६ वर्ष बाद हुई है और श्वेताम्बर ग्रन्थोंके अनुसार दिगम्बरोंकी उत्पत्ति भी लगभग इसी समयमें हुई है। अर्थात् विक्रमादित्यकी या शक विक्रमकी दूसरी शताब्दिमें जैनधर्ममें दिगम्बर और श्वेताम्बर दो भेद हो गये हैं। यदि यह सच है तो कहना होगा कि यह 'पउमचरिय' उस समयका बना हुआ है जब कि महावीर भगवान्का धर्म भेदोपभेदरहित था; उसमें दिगम्बर—श्वेताम्बर भेदोंका जन्म नहीं हुआ था। यदि इन्द्रनन्दिकृत श्रुतावतारमें बतलाई हुई मुनिपरम्परा ठीक है तो कहना होगा कि एकादशांगधारी पाँचवें आचार्य कंसाचार्यके समयमें यह ग्रन्थ रचा गया है।

श्रीरविषेणाचार्यके पद्मपुराणको सामने रखकर हमने इस ग्रन्थके

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कुछ अंश मिलाये तो मालूम हुआ कि संस्कृत पद्मपुराण इसको सामने रखकर इसकी छाया पर कुछ विस्तारके साथ बनाया गया है। बहुतसे पद और भाव बिलकुल एकसे मिलते हैं। रचनाक्रम और कथानुसन्धान भी प्रायः एकसा है।

इस समय हम इस ग्रन्थका स्वाध्याय कर रहे हैं। आगे चलकर हम इसके विषयमें एक विस्तृत लेख लिखना चाहते हैं। उस समय हम इन दोनोंकी रचनाका अधिक स्पष्टताके साथ मिलान करेंगे और यह भी बतला सकेंगे कि इसमें कोई बात ऐसी है या नहीं जो दिगम्बर या श्वेताम्बर सम्प्रदायकी खास बात हो और जिससे कहा जा सके कि इसके कर्त्ता किस सम्प्रदायके थे। अभी तक हमने इसका जितना अंश देखा है उसमें कोई बात, ऐसी नहीं मिली। हम आशा करते हैं कि दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायके विद्वान् इस ग्रन्थका स्वाध्याय करेंगे और इसकी प्राचीनता साम्प्रदायिकता आदिके सम्बन्धमें अपने अपने विचार प्रकट करेंगे।

यद्यपि यह ग्रन्थ प्राकृतमें हैं और साथमें टीका या संस्कृतच्छाया-आदि साधन भी नहीं है, तो भी भाषा इतनी सरल और रचना इतनी कोमल तथा सुन्दर है कि साधारण संस्कृतके जाननेवाले भी परिश्रम करनेसे इसे लगा सकेंगे।

ग्रन्थका मूल्य ढाई रुपया है। मंत्री जैनधर्मप्रसारक सभा, भावनगरसे इसकी प्राप्ति हो सकती है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

४ अकालवार्द्धक्य और अल्पायु।

हमारे देशमें आजकल मनुष्योंकी आयु बहुत कम होने लगी है और बुढ़ापा तो यहाँ बहुत ही जल्दी आ जाता है। पचास पूरे होनेके पहले ही हमारे यहाँके स्त्रीपुरुष बूढ़े हो जाते हैं—उनमें काम करनेकी शक्ति नहीं रहती। इसके विरुद्ध विदेशोंमें, विशेषकर यूरोपमें, पचास वर्ष जवानीके मध्यकालमें समझे जाते हैं और अस्सी अस्सी नव्वै नव्वै वर्षकी उमर तक वहाँवाले अच्छी तरह काम-काज करते हैं। वास्तवमें देखा जाय तो बड़े बड़े महत्त्वके कार्य पचास वर्षके बाद ही किये जा सकते हैं; क्योंकि उस समय बुद्धि परिपक्व हो जाती है और सैकड़ों बातोंका अनुभव हो जाता है। शास्त्रमें लिखा है कि 'पंचाशोर्द्ध वनं व्रजेत्' परन्तु हमारे यहाँके महापुरुषोंकी पचासके बाद बन जानेकी शक्ति तो नहीं रहती है, वे स्वर्ग अवश्य चले जाते हैं! इससे देशकी जो क्षति होती है उसका अन्दाज नहीं किया जा सकता। देशहितैषियोंको इस विषयमें विशेषताके साथ विचार करना चाहिए और अल्पायु और अकालमें बुढ़ापा आ जानेके कारणको खोजकर उनसे बचनेकी शिक्षाका प्रचार करना चाहिए। अगहनकी 'भारती' पत्रिकामें एक विद्वान् लेखकने इसके दो प्रधान कारण बतलाये हैं;—एक तो बाल्यविवाह और दूसरा सीमासे अधिक मानसिक परिश्रम। बाल्यविवाहके विषयमें वे कहते हैं कि कच्ची उम्रके मातापिताकी सन्तान कभी बलवान् और दीर्घायु नहीं हो सकती। यह कच्ची उम्रका ब्याह शिक्षितों और अशिक्षितों दोनोंके लिए एकसा हानिकर है। अशि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्षित तो बेचारे कुछ जानते नहीं; परन्तु शिक्षितोंकी पुत्रकन्याओंके ब्याहकी अवस्था जितनी चाहिए उतनी क्यों नहीं बढ़ रही है, इसका कारण नहीं मालूम होता। बाल्यविवाहकी हानियाँ सब ही जानते हैं और बाल्यविवाह न करनेवाले पर कोई दण्ड किया जाता हो अथवा और कोई बड़ी रुकावट हो सो भी नहीं है; तो भी लड़कियोंका विवाह ९–१० वर्षमें कर ही दिया जाता है। अनेक युवक विद्यार्थी-अवस्थामें विवाह करनेके लिए बिलकुल रज़ामंद नहीं होते, तो भी पितामाताके आग्रहके मारे उन्हें विवश हो जाना पड़ता है। यदि हम सब मिलकर यह निश्चय कर लें कि अपने भाई-बेटोंका ब्याह १९–२० वर्षके पहले और अपनी बहिन-बेटियोंका ब्याह १५–१६ वर्षके पहले न करेंगे तो हमें इसके लिए कोई पंचायती या बिरादरी कुछ कह नहीं सकती। इस अपराधमें कोई जातिसे अलग कर दिया गया हो ऐसा अभीतक कहीं भी नहीं देखा सुना। यदि थोड़ासा मानसिक बल हो–दिलकी मज़बूती हो–तो कमसे कम शिक्षितोंमेंसे तो इस प्रथाका काला मुँह हो सकता है।

इसके बाद दूसरे कारणका विचार करते हुए लेखक महाशय कहते हैं कि मस्तकसे अधिक काम लेनेसे–सोच विचार अधिक करनेसे और उसके साथ ही शरीरसेवा पर ध्यान न देनेसे भी जल्दी बुढ़ापा आ जाता है और आयु घट जाती है। शरीरको बचाकर मानसिक कार्य करनेसे एक तो काम अधिक किया जाता है और दूसरे उम्र भी अच्छी मिलती है। इस विषयमें मेरे कुछ अनुभूत नियम हैं जिनसे मैंने बहुत लाभ उठाया है। १ सप्ताहमें छह

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दिन मानसिक श्रम करनेके बाद सातवें दिन पूरा विश्राम करना चाहिए। एक दिन लिखना पढ़ना बन्द रखनेसे आगेके छह दिनोंमें उत्साहके साथ अधिक काम किया जाता है। २ शामको पाँच साढ़े पाँचके बाद आठ बजे तक किसी भी मानसिक श्रम करनेवाले पुरुषको घर नहीं रहना चाहिए। इस समय थोड़ेसे परिश्रमकी और शुद्ध वायु-सेवनकी बहुत बड़ी आवश्यकता है। ३ लम्बी छुट्टियोंमें आरोग्य-प्रद स्थानोंमें हवा बदलनेके लिए जाना चाहिए। यह बड़ा ही लाभकारी है। इससे मनकी थकावट मिट जाती है, मस्तक ठिकाने आ जाता है, शरीरका श्रम बढ़ जाता है, स्वास्थ्य सुधर जाता है और एक तरहकी नई शक्ति आ जाती है। ३ दूध,, घी आदि पौष्टिक पदार्थोंका आहार करना चाहिए। दुग्ध जीवनदाता है। शुद्ध दूधका सेवन बहुत उपकारी है।

आशा है कि शिक्षित भाई लेखककी बातों पर ध्यान देंगे और शरीररक्षाके विषयमें अधिक सावधान हो जायँगे।

---

५ जैन-जनसंख्याके ह्रासका प्रश्न।

दिसम्बरकी छुट्टियोंमें रायकोट नामक स्थानमें स्थानकवासी भाइयोंकी पंजाब प्रान्तिक कान्फरेन्सका जल्सा हुआ था। उसकी रिपोर्टसे मालूम हुआ कि स्थानकवासी जैन भाइयोंमें भी जैनोंकी जन-संख्या घटनेकी चर्चा होने लगी है और उसकी ओर पढ़े लिखे लोगोंका ध्यान विशेषरूपसे आकर्षित हुआ है। पटियालाके लाला रामलालजी ओवरसियरने इस विषयको उपस्थित करते हुए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कहा कि " हम लोगोंमें लड़कियोंकी संख्या कम है और फिर बहुतसे धनी मानी लोग दो दो तीन तीन या इससे ज्यादा दफे शादी करते हैं। इन दो कारणोंसे निर्धन कुटुम्बके लड़कोंको कन्यायें नहीं मिलती है और उन्हें कुँवारे रहकर ही अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है। अत एव विधवाविवाहकी छूट देकर यह नियम बना देना चाहिए कि ३५ वर्षकी उम्रके बाद यदि किसीको शादी करना हो तो वह विधवाके साथ करे—कन्याके साथ नहीं। इसके सिवाय अनाथाश्रम खोलकर उसमें अन्य लोगोंकी निराधार बालिकाओंको दाखिल करके पालने और पढ़ाने लिखानेका प्रबन्ध करना चाहिए और जब वे बालिकायें विवाहयोग्य हो जावें तब उनकी शादियाँ निर्धन जैन भाइयोंके साथ करना चाहिए।" लाला भोजराजजीने इस प्रस्तावका अनुमोदन किया और कहा कि " रोडा जैनी दूसरोंकी कन्यायें लेते तो हैं परन्तु देते नहीं हैं। उन्हें देना भी चाहिए। पटियालामें १००० जैनी हैं जिनमें ३०० स्त्री और ७०० पुरुष हैं। इस तरह पुरुषोंकी संख्या ज्यादा होने से उनकी शादीके लिए एक अनाथालयकी अवश्य ही बहुत ज़रूरत है।" लाला प्रभुदयालजीने कहा कि " कुरुक्षेत्रमें कुछ समय पहले जैनोंके १०० घर थे; परन्तु अब सिर्फ तीन घर रह गये हैं—सब कुँवारे ही मर गये ! इस तरह जैनोंकी आबादी घटती जी रही है।" साथमें उन्होंने यह भी कहा कि " हिन्दुस्तानमें ईसाइयोंकी संख्यामें ९० लाखकी वृद्धि हुई है जब कि हिन्दुओंमें एक करोड़का घाटा पड़ा है। इसलिए हमें जागृत होना

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चाहिए और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य हिन्दुओंकी लड़कियोंके साथ शादी करना चाहिए। नहीं तो जैनोंका अस्तित्व रहना कठिन है।"

यद्यपि इस चर्चासे सभामें कुछ क्षोभसा उत्पन्न हो गया और प्रस्ताव भी पास न हुए—सभापतिने यह कहकर टाल दिया कि अभी जैन क़ौम इन प्रस्तावोंके लिए तैयार नहीं है; तथापि इससे इस बातका पता अवश्य लगता है कि इस संख्याकी कमीके प्रश्नने नवयुवकोंको उद्विग्न कर दिया है और अब वे इसे किसी तरह हल कर डालना चाहते हैं। हमारी समझमें अब जैनोंकी प्रत्येक जातिके मुखियोंको शीघ्र चेत जाना चाहिए और यदि उन्हें विधवाविवाह जैसे प्रस्ताव अभीष्ट नहीं हैं तो जैनसमाजको इस क्षयरोगसे बचानेके लिए दूसरे उपायोंका अवलम्बन करना चाहिए। १ जैनोंकी सम्पूर्ण जातियोंमें परस्पर विवाहसम्बन्ध ज़ारी कर दिया जाय। २ गोत्र या साँखें टालनेके नियम ढीले कर दिये जायँ। ३ पतित स्त्री-पुरुष प्रायश्चित्त देकर फिर जातिमें मिला लिये जायँ। ४ विवाहोंका ख़र्च घटाया जाय और ख़र्चके नियम इतने सुगम कर दिये जायँ कि ग़रीब से ग़रीब वर कन्याका विवाह बिना कठिनाईके हो जाय। ५ स्त्रीके समान पुरुषको भी पुनर्विवाह करनेकी मनाई कर दी जाय। कमसे कम यह नियम तो ज़रूर कर दिया जाय कि जिनके पहले विवाहसे कुछ सन्तान हो वह पुनर्विवाह न कर सके अथवा ३५ या ४० वर्षकी उम्र हो जाने पर कोई भी पुरुष दूसरा विवाह न कर सके। ६ प्रत्येक पंचायत इस बातका ध्यान रक्खे कि हमारी जातिमें कोई युवक कुँवारा तो नहीं है। यदि हो तो उसके विवाहका

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रबन्ध करा दिया जाय और यदि उसको जैनजातिमें लड़की न मिलती हो तो जैनेतर ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य वर्णोंकी भी लड़की लेनेमें कोई रुकावट न डाली जाय। ७ विवाहकी उम्र बढ़ा दी जाय। २०-१६ के पहले किसी वर कन्याका विवाह न हो सके। इससे अल्पायु और दुर्बल सन्तान कम होने लगेगी जो कि जातिके क्षयका एक कारण है। ८ गर्भरक्षा, सन्तानपालनपोषण, आरोग्यताके नियम आदि बातोंकी शिक्षाका ख़ास तौरसे प्रचार किया जाय जिससे अकालमरण कम हो जावें और पुष्ट सन्तानोंकी वृद्धि हो। ९ भाग्यवादकी जगह पुरुषार्थवादकी शिक्षाका विस्तार किया जाय जिससे लोग प्लेग हैज़ा आदि बीमारियोंके समय अपनी रक्षा करनेमें विशेष सावधान हो जायँ। १० शारीरिक श्रमका महत्त्व बढ़ाया जाय जिससे लोग परिश्रम करनेको बेइज्जती-का काम न समझें और फ़िज़ूलख़र्ची तथा विलाससामग्रियोंकी वृद्धि रोकी जाय। इत्यादि उपायोंसे हमारा क्षय होना बन्द हो सकता है और दूसरोंके समान हमारी संख्या भी बढ़ सकती है।

---

६ डाक्टर टी. के. लद्दूका व्याख्यान।

गत दिसम्बरकी छुट्टियोंमें स्याद्वादमहाविद्यालय काशीका वार्षिकोत्सव हो गया। अबकी बार क्वीन्सकालेज बनारसके संस्कृत प्रोफेसर डा० तुकाराम कृष्ण लद्दू बी. ए. (केन्टब), पी. एच. डी. ने सभापतिका आसन स्वीकार किया था। आपने इस अवसर पर संस्कृत और अँगरेज़ीमें दो सुन्दर व्याख्यान दिये। यह एक बहुत

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अच्छी बात है कि हम अपनी संस्थाओंमें अजैनविद्वानोंको बुलाने लगे हैं और अपने धर्मसाहित्यादिके विषयमें उनके विचार सुनने लगे हैं। एक दृष्टिसे यह पद्धति बहुत लाभदायक है। इससे जैन-धर्मके विषयमें सर्व साधारण जनोंमें जो भ्रमपूर्ण विचार फैल रहे हैं, वे दूर होते हैं, जैनधर्मके प्रति उनकी सहानुभूति बढ़ती है और उनके साथ हमारा सौहार्द बढ़ता है। इसके सिवाय जैनेतर विद्वानोंमें जैनसाहित्यके अध्ययन मनन करनेका उत्साह भी उत्पन्न होता है। इस पद्धतिसे हम एक लाभ और भी उठा सकते हैं; परन्तु अभी तक हम उसके लिए तैयार नहीं जान पड़ते हैं और इसी लिए हम अपने उत्सवोंमें जिन विद्वानोंको अपना सभापति बनाते हैं उनसे केवल अपने धर्मसाहित्यकी और अपनी प्रशंसा ही सुनना चाहते हैं और सभ्यताके ख़यालसे या लिहाज़से वे भी हमारी इच्छाके अनुसार ही अपना व्याख्यान सुना जाते हैं। यदि हम कुछ सहनशील हो जावें और ये प्रतिष्ठित विद्वान् अपने व्याख्यानोंमें हमारी कुछ त्रुटियोंकी भी आलोचना किया करें, समयके परिवर्तनसे हमारे धार्मिक विश्वासोंमें जो उलट-पलट हो गया है उसकी चर्चा किया करें और हमारे आलस्य तथा प्रमादके विषयमें दो चार चुटकियाँ ले दिया करें तो उनका हम पर बहुत प्रभाव पड़ सकता है और हम अपनी त्रुटियोंको पूर्ण करनेके लिए सचेत हो सकते हैं। आशा है कि हमारे अगुए इस ओर ध्यान देंगे और इस बातकी कोशिश न करके कि सभापति हमारी इच्छानुसार ही कहें उनसे निष्पक्षभावसे यथार्थ आलोचना करनेकी प्रेरणा किया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

करेंगे। हमारी संस्थाओंमें अब तक अनेक अजैन विद्वानोंके व्याख्यान हो चुके हैं और इसमें सन्देह नहीं कि उनमेंसे कई एक बहुत ही महत्त्वके हुए हैं; परन्तु अभी तक उनमेंसे किसीमें भी हमें ऐसे वाक्य सुननेको नहीं मिले जिनसे हम अपनी त्रुटियोंसे सावधान हो जायँ। कई व्याख्यानोंमें तो हमको अपनी निरर्थक और अयथार्थ प्रशंसा सुननी पड़ी है जो दूसरों पर हमारा झूठा प्रभाव भले ही डाले, पर हमारे लिए हानिहार ही होगी। हमें अभीसे अपनी प्रशंसा सुननेका व्यसन न डाल लेना चाहिए। गतवर्ष डा० सतीशचन्द्र विद्याभूषण महाशयके व्याख्यानके शेषांशमें जो जैनसंस्थाओंकी और उनके संचालकोंकी प्रशंसा की गई थी, उसे पाठकोंने पढ़ा ही होगा। लड्डू महाशयने भी अपनी व्याख्यानमें यद्यपि उतनी प्रशंसा नहीं की है तो भी की अवश्य है और इसी लिए इस सम्बन्धमें हमें ये पंक्तियाँ लिखनी पड़ी हैं।

प्रो० लड्डू महाशयके दोनों व्याख्यानोंका अभिप्राय लगभग एक ही है; तो भी संस्कृतकी अपेक्षा अँगरेज़ी व्याख्यानमें उन्होंने बहुत सी जानने योग्य बातें कही हैं। जैनधर्म बौद्धधर्मसे प्राचीन है इसका उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि "ई० सन्से कई शताब्दि पहलेके बौद्धग्रन्थोंमें जैनसम्प्रदायका उल्लेख मिलता है; परन्तु उनमें ऐसा कोई कथन कहीं पर नहीं है कि जिससे जैनमतको नवीन मत या हालका मत कहा जाय। यह भी कहीं स्पष्टरूपसे नहीं लिखा कि जैनमत कबसे है। जैनसूत्रोंसे भी—जो कि जैकोबीके विचारानुसार उत्तरीय बौद्धोंके प्राचीनसे भी प्राचीन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ग्रन्थोंसे कम प्राचीन नहीं हैं—पता लगता है कि महावीर स्वामीके कुछ शिष्य बुद्धदेवके पास उनके मतका खण्डन करनेके लिए गये थे। बौद्धग्रन्थोंमें भी ऐसी घटनाओंका उल्लेख है। इससे मालूम होता है कि जैनधर्म बौद्धधर्मसे प्राचीन है।" आगे चलकर उन्होंने दोनों मतोंकी भिन्नता सिद्ध करते हुए कहा कि "जैनमतके कुछ सिद्धान्त बौद्धधर्मसे बिलकुल विपरीत हैं। स्वयं बुद्धदेवका निर्वाणके विषयमें क्या विश्वास था यह हमें मालूम नहीं। कारण, एक शिष्यके प्रश्न करने पर उन्होंने उसे यों ही टाल दिया था। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि बौद्ध ब्राह्मणोंके समान किसी एक सर्वव्यापी आत्माको नहीं मानते। और तो क्या उनके सिद्धान्तमें स्वयं आत्माके अस्तित्वकी भी आवश्यकता नहीं है। जैनी आत्माको सर्वव्यापी तो नहीं मानते, परन्तु मानते अवश्य हैं। बौद्ध मतमें जो पाँच स्कन्ध तथा उनके भेद प्रभेद माने गये हैं जैनमत उन्हें नहीं मानता। जैनधर्मके माननेवाले केवल जानवरों और पेड़ोंमें ही नहीं किन्तु जल और खानिसे ताजी निकली हुई धातुओंमें भी जीव मानते है। इस बातमें ये हिन्दुओंसे भी बढ़ गये हैं और इसीसे इनके अहिंसाक्षेत्रका विस्तार बहुत बढ़ गया है। जैनोंमें हिन्दुओंके समान आत्मीक उन्नतिके भिन्न भिन्न आश्रम हैं; परन्तु बौद्धमतमें ऐसे कोई आश्रम नहीं है॥" कुणकके द्वारा श्रेणिकके मारे जानेके विषयमें लद्दूमहाशयने एक नई कल्पना की है। कहा है कि "वैशालीका राजा चेटक महावीर भगवानका मामा था। चेटककी कन्या चेलना मगधनरेश बिम्बिसार या श्रेणिकके साथ ब्याही गई थी। श्रेणिक शेष-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नाग (शिशुनाग) कुलका राजा था। उसने ई०सन्से ५३० वर्ष पूर्वसे ५०२ वर्ष पूर्वतक राज्य किया। बिम्बिसारका पुत्र अजातशत्रु या कुणिक था। यह कथा प्रसिद्ध है कि बिम्बिसारने अपने पुत्रको राज्यका कार्य सोंपकर एकान्तवास धारण कर लिया था; तथापि उसने पिताको मारकर राज्य पद प्राप्त किया। पीछे उसे पिताके वधका बड़ा पश्चात्ताप हुआ और वह आत्महितके उपदेशके लिए बुद्धदेवके पास गया और उन्होंने उसे अपने धर्मका उपासक बना लिया।.... बिम्बिसार और अजातशत्रुका बौद्ध और जैन दोनों ही धर्मके ग्रन्थोंमें उल्लेख है। जैनशास्त्रोंमें लिखा है और यह सच भी मालूम होता है कि महावीरके प्रतिष्ठित वैभवशाली सम्बन्धी जैनधर्मसे प्रेम और सहानुभूति रखते थे। अतः यह संभव है कि चेटक और बिम्बिसार (श्रेणिक) जैन थे और अजातशत्रु (कुणिक) भी कमसे कम अपने जीवनके पूर्व भागमें जैन था। अपने पिछले जीवनमें जनकवधके शोकसे दुखी होकर बुद्धदेवके उपदेशसे उसने बौद्धधर्म धारण कर लिया था। अब विचारनेकी बात यह है कि जब बिम्बिसारने अपने पुत्रके लिए राज्यकार्य छोड़ दिया था तब अजातशत्रु उसे क्यों मारता? उसको अपने पितासे राज्यके सम्बन्धमें डरनेका कोई कारण ही न था। वास्तवमें अजातशत्रुने इस कारण बौद्धमतको अंगीकार किया कि उसने वैशालीके राज्यको अपने अधिकारमें कर लिया था और वह महावीर जिनके मामाका राज्य था। वैशालीका राज्य लेलेने-पर—जब महावीरका निर्वाण हो चुका था—अजातशत्रु जैनी न रह सका और उसने अपना मत बदल लिया। वैशाली राज्यसे जैनधर्मको

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बहुत सहायता मिलती होगी; परन्तु अजातशत्रुका उस पर अधिकार हो जानेसे वह सहायता बन्द हो गई होगी। इस कारण यह संभव है कि जैनोंने उसके विषयमें पिताके वधकी बात गढ़ ली हो कि जिससे लोगोंको यह मालूम हो कि इस घोर पापके कारण जैनोंने उससे सहायता लेना छोड़ दी है और बौद्धमतके वृद्धि-रूप प्रभावको रोकनेके लिए प्रसिद्ध कर दिया हो कि बौद्धमतमें पितृवध तक किया जाता है। संभव है कि मेरे इस अनुमानसे प्राचीन इतिहासकी एक ग्रन्थि सुलझ हो जावे"। हमारी समझमें जैनोंपर जो यह अपराध लगाया जाता है कि उन्होंने धर्मद्वेषके कारण अजातशत्रुको पिताका वध करनेवाला बतलाया है, सर्वथा असत्य है। क्योंकि जैनकाथाकरोंने तो अजातशत्रुको उलटा पिता-वधके अपराधसे बचानेकी चेष्टा की है। उन्होंने लिखा है कि अजातशत्रु श्रेणिकको बन्धमुक्त करनेके लिए जा रहा था कि श्रेणिकने भयभीत होकर स्वयं अपने प्राण दे दिये; पुत्रने उन्हें नहीं मारा! हाँ, इस बातका उत्तर जैनकथासे नहीं मिलता कि श्रेणिक किस कारण क़ैद किये गये थे। आगे चलकर श्रवण-बेलगुलके उस शिलालेखकी चर्चा की गई है जिसमें प्रभाचन्द्र और भद्रबाहुका उल्लेख है। लद्दूमहाशयने डा० विंसेंट स्मिथके इतिहासके आधारसे कई युक्तियाँ देकर यह सिद्ध किया है कि प्रभा-चन्द्र ही चन्द्रगुप्त मौर्य थे; उनका यह जिनदीक्षा लेनेके बादका नाम था। उनके कथनका सार यह है कि शिलालेखमें यद्यपि गुरु-परम्परामें पहले एक भद्रबाहुका उल्लेख करके आगे भद्रबाहुका नाम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

फिरसे लिया गया है; परन्तु इससे उन्हें दूसरे भद्रबाहु न समझना चाहिए—वे अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु ही थे। शिलालेख दूसरे भद्रबाहुसे भी ५०० वर्ष बादका है, इस लिए उसमें आचार्य परम्परा बतलानेके लिए भद्रबाहु श्रुतकेवलीके पीछेके आचार्योंका नाम आना आश्चर्यजनक नहीं है। दूसरे भद्रबाहुके समयमें चन्द्रगुप्त मौर्यका होना असंभव है; पर पहले भद्रबाहु (अन्तिम श्रुतकेवली) से उनके समयका मिलान खा सकता है। यद्यपि लेखमें प्रभाचन्द्र नाम है, चन्द्रगुप्त नहीं है; परन्तु जिस पर्वत पर यह लेख है उसका नाम चन्द्रगिरि है और 'चन्द्रगुप्त-वस्ती' नामका एक प्राचीन मन्दिर और मठ भी है। इसके सिवा सिरंगापट्टममें सातवीं और नवीं शताब्दिके कई लेख हैं जिनमें भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मुनीन्द्रका उल्लेख है। इन सब बातोंसे सिद्ध होता है कि चन्द्रगुप्त और प्रभाचन्द्र एक ही थे। अच्छा होता यदि लद्दूमहाशय इस विवादग्रस्त प्रश्नको हल करनेके लिए अपनी ओरसे भी कुछ और प्रबल प्रमाण देते और चन्द्रगुप्त मौर्यका जैन होना अच्छी तरह सिद्ध कर देते। इसके आगे व्याख्याताने जैनधर्मके तत्त्वोंकी चर्चा की है; परन्तु उसमें कोई विशेषता नहीं जान पड़ती। उनका इस विषयका अध्ययन बहुत ही ऊपराऊपरी जान पड़ता है। व्याख्यानके प्रारंभमें इस बातको उन्होंने स्वीकार भी किया है। पर वे आशा दिलाते हैं कि आगे मैं इस विषयकी ओर विशेष ध्यान दूँगा और इस लिए जैनसमाजकी ओरसे वे धन्यवादके पात्र हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

७. सुमेरचन्द्र जैनबोर्डिंग हाउस, प्रयाग।

यह बोर्डिंग हाउस लगभग तीन वर्षसे स्थापित है। स्व० बाबू सुमेरचन्दजीकी धर्मपत्नीने इसे २५ हजारकी रकम देकर स्थापित किया है। इलाहाबाद यू. पी. में शिक्षाका प्रधान केन्द्रस्थल है। वहाँ दूरदूरके विद्यार्थी उच्चश्रेणीकी शिक्षा प्राप्त करनेके लिए आया करते हैं। यदि उनके एकत्र रहनेकी व्यवस्था हो तो बहुत लाभ हो सकते हैं। उनके लिए उच्चश्रेणीकी धार्मिक शिक्षाका पूरा पूरा प्रबन्ध न भी हो सके तो भी अपने साधर्मियों और सजातियोंमें मिल जुलकर रहनेसे उनमें जातिप्रेम, धर्मकी सेवाके विचार अनेक तरहसे पुष्ट होते हैं और यह साधारण लाभ नहीं है। यही सोचकर यह बोर्डिंग खोला गया है। इससमय १५ विद्यार्थी कालेजोंकी उच्च श्रेणियोंमें पढ़नेवाले हैं। आगे इससे भी अधिक होनेकी संभावना है। इन विद्यार्थियोंने एक सभा खोल रक्खी है जिसकी कार्रवाई देखकर जान पड़ता है कि विद्यार्थी उत्साही हैं और वे अपने आगामी जीवनमें जैनसमाजकी अच्छी सेवा करेंगे। उनमें धार्मिक और जातीय भाव बढ़ रहे हैं। इस संस्थाकी जो दूसरे वर्षकी रिपोर्ट हमारे पास आई है उससे मालूम होता है कि संस्थामें खर्चकी बहुत संकीर्णता है। पिछले वर्षमें लगभग १२००) का खर्च हुआ है जो कि अमदनीसे सौ सवासौ रुपया कम है। आगे इससे भी कम आमदनी हो जायगी; क्यों कि ध्रुवफंडकी रकममेंसे ९ हजारकी एक इमारत खरीद ली गई है।

जैनसमाजको इस संस्थाकी ओर ध्यान देना चाहिए और इसे एक विशालरूपमें स्थायी कर देना चाहिए जिससे इसमें कमसे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कम पचास विद्यार्थी निरन्तर निवास करते रहें और दशबीस निर्धन विद्यार्थीको छात्रवृत्तियाँ भी मिलती रहें। सबसे पहले हम श्रीयुत बाबू सुमेरचन्दजीकी धर्मपत्नीका ही ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं। हम समझते हैं कि इन दो तीन वर्षोंमें उन्हें अपनी इस संस्थाके फ़ायदे मालूम होगये होंगे. इस लिए अब इसे स्थायी बना देनेमें उन्हें और विलम्ब न करना चाहिए। अन्य धर्मात्मा सज्जनोंको भी चन्देसे, मासिकवृत्तियोंसे, पुस्तकोंसे, तथा पढ़ने लिखनेके और और साधनोंसे संस्थाकी सहायता करते रहना चाहिए।

८. श्रीमती गुलाबबाईकी राखी।

एक राजपूतरमणीने संकटके समय एक अपरिचित राजपूत युवाके पास राखी भेजी थी और उसका फल यह हुआ था कि उस युवाने प्राणोंकी बाजी लगाकर उस रमणीकी रक्षा की थी। श्रीयुत बाबू अर्जुनलालजी सेठी बी. ए. की सहधर्मिणी श्रीमती गुलाबबाईने भी इस घोर संकटके समयमें अपने जैनभाइयोंके पास राखी भेजी है और आशा की है कि वे उनकी सहायता करेंगे; उनके प्राणपतिको विपत्तिसे मुक्त करनेके लिए कोई प्रयत्न बाकी न रक्खेंगे। राखीके साथ जो पत्र है उसे पढ़कर रुलाई आती है और हमें विश्वास नहीं कि उसे सुनकर किसी सहृदयकी आँखोंमें दोचार आँसू आये बिना रह जावेंगे। अब देखना यह है कि अपनेको राजपूतोंकी सन्तान बतलानेवाली दयापरायण जैनजाति इस राखीकी पत कहाँतक रखती है और अपने समाजके एक सेवकके छोटे छोटे बच्चों और स्त्रीके प्रति उसकी सहानुभूतिका स्रोत कुछ काम कर सकता है या नहीं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

९. सहायता कीजिए।

जैनमित्रके सम्पादक श्रीयुत ब्र० शीतलप्रसादजीने सेठीजीके कुटुम्बकी सहायताके लिए और दूसरे प्रयत्न करनेके लिए एक फण्ड खोला है। हम अपने पाठकोंसे निवेदन करते हैं कि वे अपनी शक्तिके अनुसार कुछ न कुछ सहायता इस फण्डमें अवश्य दें और अपने मित्रबन्धुओंसे भी दिलवावें। रुपया जैनमित्र आफिस, गिरगाँव–बम्बईके पतेसे या काशीके पतेसे भेजना चाहिए।

जयपुरराज्य, अँगरेज़ सरकार और सेठीजीका मामला।

पाचोरा (खानदेश) में सेठ बच्छराज रूपचन्दजी एक उदार धनिक हैं। आप स्थानकवासी जैन हैं। आपने पाचोरामें जैन और अजैन सबके पढ़नेके लिए एक स्कूल बनवाया है। ता० ७ दिसम्बरको पूर्वखानदेशके कलेक्टर ओटो रोथफील्ड साहबके हाथसे यह स्कूल खुलवाया गया। उस समय आसपासके बहुतसे जैन अजैन सज्जन आमंत्रित होकर आये थे। साहब बहादुरने द्वारोद्घाटन करते समय सेठ बच्छराजजीको उनकी इस उचित दानशीलताके उपल-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्ष्यमें धन्यवाद दिया और जैन जातिके सम्बन्धमें बहुत ही अच्छे शब्द कहे। उन्होंने कहा कि "जैन जाति दयाके विषयमें विशेष रूपसे प्रसिद्ध है और दयाके कार्योंमें वह हजारों रुपया खर्च करती है। जैनोंकी मुखकी रचनासे और उनके नामोंसे जान पड़ता है कि वे पहले क्षत्रिय थे। जैन बहुत ही शान्तिप्रिय हैं।"

जैनोंके लिए यह बहुत ही सन्तोषका विषय है कि उनके विषयमें एक प्रतिष्ठित यूरोपियन अफसरके मुँहसे इतने अच्छे शब्द निकले। परन्तु इन शब्दोंके जाननेकी जैनोंको उतनी जरूरत नहीं है जितनी कि देशी राज्योंको है। कुछ समय पहले जामनगर राज्यने अपनी प्रजाके एक धनवान् किन्तु निर्दोष जैनको कैद करके उसकी सारी सम्पत्ति जब्त करली थी और उसे बहुत ही कष्ट दिया था। अन्तमें सार्वजनिक पुकार सुनकर ब्रिटिश सरकारने उस पर दया की और उसे मुक्त कराया। इसी तरहकी एक विपत्ति जयपुर राज्यमें भी एक जैनभाई पर आपड़ी है। स्वार्थ-त्यागी और सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० अर्जुनलालजी सेठी बी. ए. को जयपुर राज्यने भी बिना किसी अपराधके हवालातमें रख छोड़ा है और जैसा कि सुना गया है राज्यने पाँच वर्ष तक इसी तरह कैदमें सड़ाते रहनेका भी निश्चय कर लिया है।

मि० ओटो रोथफील्ड जैसे ब्रिटिश अफसरोंका यह कहना बिलकुल सत्य है कि "जैन बहुत ही शान्तिप्रिय हैं।" लार्ड कर्जनने भी यही कहा था और मिसिस एनीबिसेंटने अभी कुछ ही दिन पहले अपने 'कोमन विल' पत्रमें जैन जातिकी राजनिष्ठा और

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शान्तिप्रियताका उल्लेख करके अर्जुनलालजी जैसे सुशिक्षित जैन राजद्रोह करेंगे यह माननेसे साफ़ इंकार किया है। परन्तु जैनोंको जो यह ब्रिटिश सर्टिफिकेट मिला है, सो शहदसे लपटा हुआ है। सच बात तो यह है कि जैनजाति बहुत ही निर्बल निरीह और नाचीज़ है। वह मि० रोथफील्डके बतलाये हुए असली क्षत्रियत्वको खो बैठी है और बहुत ही पोच कमज़ोर बन गई है। यदि ऐसा न होता तो ऐसी शान्त निरपराध और साहूकार प्रजा पर इस प्रकारका अत्याचार या ज़ुल्म कभी न हो सकता। सब जगह दुबले ही सताये जाते हैं। नरम पिलपिली चीज़में सभी कोई उंगली घूँसना चाहता है। ईद बकरीकी ही होती है, बाघकी ईद कहीं भी सुनाई नहीं दी। जैन यदि मि० रोथफील्डके कथनानुसार वास्तवमें क्षत्रिय होते तो अपनी सारी जातिको और धर्मको कलंक लगानेवाले इस ज़ुल्मको वे कभी सहन न करते और इन दश महिनोंमें कोई न कोई उचित उपचार किये बिना न रहते।

अभी अभी कुछ सज्जनोंने श्रीयुत अर्जुनलालजीके छुटकारेके लिए जयपुर राज्यको प्रार्थनापत्र भेजना शुरू किये हैं; परन्तु इस तरहकी भिक्षाओंसे हो क्या सकता है? जो राज्य निरपराधी नागरिकोंको किसी प्रकारका दोष सिद्ध हुए बिना ही जेलमें ठूँस दिया करते हैं; जिनमें बस. इतना ही प्रजाप्रेम है—इतना ही स्वदेश प्रेम है—अपने राज्यके सारे भारतवर्षमें आदृत और पूजित होनेवाले हीराओंके प्रति इसी प्रकारका अभिमान है, वे राज्य क्या इस योग्य हो सकते हैं कि उनसे प्रार्थना की जाय या उनके आगे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

हाहा खाई जाय ? प्रार्थनाकी यथार्थता और प्रार्थियोंके हृदयकी पीड़ा समझनेकी योग्यता रखनेवाले मस्तक और हृदयोंकी क्या उनमें संभावना हो सकती है ? मि० रोथफील्ड, आप जैनोंके नामों परसे भले ही उन्हें क्षत्रिय ठहराइए; परन्तु उनके मुंहपरसे तो उन्हें—मैं स्वयं जैन हूँ तो भी—क्षत्रिय नहीं मान सकता। जिनके मुँह पर क्षत्रियके लक्षण हों उनके हृदयमें क्या क्षत्रियोंके शौर्य और स्वदेशप्रेमका अभाव हो सकता है ? अफसोस कि अँगरेज तो हमें क्षत्रिय बनाना चाहते हैं; परन्तु हम स्वयं 'दास' ही बने रहनेमें खुश हैं—हम अपने नामोंके साथ 'दास' पदको जोड़ने भी लगे हैं। रोथफील्ड साहबके इन क्षत्रियोंके हाथमें प्रार्थना करने या हाहा खानेकी तरवार और खुशामदकी ढाल, बस ये दो ही तो हथियार रह गये हैं। इन क्षत्रियोंकी यदि जयपुर राज्य कुछ सुनाई न करेगा तो फिर बहुत हुआ तो ये ब्रिटिश सरकारके पास पुकार मचानेका—विनती करनेका हथियार उठानेकी बहादुरी दिखलावेंगे। भला, यह हमारे कितने दुर्भाग्यकी बात है कि हमें देशी राजाओंके दुःखोंके मारे विदेशी राजाकी शरण लेनी पड़ती है। संभव है कि राजनीतिकी कोई कलम ऐसी निकल आवे जिससे ब्रिटिशसरकार भी एक देशीराज्यके इस काममें हस्तक्षेप करनेसे इंकार कर देवे। ऐसी दशामें भी हमें आशा नहीं है कि इस विषयमें जैनजातिके अगुए शान्ति, सत्य, राजनिष्ठा और धर्मानुकूल रीतिसे भी कोई उपाय करनेके लिए एकट्ठा होंगे। मि० गांधीने जो निष्क्रिय प्रतिरोध या शान्तविरोध (Passine Resistence) का शस्त्र दक्षिण आफ्रिकामें उठाया था वह अथवा उससे मिलता हुआ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दूसरा कोई हथियार भी ये रोथफील्डके क्षत्रिय नहीं उठा सकते। तब क्या करना चाहिए? क्या विनतियाँ या प्रार्थनायें न की जावें? नहीं, बिलकुल नहीं। क्या हम देखते नहीं हैं कि इस तरहके सैकड़ों भिखारी रोटीके टुकड़ोंके लिए प्रार्थना करते करते थक कर मर चुके हैं? शासनके मदके साथ दयाका रहना बहुत ही कठिन है। और भीख माँगी ही क्यों जावे और किससे माँगी जावे? क्या देशके एक देशी राजाके विरुद्ध विदेशी राजासे? क्या यह माँगी हुई भीख मिल जावेगी? मिलना असंभव नहीं है; तथापि मेरी समझमें ऐसी भिक्षा माँगनेकी अपेक्षा एक स्वदेशी नागरिककी चिता जो एक स्वदेशी राजाने चेताई है और जिसकी धधकती हुई ज्वालाको उसके स्वधर्मी भाई तमाशगीर बनकर मज़ेसे देख रहे हैं, उस चितामें चुपचाप जल जाना ही एक क्षत्रिय जैन स्वयंसेवकके लिए अधिक शोभास्पद होगा। याद रखना चाहिए कि इस चिताकी भस्म पर भविष्यके देशभक्त युवक स्मरणस्तंभ खड़ा करेंगे और उसमें निम्नलिखित लेख लिखेंगे:—

जयपुरनिवासी, क्षत्रियवंशी
जैनस्वयंसेवक श्रीयुत अर्जुनलालजी सेठीने
अपने उच्चतम धर्म और प्रियतम देशकी गौरवरक्षार्थ
दयाकी भिक्षा नहीं माँगकर, (अपूर्व स्वार्थत्यागकर)
कृतघ्न और कर्तव्यहीन जैनोंको रुलाकर
जागृत करनेके लिए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

और

स्वदेशाभिमान, स्वप्रजापालन और राजकर्तव्यका
अपने राजाको ज्ञान करानेके लिए
इस स्थल पर
साहसपूर्वक आत्मोत्सर्ग किया है,
इस अन्तिम प्रार्थनाके साथ कि—
मेरी भस्ममेंसे
देश और धर्मका गौरव बढ़ानेवाले अनेक सच्चे
क्षत्रिय जैनपुत्र उत्पन्न हों !

*** इतना लिखे जानेके बाद मालूम हुआ कि जयपुर राज्यने ता० ९ दिसम्बरको यह आज्ञा निकाली है कि " अर्जुनलालजी सेठीका राजनीतिक षड्यंत्रोंसे निकट सम्बन्ध है और उसका यह आचरण राज्यनियमके विरुद्ध है। ऐसे पुरुषको स्वतंत्र रखना भयंकर है, इस लिए पाँच वर्ष तक या जबतक दूसरा हुक्म न निकले तबतक वह हिरासतमें रक्खा जाय। " पाठकोंको मालूम होगा कि आरा महन्तकेस और दिल्ली षड्यंत्र केसमें पं० अर्जुनलालजी सेठी बी. ए. सन्देहके कारण पकड़े गये थे; परन्तु नियमानुकूल जाँच पड़ताल करनेसे उन पर कोई अपराध सिद्ध नहीं हुआ। ऐसे भयंकर अपराधका ज़रा भी सुबूत मिलता तो ब्रिटिश सरकार उन्हें कठिनसे कठिन दण्ड दिये बिना नहीं रहती और ऐसा होना ही चाहिए; परन्तु जब ब्रिटिश सरकार पूरी पूरी छानबीन कर

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चुकनेके अन्तमें उन्हें दोषी या दण्डपात्र कहनेसे इंकार करती है तब मालूम नहीं होता कि जयपुर राज्यने आठ महीनेसे बिना अपराध प्रमाणित किये किस आधारसे हिरासतमें डाल रक्खा है। क्या ब्रिटिश राज्यके अधिकारी और सरकारी वकील अपराध समझनेकी या दण्ड देनेकी शक्ति नहीं रखते हैं जिससे जयपुर राज्यको ब्रिटिश राज्यकी रक्षाके लिए यह कष्ट उठानेकी आवश्यकता आ पड़ी है? क्या जयपुर स्टेट यह सिद्ध करना चाहता है कि ब्रिटिश राज्य एक देशी राज्यकी मददके बिना अपनी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं है? और यदि अर्जुनलालजी सचमुच ही अपराधी हैं तो फिर उनके ऊपर खुल्लमखुल्ला मुकद्दमा चलाकर सज़ा देनेमें क्यों आनाकानी की जाती है? क्या राजद्रोहीको सिर्फ़ नज़रकैदमें रखनेकी ही सज़ा काफ़ी है? सिर्फ़ एक सन्देह या वहममें किसी गरीब प्रजाको बिना अपराध सिद्ध किये महीनों नज़रकैद रखना और फिर पाँच वर्ष तक कैदमें रखनेकी आज्ञा दे डालना, इसके लिए क्या किसी अँगरेज़ी या देशी कानूनका आधार है? यह भी मालूम हुआ कि अभी कुछ ही दिन पहले देवदर्शन बन्द कर देनेके कारण सेठीजीने ८–१० दिन तक अन्नपानीका स्पर्श नहीं किया था। इससे जयपुर राज्य और वायसराय साहबकी सेवामें जैनोंकी ओरसे क्षमायाचनाके लिए बीसों तार भेज गये थे। परन्तु मेरी समझमें राजद्रोहका सन्देह होने पर—भले ही वह झूठा ही क्यों न हो—दयाकी याचना कदापि ठीक नहीं हो सकती। दया नहीं, हम केवल न्याय चाहते हैं और हमारी यह माँगनी भिक्षा नहीं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

किन्तु फ़र्याद है। यदि कोई जैन किसी और कारणसे फाँसी पर लटकाया दिया जाता तो हम लोग उसके लिए इस तरह की मँगनी न करते; परन्तु जब एक जैन—सुशिक्षित जैन ग्रेज्युएट पर राजद्रोहका सन्देह प्रकट किया जा रहा है और इससे सारी जैन-जाति पर—जिसमें आज तक कभी किसी प्रकारके राजद्रोहकी घटना नहीं हुई है, जिसको बड़े बड़े ब्रिटिश अधिकारी शान्तसे शान्त राजभक्त प्रजा बतलाते हैं और जिस जातिमें सारी दुनियाकी सारी जातियोंकी अपेक्षा छोटेसे छोटे अपराध भी बहुत ही कम होते हैं—एक भयंकर कलंक लगाया जा रहा है, तब यह पुकार उठानी पड़ी है और कहना पड़ा है कि या तो अर्जुनलालजी सेठी पर नियमानुसार राजद्रोहका अपराध प्रमाणित करके उन्हें कठिन दण्ड दो या दयाके लिए नहीं किन्तु देशके गौरवके लिए, न्यायके लिए, प्रजापालनके ऊँचे धर्मकी रक्षाके लिए उन्हें निर्दोष प्रकट करके शीघ्र छोड़ दो।

राजद्रोह? जयपुरमें राजद्रोह!? बिलकुल झूठ! सर्वथा असंभव! ब्रिटिश शासनके असाधारण राजनिष्ठ जयपुर राज्यमें राजद्रोहियोंके रहने या जन्म लेनेकी बात कहना एक तरहसे जयपुर राज्यका अपमान या 'लाइबल' करना है। यूरोपमें लड़ाईका प्रारंभ होते ही जो मारवाड़ी ढूँढारी जैन अपने अपने गाँवोंको नौ दो ग्यारह हो गये थे, उस डरपोंक जातिके जैनबालकोंमें—और सो भी उसमें, जिसकी अँगरेज़ी विद्याके जीतोड़ परिश्रमसे शारीरिक सम्पत्ति बिलकुल लुट गई है—खून और राजद्रोह करनेकी शक्तिकी क्या कमी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

संभावना हो सकती है ? यह हवाई ख़याल—यह बहमका भूत जैन-जातिकी चिरकालकी कीर्तिको मैली कर देगा और इस बिलकुल असत्य तथा हानिकारक भ्रमको स्थान देगा कि जयपुर राज्यमें भी ब्रिटिश-शासनके विरुद्ध विचारोंको पोषण मिलता होगा। इसी लिए हम चाहते हैं कि इस प्रश्न पर गंभीरतासे विचार किया जाय और उस मार्गको अंगीकार करनेकी दूरंदेशी दिखलाई जाय जिससे कि राज्य और जैनप्रजा दोनोंका विशेष हित हो।

हिरासतमें देवदर्शनकी रुकावट ! और सो भी हिन्दूराज्यमें ! हिन्दमाता, अब तुझे भविष्यके सुखकी झूठी आशायें देकर अपने सन्तानोंको व्यर्थ ही भुलाये रखनेकी चेष्टा न करनी चाहिए। जिस दुर्भाग्यसे आर्यभूमिके पैरोंमें मुग़ल आदि राजाओंकी बेड़ी पड़ी थी उसकी अपेक्षा यह दुर्भाग्य बहुत ही दुःखदायक है कि आर्यधर्मरक्षक राजाओंकी धर्मभावना पर जड़वादियोंका इतना गहरा प्रभाव पड़ गया ! इस दुःखको सहनेकी अपेक्षा तो यही अच्छा है कि हिन्दका बिलकुल ही अन्त हो जाय। मेरा विश्वास है कि धर्म-भावनाकी सबसे अधिक आवश्यकता अपराधियोंके लिए—जेलके कैदियोंके लिए है और सभ्य देशोंकी जेलोंमें तो धर्मोपदेशका खास प्रबन्ध रहता है—कैदियोंको धर्मग्रन्थ भी बाँचनेके लिए दिये जाते हैं कि जिससे उनमें नीति और धर्मके भाव उत्पन्न होकर बढ़ते रहें। जो हिन्दूराज्य स्वयं मूर्तिपूजक है और जो सैकड़ों देवमन्दिरोंके ख़र्चके लिए राजभंडारसे हज़ारों रुपया प्रतिवर्ष देता है, वह मालूम नहीं किस धर्मदृष्टिसे जिनदेवके दर्शन करनेकी अपने एक कैदीको

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मनाई करता है। क्या जयपुर राज्यको यह भय है कि छोटेसे छोटे जीवकी रक्षाका उपदेश देनेवाले और कानोंमें कीले ठोकनेवाले शत्रुको तथा अत्यन्त दुःखप्रद डंक मारनेवाले साँपको भी क्षमा कर देनेवाले जिनदेवकी मूर्तिके दर्शनसे एक कैदीको खून या राजद्रोह करनेकी उत्तेजना मिलेगी? यह बात निःसन्देह होकर कही जा सकती है कि किसी भी दयासागर और शान्तदेवकी मूर्ति मनुष्यको कोई बुरा काम करनेमें प्रवृत्त या उत्तेजित नहीं कर सकती। तब क्या एक हिन्दूराज्यके लिए हिन्दुओंके धर्मव्रत—देवदर्शनके नियमको ज़बर्दस्ती बन्द कराना उचित हो सकता है? किसी मनुष्यने चाहे जितना बड़ा अपराध किया हो; परन्तु उसे उसके धर्मसे भ्रष्ट करनेकी किसी भी सरकारको सत्ता नहीं है। अपराधीको शारीरिक कष्ट पहुँचानेके लिए कड़ेसे कड़े नियम बनाये गये हैं; परन्तु उसके धर्ममें अन्तराय डालनेकी सत्ता आज तक किसी परमेश्वरने, देवने या प्रजाने किसी भी राजाको नहीं दी है।

अलाहाबादके 'लीडर'में सेठीजीके सम्बन्धमें 'जस्टिस' नामधारी महाशयने जो लेख छपवाया है वह प्रायः सभी प्रसिद्ध पत्रोंमें प्रकाशित हो चुका है। उसमें ब्रिटिश सरकारसे सेठीजीके विषयमें बीसों प्रश्न किये गये हैं जिन सबका सारांश यह है कि किसी प्रकारका अपराध सिद्ध न होने पर जयपुर राज्यके द्वारा उनको व्यर्थ कष्ट क्यों दिलाया जा रहा है?

जस्टिसके प्रश्नोंसे अदूरदर्शी लोग इस तरहका अनुमान करने लगते हैं कि सेठीजीको कैद रखनेके लिए ब्रिटिश सरकारने ही शायद कुछ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

युक्ति की होगी; परन्तु राजभक्त भारतवासियोंको अपने मस्तकमें इस तरहके अनुमानको क्षण भरके लिए भी न टिकने देना चाहिए। जो अँगरेज़ी सरकार बेल्जियम सरीखे ग़ैर देशकी रक्षाके लिए अपने लाखों मनुष्योंको कटा डालनेकी उदारता और न्याय-प्रियता प्रकट करती है वह अपनी निरीह प्रजाके एक मनुष्यको अपराधकी जाँच किये बिना ही हिरासतमें रक्खेगी, रखवावेगी या कोई चाल चलेगी, इस बात पर ज़रा भी विश्वास नहीं किया जा सकता। यदि थोड़ी देरके लिए यह बात मान भी ली जाय, तो भी जयपुर राज्य इस मामलेमें निर्दोष सिद्ध नहीं हो सकता। जयपुर राज्यने अपने हृदयसे विरुद्ध—किसीके कहने मात्रसे एक अपनी ही निर्दोष प्रजाको बन्धनमें डाल रक्खा है, इससे क्या इस इतने बड़े पहली श्रेणीके देशी राज्यके चरित्रबलकी कमीका प्रमाण नहीं मिलता है? और देवदर्शनकी मनाई भी क्या अँगरेज़ अफ-सरोंकी आज्ञासे हुई होगी? क्या इस तरहकी ज़रा ज़रासी बातोंके हुक्म भी उसी तरफ़से आते होंगे? इससे साफ़ समझमें आता है कि इस बेक़ानूनी दयारहित मामलेका सारा उत्तरदायित्व जयपुर-राज्यके ही सिर पर है। बेचारे देशी राज्य इतना भी नहीं जानते हैं कि राजभक्तिका इस तरहका अमर्यादित स्वाँग बनानेकी तैयारीमें हम अपने राज्यमें राजद्रोहका अस्तित्व सिद्ध कर डालनेकी बड़ी भारी भूल कर रहे हैं और साथ ही अपनी प्रजाके हृदयमें अरुचि उत्पन्न कराके अपना ही अहित कर रहे हैं। चाहे जो हो, पर समझदार भारतवासियोंको तो भारतके एक देशी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

राजाके विरुद्ध, विदेशी सरकारसे उचित सहायता माँगनेकी भी कोशिश न करना चाहिए। जब बाढ़ ही खेतको खाने लगी तब न्यायकी प्रार्थना करनेके लिए बाहर किसके पास दौड़ा जाय! तब और क्या उपाय किया जाय? कुछ नहीं, सहना—सहना और स्वदेशी राजाओंकी इस प्रकारकी बुद्धिके लिए आँसू बहाना, बस यही एक अच्छा मार्ग है। संभव है कि इन स्वदेशाभिमानी आँसुओंके प्रवाहसे देशी राजाओंके हृदय धुलकर निर्मल बन जावें और विदेशी सरकारका भी इस मामलेसे भारतवासियोंकी राजभक्तिके विषयमें विशेष ऊँचा ख़याल हो जावे।

माननीय वायसराय साहबके पास सैकड़ों अर्जियाँ कभीकी पहुँच चुकी हैं; तो भी अब तक उनका कोई फल नहीं हुआ है। कानपुरके मसजिदसम्बन्धी दंगेमें हमारे इस प्रजाप्रिय अफसरने स्वयं बीचमें पड़कर सैकड़ों मुसलमानोंको छोड़ दिया था। यह सच है कि जैनजाति एक रोवनी, साहसहीन और निरीह जाति है, इस लिए इससे किसी प्रकारका भय नहीं है, तथापि यह भी एक भारतवासी प्रजा है, केवल इसी नातेसे इसकी प्रार्थनाओं पर ध्यान देनेमें किसी तरहकी ढील न होना चाहिए। ऐसी शान्त और राजभक्त जाति पर राजद्रोहका कलंक लग जाना जिस तरह जैन जातिके लिए बुरा है उसी तरह प्रजाप्रिय सरकारके लिए भी अहितकारक है। यह एक सामान्य नियम है कि चोरी नहीं करनेवालेको यदि लोग चोर समझकर चोर कहने लगें, तो वह कुछ दिनोंमें अपना 'अचौर्य' का अभिमान भूलकर चोरी करनेमें प्रवृत्त हो जायगा। जिस तरह वह चोरी नहीं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

करनेवाला ज़बर्दस्ती चोर बनाया जाता है उसी तरह एक राजभक्त शान्त जाति पर राजद्रोहका झूठा दोष मढ़ दिया जायगा तो इस जातिमें भी यह छूतकी बीमारी फैल जानेका बड़ा भारी भय है; क्योंकि यह एक स्वाभाविक परिणाम है। वर्तमान युद्धको देखते हुए विचारशील सरकारको चाहिए कि वह बहमों और शंकाओं पर रची जानेवाली भयंकर इमारतोंको इशारा मिलते ही—पता पाते ही गिरा दे और हर तरहसे प्रजाके सम्पूर्ण अंगोंको अपने पूर्ण विश्वास और प्यारमें रखनेका यत्न करे। जैनजाति प्रार्थना करे या न करे, जब सार्वजनिक पत्रोंने इस विषयमें आवाज़ उठाई है तब उसी आवाज़ परसे ही प्रजाप्रिय वायसरायको इस मामलेमें आगे बढ़कर प्रजाके असन्तोषको शान्त कर देना चाहिए। जहाँ तक हम जानते हैं इस तरहके मामलेमें माननीय वायसरायका दयाभाव, अनुभव और राजनीतिपाटव बहुत ही बढ़ा चढ़ा है।

बम्बई,

ता. २६–१–१५] **वाडीलाल मोतीलाल शाह।**

लुक़मानका क़ौल।

(कुत्ता घृणित क्यों समझा जाता है?)

१–किसीने यह लुक़मानसे जाके पूछा।
ज़रा इसका मतलब तो समझाइएगा॥
२–ज़मानेमें कुत्तेको सब जानते हैं।
‘वफ़ादार’ भी उसको सब मानते हैं॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

३-यह करता है जाँ अपने मालिक पै कुरबाँ।
खिलौना है बच्चोंका घरका निगहबाँ॥
४-भरा है वह खूने-मुहब्बत रगोंमें।
सगोंमें न देखा जो देखा सगोंमें॥
५-जहाँमें है मशहूर इसकी भलाई।
मगर नाममें है क्या इसके बुराई?
६-किसी आदमीको कहें हम जो कुत्ता।
तो मुँह पर वहीं दे पलट कर तमाचा॥
७-पड़े मार खाकर भी वह दुम दबाना।
कि दुश्वार होजाय पीछा छुड़ाना॥
८-कहा उससे 'लुक़मान' ने बात यह है।
खुली बात है कुछ मुअम्मा नहीं है॥
९-यह माना, है बेशक वफ़ादार कुत्ता।
बड़ा जाँनिसार और ग़मख्वार कुत्ता॥
१०-मगर किससे है उसकी यह ख़ैरख्वाही।
यह टुकड़ों पै है सबके घरका सिपाही॥
११-फ़क़त आदमी पर है सब जाँनिसारी।
मगर क़ौमकी क़ौम दुश्मन है सारी॥
१२-यह रखता है दिलमें मुहब्बत पराई।
खटकते हैं इसकी निगाहोंमें भाई॥

---

१ प्राण। २ बलि। ३ रखवाला। ४ कुत्तोंमें। ५ जहानमें-दुनियामें।
६ कठिन। ७ गूढ़बात। ८ प्राणन्योछावर करनेवाली। ९ क्षमावान्।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१३–नज़र आए उसको अगर ग़ैर कुत्ता ।
तो फिर देखिये उसका त्यौरी बदलना ॥
१४–बुरा क्यों न मानेंगे अहले-हमैय्यत[1] ।
कि ग़ैरोंसे उलफ़त[2] सगोंसे अदावत ॥
१५–न जिसने कभी क़ौमको क़ौम जाना ।
कहे क्यों न 'मरदूद' उसको ज़माना ॥

(आर्य-गजटसे)

दान और शीलका रहस्य ।

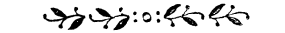

दान ।

मनुष्यको पैदा होते ही सहायता–दया–दानकी आवश्यकता होती है । उसे प्रकृति प्रकाश और हवासे सहायता देती है, माता दूधका दान देती है, पिता वस्त्रादिकी आवश्यकता पूरी करके दया दिखाता है और कुटुम्बीजन बोलना चलना सिखाते हैं । सहायता-दया–दान विना आदमी कदापि जीवित नहीं रह सकता । जिन जीवनोपयोगी पदार्थोंको हम दूसरोंसे लेकर जीवित रहते हैं, वे पदार्थ दूसरोंको न देकर जीवित रहना क्या मनुष्यत्व कहा जा सकता है? जो मनुष्य दूसरोंकी सहायताके विना क्षणभर जीवित नहीं

---

१ स्वात्माभिमानी । २ प्रेम ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रह सकता वह यदि दूसरोंके प्रति उदारता न दिखाकर अपनी इंद्रियोंकी तृप्तिमें ही मस्त रहे तो क्या उसका यह कार्य असह्य नहीं होगा ? क्या यह कम पशुपन है ? मनुष्यताका सबसे प्रथम यदि कोई लक्षण हो सकता है, धर्मका सर्वोत्कृष्ट मूल सिद्धान्त यदि कोई माना जा सकता है, तो वह 'दान' या आचरणमें लाई गई 'दया' अथवा व्यवहारमें लाई गई 'सहृदयता' ही है। यह बात डंकेकी चोट कही जा सकती है कि जहाँ ऐसी सहृदयता नहीं, जहाँ ऐसी आर्द्रता नहीं, जहाँ दान नहीं, जहाँ हृदयका औदार्य नहीं, वहाँ धर्मका अंश भी नहीं,—मनुष्यत्वका नाम मात्र भी नहीं। यदि कोई व्यक्ति किसी भी धर्मकी कठिनसे कठिन क्रियाओंको चौबीसों घंटे सौ वर्ष पर्यंत करता रहा हो; परन्तु सहाय-दया-दानके तत्त्वोंसे विमुख रहा हो तो उसकी मनुष्य या महात्माके नामसे पहचाने जानेवाली आकृतिको हम सिवाय पशुके और कोई नाम नहीं दे सकते। क्योंकि जहाँ नींव ही नहीं है, वहाँ मकानकी क्या चर्चा ? जहाँ केवल स्वार्थहीकी संकुचित सीमा लोहेकी साँकलोंसे दृढ़ताके साथ रक्षित हो, वहाँ अमर्यादित देवका निवास किस प्रकार हो सकता है ? जहाँ निरंतर पाशव वृत्तियोंका स्मरण किया जाता है, वहाँ देवकी आकृति कैसे प्रकट हो सकती है ? गरज यह है कि जहाँ आर्द्रता—दया—सहानुभूति—सहायता करनेकी उमँग—दान देनेका उल्लास—नहीं, वहाँ धर्म या मनुष्यत्वका होना सर्वथा असम्भव है। जो दान या दया, इज्ज़तके लिए, बड़प्पनके लिए, बदलेके लिए या स्पर्द्धासे की जाती है, उसे आत्मिक या वास्तविक धर्ममें कोई

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्थान नहीं मिल सकता। अर्थात् न वह सच्चा दान है और न सच्ची दया है। धर्ममें—आत्मामें—मनुष्यत्वमें केवल तुम्हारे ही आशयकी तुम्हारे—परिणामोंकी कीमत है; बाह्यरूप, दिखावा या कृत्योंकी नहीं। हृदयको ही मनुष्य कह सकते हैं, शरीरको नहीं। शरीर तो केवल हृदयकी आज्ञाओंका पालन करनेवाला यंत्र है। अतः मनुष्यके कृत्योंकी परीक्षा उसके हृदयगत भावोंके या परिणामोंके आधारसे ही होती है और हृदय ही शुद्धाशयपूर्वक किये हुए शुभकर्मोंकी कसरतसे धीरे धीरे अधिकाधिक विकसित होता हुआ अन्तमें अमर्यादित बन जाता है तथा आत्माको देवगति या सिद्धगति प्राप्त करा देता है। यदि किसी सभामें एक मनुष्यको बड़ा बनाकर उसको खूब चढ़ाया जाय—तारीफें की जायँ और वह दशलाख रुपये किसी कार्यमें दे दे, तो इससे यह न समझना चाहिए कि उसने दया की है, दान किया है या आर्द्रता दिखाई है। इससे उसका हृदय विकसित नहीं होगा; उसका आत्मा प्रफुल्लित नहीं होगा। यद्यपि यह नहीं कहा जा सकता है कि उसका किया हुआ दान निरुपयोगी है; क्योंकि जिन लोगोंका वह किसी न किसी समयमें ऋणी बना था, उनका उसने ऋण चुकाया है, और उन लोगोंने भी उससे लाभ उठाया है; परन्तु उसको सिवाय प्रतिष्ठित बननेके—प्रशंसा प्राप्त करनेके—और कुछ लाभ नहीं हुआ; दैवी लाभसे वह वंचित ही रहा। जिस मनुष्यका हृदय ही आर्द्र है, जिसमें दया-दान-सहायताके अँकुर मौजूद हैं, वह जहाँ कहीं आधिक शारीरिक या ज्ञानसंबंधी सहायताकी आव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

श्यकता देखता है, वहीं यथाशक्ति सहायता करता है; परन्तु वह केवल हृदयकी उमँगसे ही करता है। यह सहायता उसने गुप्त रीतिसे की हो, चाहे प्रकटरूपसे (उस समय जैसा मौका हो); किन्तु उसका हृदय उससे उल्लसित होता है, विकसित होता है, और एक अपूर्व आनन्दका अनुभव करता है। इस तरह दानगुण यह दशलक्षण धर्मका, आत्माकी उपासनाका, ईश्वरकी भक्तिका प्रथम मंत्र है—प्रथम सोपान अथवा सीढ़ी है—मूल सिद्धान्त है। द्रव्यत्यागी योगी द्रव्य नहीं रखते, केवल इतने ही कारणसे वे इस दानगुणसे विमुख नहीं रह सकते। यह पहले ही कहा जा चुका है कि केवल द्रव्यदान ही दान नहीं है—धनी ही दान कर सकता हो, ऐसा नहीं है। हृदयकी आर्द्रता और आन्तरिक सहानुभूति ही दानकी जननी है; इसलिए दयामूर्ति संत तो गृहस्थोंकी अपेक्षा भी अनन्तगुणा दान कर सकते हैं—अनन्तगुणा उपकार कर सकते हैं। जीवनको सह्य बनानेवाले, आश्वासन दिलानेवाले, मनको उत्साहित करनेवाले, शान्तिको देनेवाले उनके वचन और मुखमुद्रा लाखों करोड़ोंके दान से भी विशेष कीमती हैं। ज्ञानके साधन पूरे करनेवाली किसी न किसी प्रकारकी शक्तिके होने पर भी, जो साधु या त्यागी ब्रह्मचारी इस विषयमें उदासीनता या लापरवाही बताते हैं और अपनी कीर्ति, पूजा या ख्यातिके लिए अपने भक्तोंसे खर्च—परिश्रम या ठाटवाट करवाते हैं और इसको धर्मप्रभावनाका नाम देते हैं, उनमें धर्मका पहला और मूलतत्त्व दान (दया) बिलकुल नहीं है। उनसे हमलोग

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

हानिके सिवा किसी प्रकारके लाभकी ज़रा भी आशा नहीं कर सकते।

शील।

जहाँ दान नहीं वहाँ शील या चारित्र कदापि नहीं ठहर सकता। हृदयकी विशालताके बिना क्षमाबुद्धि, सहनशीलता, इन्द्रियनिग्रह और वृत्तिसंक्षेपका होना सर्वथा असंभव है। वीर भगवान्‌ने दानके पश्चात् शीलका उपदेश दिया है; परन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि केवल ब्रह्मचर्यपालनको ही शील नहीं कहते हैं; यह चारित्र (Character) के अर्थमें भी आता है। इस गुणका स्पष्ट ज्ञान होनेके लिए, बारह व्रतोंकी योजना की गई है। मैंने इन व्रतोंका स्वरूप इस तरह समझा है:—

(१) ऐसी सावधानीसे—यत्नाचारसे (Guardedy-thoughtfully) कार्य करो, वचन कहो और विचार करो कि जिससे किसी जीवको कष्ट न पहुँचे। ऐसी कोशिश करो, जिससे कमसे कम जीवोंको कमसे कम कष्ट पहुँचे। (अहिंसा)

(२) जिस बातको तुम जिस रूपमें जानते हो—मानते हो, उसको उस ही रूपमें प्रकट करो। लाभ या डरसे उसमें किसी प्रकारकी तबदीली न करो। लोकभय, नैतिक निर्बलता और लोकेषणाको कुएमें फेंक दो। इसी तरह हँसी दिल्लगी करना, पर निन्दा करना, फ़िज़ूल गप्पें हाँकना आदि हानिकारक या लाभहीन—निरर्थक प्रवृत्तिमें वचनबलका भी दुरुयोग मत करो। (सत्य)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(३) जिस चीज़ पर, जिस मनुष्य पर, जिस हक़ पर या जिस कीर्ति पर तुम्हारा वास्तविक अधिकार न हो, उस पर अधिकार करनेकी कोशिश कभी मत करो—दूसरेके हक़में दख़ल मत दो। (अचौर्य)

(४) तुम्हें जिस वीर्य या पराक्रमकी प्राप्ति हुई है, वह तुम्हारी और दूसरोंकी उन्नति करनेके लिए सबसे प्रधान और उत्तम साधन है। उसको पाशविक प्रवृत्तियोंके संतुष्ट करनेमें मत खोओ। उच्च आनन्दकी पहचान करना सीखो। यदि बन सके तो अखण्ड ब्रह्मचारी रहो, नहीं तो ऐसी स्त्री खोजकर अपनी सहचारिणी बनाओ जो तुम्हारे विचारोंमें बाधक न हो और उसहीसे संतुष्ट रहो। अगर सहचारिणी बननेके योग्य कोई न मिले, या मिलने पर वह तुमको प्राप्त न हो सके, तो अविवाहित रहनेका ही प्रयास करो। विवाहित स्थिति चारों तरफ़ उड़ती हुई मनोवृत्तियोंको रोकनेके लिए—संकुचित या मर्यादित करनेके लिए है। वह यदि दोनोंके या एकके असंतोषका कारण हो जाय तो उलटी हानिकारक होगी। अतः अपनी शक्ति, अपने विचार, अपनी स्थिति, अपने साधन और पात्रीकी योग्यता इन सबका विचार करके ही ब्याह करो; नहीं तो कुँवारे रहो। यह माना जाता है कि ब्याह करना ही मनुष्यका मुख्य नियम है और कुँवारा रहना अपवाद है; परन्तु तुम्हें इसके बदले कुँवारा रहकर ब्रह्मचर्य पालना या सारी अथवा मुख्य मुख्य बातोंकी अनुकूलता होने पर ब्याह करना, इसे ही मुख्य नियम बना लेना चाहिए। विवाहित जीवनको विषयवासनाके

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

लिए, अमर्यादित, यथेच्छ, स्वतंत्र मानना सर्वथा भूल है। वासनाओंको कम करना और आत्मिक एकता करना सीखो। अश्लील शब्दोंसे, अश्लील दृश्योंसे और अश्लील कल्पनाओंसे सदैव दूर रहो। तुम किसीके सगाई व्याह मत करो। क्योंकि तुम्हें इसका किसीने अधिकार नहीं दे रक्खा है। विवाहके आशयको नहीं समझनेवाले और सहचारीपनके कर्तव्यको नहीं पहचाननेवाले पात्रोंको जो मनुष्य एक दूसरेकी बलात् प्राप्त हुई दासता या गुलामीमें पटकता है, वह चौथे व्रतका अतिक्रम करता है, दयाका खून करता है, चोरी करता है। (ब्रह्मचर्य)

(५) परिग्रह अथवा मालिकीकी इच्छाको कम करो। मैं सबको भोगूँ, मैं करोड़पति बनूँ, मैं महलोंका मालिक बनूँ, इस तरहके मैं-मैं-मय, स्वार्थमय, संकीर्ण विचारोंको जितना बने उतना कम करो। इस आज्ञाका यह उद्देश नहीं है; कि तुम नँगे ही फिरो, घरबार रहित बाबा बन जाओ, भूखे मरो, कुटुंबका पालन पोषण न करो, उसे यों ही मरने दो, किन्तु यह मतलब है कि लोभप्रकृति, मोहप्रकृति, ममत्वभाव और जड़ पदार्थोंकी प्राप्तिमें ही आनन्द मानना, इन बातोंका परित्याग करो और सचाईसे, बुद्धिमानीसे, जी जानसे व्यवस्थापूर्वक किये हुए उद्यमसे जो धन तुम्हें प्राप्त हो, उसे अपनी और अपने आश्रितोंकी आवश्यकता पूरी करनेमें खर्च करो। इसके सिवाय जो द्रव्य बचे उसे उस पर ममत्व न रखते हुए औरोंकी आवश्यकतायें पूरी करनेमें बड़े आनंदसे व्यय करो। परिग्रह पर जितना कम ममत्व रक्खोगे उतनी ही तुम्हें विशेष शांति मिलेगी। (अपरिग्रह)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(६) निरर्थक, उपयोगरहित, भ्रमण भी जितना बन सके उतना कम करो। (दिग्व्रत)

(७) उपभोग और परिभोगकी लालसाको मर्यादित करो। अपनी आदतोंको सादी, आत्मसंयमी, नियमित और मिताहारी बनाओ। तुम्हारी आवश्यकतायें जितनी कम होंगी उतनी ही तुम्हारी चिन्तायें, उपाधियाँ और लालच भी कम होंगे और अधिक महत्त्वकी बातोंकी ओर जी लगानेके लिए भी विशेष समय मिलेगा। देखादेखीसे, झूठे खानदानी खयालसे, हम बड़े और अच्छे दिखेंगे इस तरहकी मूर्खतायुक्त लोलुपतासे, मिथ्या आडम्बरकी इच्छासे और गुणदोष समझनेकी बुद्धिके अभावसे गैरजरूरी आवश्यकतायें उत्पन्न होती हैं, और वे शारीरिक निर्बलता, मानसिक अधमता और बुद्धिहीनताको जन्म देती हैं। अतः उपभोग परिभोगके पदार्थ आवश्यकतानुसार—वे ही जो उपयोगके सिद्धान्तको उत्तर दे सकें—रक्खो। (भोगोपभोगपरिमाण)

(८) व्यर्थ कार्योंमें अपने मन, वचन और कायकी प्रवृत्ति न करो। लड़ाई झगड़ा, निंदा, दुर्ध्यान, चिन्ता, कुतर्क, खेद और भयमें शरीरसंपत्ति, धनसम्पत्ति, समयसम्पत्ति तथा संकल्पसम्पत्तिको नष्ट मत करो। आर्त्तध्यान अथवा चिंता करना और रौद्रध्यान अथवा किसी पर क्रोधमय विचार करना, ये दोनों बुरे और निन्दनीय कर्म हैं; आनन्दमय और वीरत्वमय आत्मप्रभुका द्रोह करनेवाले हैं। इससे मनुष्यत्व क्षीण होता है। (अनर्थदण्डविरति)

(९) प्रतिदिन नियमित समय पर ही, बने उतने समयतक,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

समतोलवृत्ति—साम्यभाव रखनेका अभ्यास करो—मुहाविरा डालो। (सामायिक)

(१०) अपने देशके बाहरसे आई हुई चीज़ोंको यथासम्भव काममें न लाओ। स्वदेशप्रेम और स्वदेशाभिमान रक्खो, स्वदेशको बुभुक्षित बनानेमें साधनभूत मत बनो। (देशव्रत)

(११) प्रतिमास एक वार जब कभी फुरसत मिले, अनुकूलता हो और शारीरिक व मानसिक स्थिति ठीक हो तब भूखे रहो कि जिससे शरीर नीरोग व सहनशील बने और इस स्थितिमें २४ या १२ घण्टे आत्मानुभव या आत्मविचारोंमें व्यतीत करो। (प्रोषधोपवास)

(१२) जब कभी उपकारी पुरुषोंकी भक्ति—सेवा करनेका अवसर आजाय तब बड़े उत्साहके साथ उनकी सेवा करो। जो संसारके उपकारमें ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं, और जिनको अपने शरीरकी सार सँभाल करनेकी भी फुरसत नहीं रहती है, उनके अस्तित्वकी, आरोग्यताकी और प्रवृत्तिकी जगतको बहुत आवश्यकता रहती है। इस लिए उनकी आवश्यकताओंको जानकर उन्हें पूरी करना उपकृत वर्गका कर्तव्य है। उनके प्रचार कार्योंका निर्वाह करनेके लिए, अपने शरीरबल, द्रव्यबल, समय और बुद्धि आदिका उत्सर्ग करना चाहिए, उनकी मुश्किलों और दुःखोंमें सहानुभूति दिखाकर, उनको दूर करनेके लिए यथाशक्ति प्रयत्न करना चाहिए और उनके जयमें अपना जय—समाजका जय—मानना चाहिए। (अतिथिसंविभाग) *

कृष्णलाल वर्मा।

* जैनाहितेच्छुसे अनुवादित।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वैश्य।

(कविवर श्रीयुक्त बाबू मैथिलीशरण गुप्तकृत भारत-भारतीसे उद्धृत)

(१)

जो ईशके ऊरुज अतः जिनपर स्वदेशस्थिति रही,
व्यापार, कृषि, गोरूपमें दुहते रहे जो सब मही।
वे वैश्य भी अब पतित होकर नीच पद पाने लगे,
बनिये कहा कर वैश्यसे 'वक्काल' कहलाने लगे॥

(२)

वह लिपि कि जिसमें 'सेठ' को 'सठ' ही लिखेंगे सब कहीं,
सीखी उन्होंने और उनकी हो चुकी शिक्षा वहीं।
हा! वेदके अधिकारियोंमें आज ऐसी मूढ़ता,
है शेष उनके 'गुप्त' पदमें किन गुणोंकी गूढ़ता?

(३)

कौशल्य उनका अब यहाँ बस तौलनेमें रह गया,
उद्यम तथा साहस दिवाला खोलनेमें रह गया।
करने लगे हैं होड़ उनके वचन कच्चे सूतसे,
करते दिवाली पर परीक्षा भाग्यकी वे द्यूतसे॥

(४)

वाणिज्य या व्यवसायका होता शऊर उन्हें कहीं-
तो देशका धन यों कभी जाता विदेशोंको नहीं।
है अर्थ सट्टा फाटका उनके निकट व्यापारका,
कुछ पार है देखो भला उनके महा अविचार का?

(५)

बस हाय पैसा! हाय पैसा!! कर रहे हैं वे सभी,
पर गुण विना पैसा भला क्या प्राप्त होता है कभी?

---

१ मुड़िया या सराफ़ी।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सब से गये बीते नहीं क्या आज वे हैं दीखते,
वे देख सुनकर भी सभी कुछ क्या कभी कुछ सीखते?

(६)

बस अब विदेशोंसे मँगाकर बेचते हैं माल वे,
मानों विदेशी वाणिजोंके हैं यहाँ दल्लाल वे।
वेतन सदृश कुछ लाभ पर वे देशका धन खो रहे,
निर्द्रव्य कारीगर यहाँके हैं उन्हींको रो रहे॥

(७)

उनका द्विजत्व विनष्ट है, है किन्तु उनको खेद क्या?
संस्कारहीन जघन्यजोंमें और उनमें भेद क्या?
उपवीत पहनें देख उनको धर्मभाग्य सराहिए,
पर तालियोंके बाँधनेको रुज्जु भी तो चाहिए!

(८)

चन्दा किसी शुभकार्यमें दो चारसौ जो है दिया-
तो यज्ञ मानों विश्वजित ही है उन्होंने कर लिया!
बनवा चुके मन्दिर कुआँ या धर्मशाला जो कहीं,
हा स्वार्थ! तो उनके सदृश सुर भी सुयशभागी नहीं!

(९)

औदार्य उनका दीखता है एकमात्र विवाहमें,
बहजाय चाहे वित्त सारा नाचरंग-प्रवाहमें!
वे वृद्ध होकर भी पता रखते विषयकी थाहका,
शायद मेरे भी जी उठें वे नाम सुनकर व्याहका!

(१०)

उद्योग बलसे देशका भंडार जो भरते रहे,
फिर यज्ञ आदि सुकर्ममें जो व्यय उसे करते रहे।
वे आज अपने आप ही अपघात अपना कर रहे,
निज द्रव्य खोकर घोर अघके घट निरन्तर भर रहे॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उदासीन-आश्रम ।

छात्राश्रम, श्राविकाश्रम, अनाथाश्रमके बाद जैनसमाजका ध्यान अब उदासीनाश्रमोंकी ओर भी गया है। इस वर्ष दो उदासीनाश्रम स्थापित हुए हैं—एक तक्कूगंज इन्दौरमें और दूसरा कुण्डलपुर (दमोह) में ।

बहुत लोग मख़ौल करते हैं कि जैनसमाज गृहस्थाश्रमकी उन्नतिके जितने उपाय हैं उन सबको कर चुका है—विद्यालय, छात्राश्रम आदि सब कुछ स्थापन कर चुका है और कोई करने लायक़ काम उसकी दृष्टिमें शेष रहा नहीं हैं, इसलिए अब उसने उदासीनाश्रम स्थापित करनेकी ठानी है। इसमें वे लोग रहेंगे जो इन सब उन्नतिके कामोंसे उदासीन हो चुके हैं। परन्तु हमारी समझमें केवल 'उदासीन' इस नामसे ही इस तरहके अनुमान लगाकर मख़ौल करना ठीक नहीं है। वास्तवमें देखा जाय तो अब जैनसमाजका काम उदासीनाश्रमोंके स्थापित किये बिना चल ही नहीं सकता—उदासीनोंकी उसे बड़ीभारी ज़रूरत है। क्योंकि जिस परिमाणसे उसकी सार्वजनिक संस्थायें खुलती जाती हैं उस परिमाणसे उसमें काम करनेवाले नहीं बढ़ते हैं। जिस संस्थाको देखिए उसीमें यह त्रुटि बतलाई जाती है कि अच्छे काम करनेवानेवाले आदमी नहीं हैं और सुयोग्य कार्यकर्त्ताओंके बिना रुपया ख़र्च होते हैं तो भी संस्थाओंकी दशा अच्छी नहीं ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अच्छे अध्यापक नहीं मिलते, अच्छे उपदेशकोंका अभाव है, शिक्षाप्रचारक नहीं हैं, चारित्रसुधारक नहीं हैं, दूसरोंके दुःखोंमें दुखी होनेवाले नहीं है और परोपकारके—स्वार्थत्यागके भाव जागृत करनेवाले मूर्तिमन्त उदाहरण नहीं हैं। इसलिए जैनसमाजके लिए आवश्यक हुआ है कि वह उदासीनाश्रम स्थापित करे और उनके द्वारा इस प्रकारके काम करनेवाले तैयार करे।

तनख्वाह देकर—रुपया देकर काम करनेवाले प्राप्त किये जा सकते हैं; परन्तु जैनसमाजमें शिक्षाकी और योग्यताकी इतनी कमी है कि इसमें वेतन देकर भी अच्छे कार्यकर्त्ता प्राप्त नहीं किये जा सकते। इसके सिवाय वैतनिक कार्यकर्त्ता उतना अच्छा कार्य नहीं कर सकते हैं जितना अच्छा कि स्वार्थत्यागी पुरुष कर सकते हैं। और, संस्थायें केवल बाहरी शक्तियोंसे चल भी तो नहीं सकती हैं—अच्छी उन्नति भी तो नहीं कर सकती हैं जब तक कि उनमें कुछ आध्यात्मिक शक्तियाँ काम नहीं करती हों और ये शक्तियाँ सच्चे स्वार्थत्यागी पुरुषोंमें ही दर्शन देती हैं। अतएव आवश्यकता है कि जैनसमाजमें आध्यात्मिक शक्तिसम्पन्न पुरुष भी तैयार किये जावें और इसीके लिए उदासीनाश्रमोंका उपयोग करना चाहिए।

जनसेवाका कार्य सर्वोत्तम रीतिसे स्वार्थत्यागी पुरुष ही कर सकते हैं। जिन्होंने अपने जीवनको दूसरोंके उपकारके लिए अर्पण कर दिया है उन्हींका समाज पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। विशेषकर जैनसमाजमें तो त्यागी वैरागियोंको छोड़कर दूसरोंकी बातका प्रायः असर ही नहीं पड़ता है। क्योंकि इस समाजमें चिरकालसे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वैराग्यकी—स्वार्थत्यागकी ही पूजा होती आई है। अतएव अपनी संस्थाओंकी सहायताके लिए, उनके प्रति प्रीति उत्पन्न करानेके लिए जब तक स्वार्थत्यागी या उदासीन तैयार न होंगे तब तक उनकी दशा संतोषजनक नहीं हो सकेगी।

हम नहीं कह सकते कि उदासीनाश्रमके स्थापकों और संचालकोंने 'उदासीन' का अर्थ क्या निश्चित किया है; परन्तु यदि ये आश्रम जैनसमाजकी उन्नतिके लिए स्थापित हुए हैं तो 'उदासीन' का अर्थ स्वार्थत्यागी परोपकारी ही होगा। जो अपनी स्वार्थवासनाओंसे—भोगलालसाओंसे उदासीन हो चुका है—अपने सुखकी, आरामकी, मानापमानकी जिसे परवा नहीं रही है, गृहकी संकीर्ण परिधिका उल्लंघन करके जिसके प्रेमकी सीमा सारे विश्वमें व्याप्त हो गई है और इस कारण जो जीवमात्रकी भलाई करनेके लिए तत्पर हो गया है, उसे ही हम उदासीन कहते हैं। ऐसे उदासीन ही जैनसमाजको लाभ पहुँचा सकते हैं और इन्हींके लिए आश्रमकी ज़रूरत है।

यहाँ प्रश्न होता है कि ऐसे लोग तो यों ही समाजसेवाका कार्य करेंगे, उनके लिए आश्रमोंकी क्या आवश्यकता है? उत्तर यह है कि मनुष्यके विचार सदा स्थिर नहीं रहते हैं। इस समय किसी पुरुषके हृदयमें जो स्वार्थत्यागके विचार उत्पन्न हुए हैं संभव है कि वे थोड़े दिन पीछे न रहें। इस लिए उत्पन्न हुए विचारोंको स्थिर रखने और दृढ बनानेके लिए, विचारोंके अनुसार काम करनेकी योग्यता प्राप्त करानेके लिए और अनेक विचारों

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

को एक साथ मिलाकर विशेष शक्तिके साथ काम करना सिखलानेके लिए कोई साधन चाहिए और हमारी समझमें उदासीनाश्रम इसके लिए बहुत अच्छा साधन है।

अभी तक यह मालूम नहीं हुआ है कि ये आश्रम अपना काम किस ढंगसे और किस पद्धतिसे चलावेंगे, इस लिए यदि इस विषयमें हम अपने विचारोंको संक्षेपमें निवेदन कर दें तो कुछ अनुचित न होगा।

जिन लोगोंके हृदयमें वास्तविक स्वार्थत्याग और परार्थपरताके भाव उत्पन्न हुए हैं वे ही लोग आश्रममें भरती किये जावें। बस, यही एक बात उनकी जाँचकी कसौटी होनी चाहिए। सबसे पहले उन्हें योग्यताका सम्पादन कराया जाय। योग्यताको हम दो भागोंमें बाँटते हैं—एक तो ज्ञानसम्बन्धी योग्यता और दूसरी चारित्रसम्बन्धी योग्यता। इन दोनों योग्यताओंके बिना आज कलके समयमें न कोई काम ही अच्छी तरह किया जा सकता है और न सफलता ही प्राप्त हो सकती है। इस समय ज्ञान और चारित्र दोनोंकी आवश्यकता है। आश्रमवासियोंको धार्मिक और व्यावहारिक दोनों प्रकारकी उच्चश्रेणीकी शिक्षा प्राप्त करना चाहिए। इसके बिना इस ज्ञान विज्ञानके युगमें कोई काम नहीं किया जा सकता। चारित्रसम्बन्धी योग्यताको हम बहुत ही आवश्यक समझते हैं, क्योंकि इसके बिना परार्थ तो कठिन बात है स्वार्थसाधनके काम भी अच्छी तरह सम्पन्न नहीं हो सकते। जिसने इन्द्रियों और मनको वशमें रखनेका अभ्यास नहीं किया, अपनी आवश्यकताओंको

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कम नहीं किया, कष्ट सहनेकी आदत नहीं डाली, ब्रह्मचर्यकी रक्षाकरके शारीरिक और मानसिक शक्तियोंको नहीं बढ़ाया, ध्यानके द्वारा मनको एकाग्र करनेका अभ्यास नहीं किया, इष्टानिष्टमें साम्य भाव रखनेका प्रयत्न नहीं किया और अपने हृदयको जीवमात्रके हितके लिए करुणातत्पर नहीं बनाया वह दूसरोंकी उन्नति–दूसरोंकी भलाई कभी नहीं कर सकता। इस लिए इस प्रकारके चारित्रका अभ्यास आश्रममें अवश्य कराना चाहिए। काम करनेके लिए और उनमें सफलता प्राप्त करनेके लिए कुछ आध्यात्मिक शक्तियोंकी ज़रूरत होती है और वे शक्तियाँ पवित्र चारित्र तथा तप आदिके विना प्राप्त नहीं हो सकतीं।

उदासीनोंको कमसे कम तीन वर्षतक ज्ञान और चारित्रसम्बन्धी योग्यता प्राप्त करते रहनेके बाद काममें हाथ लगाना चाहिए और काम भी उन्हें उनकी योग्यताके अनुसार छोटे बड़े सौंपना चाहिए; परन्तु काम करते हुए भी उन्हें अपनी योग्यता बढ़ानेका क्रम ज़ारी रखना चाहिए।

आश्रमके प्रधान संचालक जो स्वयं भी उदासीन हों, उदासीनोंको उनकी योग्यताका विचार करके काम सौंपें। जगह जगह जाकर उपदेश देना, व्याख्यान देना, पाठशालाओंमें अध्यापकीका काम करना, शास्त्रसभाओंमें उपदेश देना, आवश्यकता होनेपर घर घर जाकर उपदेश देना, पुस्तकें लिखना, लेख लिखना, ग़रीबोंकी सहायता करना, रोगियोंकी सेवा करना, इत्यादि सब तरहके परो-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पकारके काम उन्हें सौंपे जावें और वे छोटेसे छोटा और बड़ेसे बड़ा काम करनेके लिए हर समय तत्पर रहें।

ये आश्रम उसी ढंगके होना चाहिए जैसी कि माननीय गोखलेकी 'सर्वेंट आफ इंडिया सुसाइटी' (भारतसेवकसमिति) है। जिस तरह उसके मेम्बर राजनीतिको आगे रखकर सब काम करते हैं उसी तरह इन आश्रमोंके उदासीनोंको धर्मको और चारित्रको आगे रखकर काम करना चाहिए।

उदासीनाश्रमोंको हम इसी रूपमें देखना चाहते हैं और जहाँतक हम सोच सकते हैं जैनसमाजका कल्याण भी ऐसे ही आश्रमोंसे हो सकता है। इसके विपरीत यदि इनमें

नारि मुई घर संपति नासी,
मूड़ मुड़ाय भये सन्यासी।

इस अवस्थाके सन्यासियों या उदासीनोंकी पालना होगी, अथवा जिन्हें सच्चा वैराग्य तो हुआ नहीं है किन्तु गृहस्थाश्रमको अच्छी तरह चलाने योग्य पुरुषार्थके अभावमें उसे झंझट समझकर जो केवल अपनी सुखशान्तिके लिए दुनियादारीकी रस्सी तुड़ाकर भाग आये हैं उन्हें भरती किया जायगा, तो ऐसे आश्रमोंकी कोई ज़रूरत नहीं है। जो अपने स्वार्थसे—अपनी ही सुख शान्तिसे उदासीन नहीं हुए हैं और दूसरोंके कल्याणमें जिन्होंने अपने आपको नहीं भुला दिया है, उन नामके उदासीनोंसे जैनसमाजका क्या कल्याण हो सकता है?

ऐसे उदासीनोंकी इस समय कमी भी नहीं हैं। सैकड़ों ऐलक,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्षुल्लक, त्यागी, ब्रह्मचारी, प्रतिमाधारी जहाँ तहाँ पुज रहे हैं। उनके भोजनवस्त्रोंकी, पूजाप्रतिष्ठाकी, जयजयकारकी जैनसमाज बराबर चिन्ता रखता है। फिर उनके लिए जुदा आश्रमोंके खोलनेकी ज़रूरत ही क्या है?

यदि यह कहा जाय कि इन लोगोंकी शिक्षाका और चारित्र-सुधारका प्रयत्न आश्रमोंमें किया जायगा तो यह असंभव मालूम होता है। क्योंकि इनमें अशिक्षितोंकी संख्या ही अधिक है। ये जैनसमाजमें स्वच्छन्द विहार करते हैं और खूब पूजाप्रतिष्ठा पाते हैं। इसलिए इन्हें किसी शासन या शृङ्खलामें रखना बहुत ही कठिन होगा। पढ़ने लिखनेमें इनका चित्त भी नहीं लग सकता।

कुछ महाशयोंकी यह राय है कि जो इस समय गृहत्यागी नहीं हैं—घरगिरस्तीमें रहकर ही धर्मध्यान करते हैं और शान्तपरिणामी हैं, वे इन आश्रमोंमें रहेंगे। परन्तु जो केवल अपना आत्मकल्याण करनेकी इच्छा रखते हैं, अपने ही लिए सामायिक स्वाध्याय करते हैं, जिनका सारा दिन चूल्हा चक्की और खानपानकी शुद्धताके विचारोंमें ही बीत जाता है वे पवित्र और आदरणीय भले ही हों; पर उनसे जैनसमाजका कल्याण नहीं हो सकता है और इसीलिए हमारी समझमें उन लोगोंके लिए हमें कोई संस्था खोलनेकी ज़रूरत नहीं है; वे अपना कल्याण अपने घरोंमें ही रहकर कर सकते हैं।

बात यह है कि इस समय हमें कर्मवीर चाहिए। कर्म करना छोड़कर—संसारको भुलाकर शान्ति चाहनेवालोंकी इस समय हमें

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कोई आवश्यकता नहीं है। जो संसारसे दूर भागना चाहते हैं और उसके साथ ही परोपकारकर्मसे भी दूर रहना चाहते हैं वे हमारा क्या भला करेंगे ?

आशा है कि उदासीनाश्रमोंके संचालक इस लेख पर ध्यान देंगे और ऐसा प्रयत्न करेंगे जिससे ये आश्रम जैनसमाजकी प्रगतिमें कुछ सहायक हों—उसमें बाधा डालनेवाले या निष्कर्मा बनकर हमारे लिए भारभूत न हों।

हृदयोद्गार।

[श्रीयुक्त बाबू अर्जुनलालजी सेठी बी. ए. के बनाये हुए 'महेन्द्रकुमार' नाटकसे उद्धृत एक पद्य।]

कब आयगा वह दिन कि बनूँ साधु विहारी ॥ टेक ॥

दुनियामें कोई चीज़ मुझे थिर नहीं पाती,
और आयु मेरी यों ही तो बीती है जाती।
मस्तक पै खड़ी मौत वह सबहीको है आती,
राजा हो चाहे राणा हो हो रंक भिखारी ॥ १ ॥

संपत्ति है दुनियाकी वह दुनियामें रहेगी,
काया न चले साथ वह पावकमें दहेगी।
इक ईंट भी फिर हाथसे हर्गिज न उठेगी,
बँगला हो चाहे कोठी हो हो महल अटारी ॥ कब० ॥ २

बैठा है कोई मस्त हो मसनदको लगाये,
माँगे है कोई भीख फटा वस्त्र बिछाये।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अंधा है कोई कोई बधिर हाथ कटाये,
व्यसनी है कोई मस्त कोई भक्त पुजारी ॥ कब० ॥ ३

खेले हैं कई खेल धरे रूप घनेरे,
स्थावरमें त्रसोंमें भी किये जाय बसेरे।
होते ही रहे हैं यों सदा शाम सबेरे,
चक्करमें घुमाता है सदा कर्म मदारी ॥ कब० ॥ ४

सबहीसे मैं रक्खूँगा सदा दिलकी सफ़ाई,
हिन्दू हो मुसलमान हो हो जैन ईसाई।
मिल मिलके गले बाँटेंगे हम प्रीति मिठाई,
आपसमें चलेगी न कभी द्वेष-कटारी ॥ कब० ॥ ५

सर्वस्व लगाके मैं करूँ देशकी सेवा,
घर घर पर मैं जा जाके रखूँ ज्ञानका मेवा।
दुःखोंका सभी जीवोंके हो जायगा छेवा,
भारतमें देखूँगा न कोई मूर्ख अनारी ॥ कब० ॥ ६

जीवोंको प्रमादोंसे कभी मैं न सताऊँ,
करनोंके विषय हेयमें अब मैं न लुभाऊँ।
ज्ञानी हूँ सदा ज्ञानकी मैं ज्योति जगाऊँ,
समतामें रहूँगा मैं सदा शुद्धविचारी ॥ कब ॥ ७

नोट—जिस पुरुषश्रेष्ठकी ऐसी पवित्र उदार और शान्त भावनायें हो, उसकी राजद्रोह और नरहत्या जैसे नीच कर्मोंसे भी सहानुभूति होगी, इस बातकी हम लोग तो कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

—सम्पादक।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सहयोगियोंके विचार।

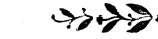

प्रार्थना।

जैनोंके अन्तरमें छुपे हुए परमेश्वर, तू अपना वास्तविक स्वरूप प्रकट कर! सर्व शक्तिमान् होकर भी आज तू भीरु, खुशामदी, संकीर्ण, बहमी, और अज्ञानहीमें आनन्द मनानेवाला बन गया है। इसके कारण अब तो कुछ लज्जित हो और अपनी ईश्वरतामें बट्टा लगानेके अपराधसे मुक्त होनेके लिए जनसेवारूप प्रायश्चित्त लेकर पवित्र बन तथा अपना ज्ञानमय चारित्रमय वीर्यमय प्रकाशित स्वरूप फिर धारण कर! जब तू स्वयं परमेश्वर है तब तुझे प्रकाशित करनेके लिए और दूसरे किस परमेश्वरकी प्रार्थना करनेकी आवश्यकता हो सकती है? तू स्वयं ही अपनी सहायता कर, तुझे चारों ओरसे जिन मर्यादाकी संकलोंने जकड़ रक्खा है उन्हें स्वयं ही एक महावीरके समान तोड़ताड़कर अलग कर और अपना दिव्य स्वरूप प्रकट कर!

—जैनहितेच्छुके खास अंकका मुखपृष्ठ।

जैनजातिको जीना है या मरना?

जब भारतकी जैनेतर जातियाँ इस प्रश्नके विचारमें लीन हो रहीं हैं कि 'आगे कैसे बढ़ें?' तब जैनजातिके आगे यह प्रश्न खड़ा हुआ है कि 'जीते रहना या मर जाना?' जो मनुष्य जीना चाहता है वह बाहरके पदार्थोंको खुराकके रूपमें ग्रहण करता है, उन्हें पचाता है और शरीरके रक्तके रूपमें उनका रूपान्तर करता है, अर्थात् उन्हें अपने शरीरका ही एक भाग बना लेता है। परन्तु जैनसमाजरूपी मनुष्य ऐसा नहीं करना चाहता। बाहरी मनुष्योंको अपने शरीरका भाग बना लेनेकी चिन्ता तो दूर रही, वह अपने शरीरके अवयवोंको भी शरीरसे जुदा करनेमें बहादुरी दिखला रहा है। तब बतलाइए कि यह जैनसमाज जीता कैसे रह सकता है? जैनधर्म जब महावीर भगवान्के हाथसे पुनरुज्जीवित हुआ तब वह एक जीवित समाजका धर्म था। उस समय जैनेतरोंको जैनसमाजमें आने दिया जाता था, उन्हें तत्त्वज्ञान सिखलाया जाता था

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

और फिर पक्का जैन बन जानेका सुभीता कर दिया जाता था। जैनधर्मका क्षेत्र आज कलके समान संकीर्ण न था; इसके विस्तृत मैदानमें सारी मानव जातिको टिकनेके लिए जगह मिलती थी। (हाथी, सर्प आदि भयानक प्राणी भी इस मैदानमें खड़े हो सकते थे।) स्वाध्याय (अभ्यास), प्रामाणिकता निर्भय स्वातन्त्र्य, कोमल मनोवृत्तियाँ और सुदृढ चारित्र, ये उस समयके जैनोंको प्रसिद्धिमें लानेवाले तत्त्व थे। उस समयकी धार्मिक श्रद्धाकी जड़में बुद्धि और विचार शक्ति थी, इस लिए उनकी वह श्रद्धा उन्हें प्रसन्नतापूर्वक प्राण न्योछावर कर देनेकी प्रेरणा कर सकती थी। उनमें इतनी सचाई और साख़ थी कि जैन जो शब्द बोलते थे वे 'दस्तावेज' के समान पक्के समझे जाते थे। उनके शब्दरूप 'दस्तावेज' को कोई स्वार्थ, डर या विघ्न बदल नहीं सकता था। पूर्वके जैन इसी नमूनेके थे। वे जन्मसे जैन कहलवानेके लिए मग़रूर न थे; परन्तु जैनधर्मको सीखकर, जैनजीवन व्यतीत करनेका प्रारंभ करनेमें ही जैनत्व मानते थे और ऐसे जैनसमाजके एक सभ्यके रूपमें प्रकट होनेको मग़रूरी समझते थे।

और अब? अब हमारे जैन न तो पूर्वके जैनोंके ही अनुयायी रहे हैं और न पश्चिमके वास्तविक अनुकरण करनेवाले बने हैं। हममेंसे कितनेक तो अपने पूर्वजोंके रिवाज़ों और क्रियाओंके बाह्यरूपको पकड़कर बैठ रहे हैं और कितने ही पश्चिमकी वानरी नकल करनेमें लग पड़े हैं। हम न तो अपने पूर्वजोंकी बनाई हुई क्रियाओं और नियमोंका गुप्त रहस्य और सच्ची विधियाँ समझते हैं और न यह जानते है कि पश्चिमके रिवाज़ क्यों और कैसी परिस्थितियोंमें ज़ारी हुए हैं और वे हमारे लिए कितने अंशोंमें अनुकूल और कितनोंमें प्रतिकूल हैं। वीर परमात्माकी स्थापितकीहुई गद्दीके हक़दार ऐरे गैरे जिनके जीमें आया वे ही बनने लगे हैं। मन्दिरों, धर्मस्थानों, सार्वजनिक जैनसंस्थाओं और भंडारोंकी मालिकी भी ऐसे ही लोगोंके हाथोंमें जाने लगी है। क्यों? इसलिए कि उनके हक़के विरुद्ध आन्दोलन उठानेवाले नहीं मिलते हैं। कूपर कवि कहता है कि "मुझे जो कुछ नज़र आता है उस सबका मैं महाराजा हूँ; मेरे हक़के विरुद्ध पुकार मचानेवाला कोई भी नहीं है!" जैनसमाजकी भी यही दशा हो रही है। अपने शास्त्रोंकी रक्षा करनेका हक़, संस्थाओं और फंडोंकी मालिकीका हक़ ये सब हक़

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

किसीके सोंपे बिना ही जिसके जीमें आया है वही दबा बैठा है। इससे क्या सूचित होता है? यही कि जैनसमाजमें घुन लग गया है; इतना ही नहीं बल्कि जैनसमाजका अन्तसमय आ पहुँचा है।

यहाँ लोग भ्रममें न पड़ जावें इसके लिए हम यह कह देना चाहते हैं कि '**जैनसमाजका** अन्त आ पहुँचा है' इसका अर्थ यह नहीं है कि '**जैनधर्मका** अन्त समय आ पहुँचा है।' क्योंकि जैनधर्मका सत्य स्वरूप अमर है। सत्य या तत्त्व कभी मरते नहीं हैं। स्वयं जैनोंकी ओंधी प्रवृत्ति–उलटी चाल भी इस अमर तत्त्वको नहीं मार सकती है। महावीर भगवानके समवसरणके समय जैनधर्ममें जो मिठास और शक्ति थी वही आज भी है और आगे भी रहेगी। मेरा विश्वास है कि जैनधर्मने पश्चिममें पुनर्जन्म ग्रहण कर लिया है। जैनधर्मके दयाके सिद्धान्तने यूरोप अमेरिकामें अनेक ह्यूमेनीटेरियन संस्थाओंको जन्म दिया है। जैनधर्मके गभीर तत्त्वज्ञानने कितने ही अँगरेज़ भाइयों और बहिनोंके हृदयों पर विजय पाई है। जैनधर्मके प्राचीन तत्त्वग्रन्थोंने पश्चिमके विद्वानोंके मुँहसे प्रशंसा और प्रेमके शब्द कहलवाये हैं। जैनधर्मकी 'सहधर्मी' रूप 'ज्ञाति' यूरोपियन बुद्धिको सन्तोषित करनेवाली सिद्ध हुई है। इस तरह, जैनधर्म कुछ मर नहीं गया है,—उसने तो नया जीवन पालिया है; केवल उसका बाहरी स्वरूप बदल गया है।

अपने सार्वजनिक भंडारोंके अप्रबन्धके सम्बन्धमें मैं ऊपर एक जगह इशारा कर चुका हूँ। हमारे सामाजिक विषय भी ऐसी ही गड़बड़ों और झंझटोंमें हैं। अपने लोगोंके विचारों और कार्योंकी स्वच्छन्दता पर काबू रख सकें, इस तरहके प्रबल सार्वजनिक मत (पब्लिक ओपीनियन) का हमारे यहाँ अभाव है। इस लिए जिसकी मर्ज़ीमें जो आता है वह करता है और कहता है; सार्वजनिक मतके रूपमें कोई अंकुश ही नहीं है। जहाँ तहाँ जैनधर्मके विरुद्ध रीति–रवाज, रहन–सहन और आचरण देखे जाते हैं; उनके लिए कोई दण्ड या चेतावनी देनेकी कोई पद्धति ही नहीं है। यदि कभी किसी सच्चे या कल्पित धर्मविरुद्ध कार्यके विरुद्ध आवाज़ उठाई जाती है तो उसका असर मोमके खिलौनेके असरसे अधिक नहीं होता। शिक्षाके विषयमें जैन अपनी पड़ोसी जातियोंसे पीछे नहीं हैं इसका

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पता मनुष्यगणनाकी रिपोर्टसे लगता है; परन्तु मनुष्यगणनाकी रिपोर्टके भरोसे बैठे रहनेसे काम नहीं चलता; क्योंकि विशाल विश्वमें हमारी संख्या केवल १०-१२ लाख ही है ! यह क्या हमारी प्रतापपूर्ण इतिहास रखनेवाली जातिके लिए कम लज्जाका विषय है ? हममें यदि शिक्षाकी अधिकता होती तो हमारे भाई दूसरे धर्मोंमें नहीं जा सकते और हम दूसरोंको अपने उदार तत्त्व समझाकर जैनगणनामें वृद्धि किये बिना न रहते। क्या हमें अपने इतने ओछे ज्ञानसे-अल्पशिक्षासे निर्वाणकी बातें करते समय लज्जा न आनी चाहिए ? हम कहा करते हैं कि पहलेके जैन व्यापारसे अगणित धन पैदा करते थे; परन्तु इस समयके जैनोंके हाथमें बतलाइए कहाँ है वैसा व्यापार और धन ? जैनोंका प्रायः प्रत्येक खाता-प्रत्येक संस्था धनकी तंगीसे मृतप्राय हो रही है। हममें ' पब्लिक स्प्रिट '-सार्वजनिक जोशका अंश भी कहाँ है और हो भी कहाँसे ? जो मनुष्य मरनेकी तैयारीमें है वह क्या नृत्य कर सकता है ? जैनजाति जब मरणशय्या पर पड़ी दिख रही है तब सार्वजनिक जोश और स्वार्थत्यागके तत्त्वके अभावमें (मरनेके सिवाय) और दूसरे किस परिणामकी आशा की जा सकती है ? लापरवाही (अनवधानता), अश्रद्धा और अन्धश्रद्धा ये तीन शत्रु हमारी जातिको घोंट घोंटकर मार रहे हैं। हमारे बड़े बूढ़े तो केवल दूसरोंको मिथ्याती और भ्रष्ट कहनेमें ही धर्मपालनकी समाप्ति समझते हैं और नौजवान भाई जड़वाद और नास्तिकताकी बढ़तीहुई दुनिया और जड़वादमूलक सुधारोंके उपदेशकी ओर आकर्षित होकर जैनबन्धनसे छूट जानेमें ही आनन्द मानने लगे हैं।

जो लोग निष्पक्ष होकर शान्तिके साथ विचार कर सकते हैं उन्हें यह विश्वास हुए बिना न रहेगा कि मैंने अपनी जातिकी दशाका जो स्वरूप बतलाया है उससें जरा भी अतिशयोक्ति नहीं है। हमारे सामाजिक बन्धन शिथिल हो गये हैं, अविद्याने हमारे यहाँ अड्डा जमा रक्खा है। न हमारे यहाँ कोई उत्तम प्रकारकी सामाजिक संस्था रही है और न राष्ट्रीय। हमारी संख्या दिनपर दिन कम होती जाती है, हमारी लक्ष्मी उड़ती जाती है और हम विनाश तथा मृत्युके मार्ग पर जा पहुँचे हैं।

परन्तु क्या अब इस भयंकर पतनको हम रोक नहीं सकते हैं ? क्या

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रोग बिलकुल ही असाध्य हो चुका है? नहीं, प्रबल प्रयत्न किया जाय तो संसारमें कोई भी काम अशक्य नहीं है। यदि हम अब भी चेत जावें, सुव्यवस्थित नियमोंकी रचना करें, अपने समाजमें विद्याका प्रचार करें, पूर्व और पश्चिमकी गार्हस्थ्य रचनाका अध्ययन-अभ्यास करके जो बातें अपने लिए अनुकूल और कल्याणकारी हों उन सबको संचय करके उस पर अपने गृहसंसारकी नींव जमावें, जैनधर्मरूपी सुन्दर महलका द्वार सबके लिए खुला रक्खें, अपने हृदयको उदार बनावें, व्यापार और बैंकिंगके लिए एकता करें, आरोग्यविद्याके ज्ञानका और शुद्ध अध्यात्मविद्याका अपने समाजमें प्रेम उत्पन्न करें—ये सब बातें यदि हम कर सकें तो अब भी बचे रहनेका समय है—बारहवें घण्टेका ६० वाँ मिनिट अब भी हमारे हाथमें है। इतनेमें यदि हम कुछ तदबीर कर गुज़रेंगे तो मृत्युसे बच सकते हैं।

—जे. एल. जैनी एम. ए. बार एट् ला।
(अँगरेज़ी जैनगज़टसे)

स्त्रियोंका आदर।

हमारे देशमें जब उन्नति हो रही थी तब स्त्रियोंका खूब आदर था और वे शिक्षिता थीं। किन्तु जबसे उनका आदर कम होकर शिक्षा भी कम होगई है तभीसे अवनतिने यहाँ प्रवेश किया है। इसलिए यह कहना ही ठीक जँचता है कि अशिक्षणके रिवाज़ पर लात मारकर स्त्रियोंको खूब शिक्षित करना हमारे लिए पथ्य है। दूसरा कोई भी मार्ग हमारे कल्याणका नहीं है। बहुत पुराने जमानेको जाने दीजिए, महावीरके जन्मको केवल ढाई हज़ार वर्ष ही बीते हैं। उनके पिता अपनी पत्नीका कैसा आदर करते थे? देखिए:—

आगच्छन्तीं नृपो वीक्ष्य प्रियां संभाष्य स्नेहतः।
मधुरैर्वचनैस्तस्यै ददौ स्वार्धासनं मुदा॥

अर्थः—राजा **सिद्धार्थने** अपनी प्रियाको कचहरीमें आते देखकर मधुर वाक्योंसे प्रेमपूर्वक आलाप किया और प्रसन्न होते हुए अपना अर्ध सिंहासन बैठनेको दिया, जिस पर कि वे जाकर बैठीं।

इससे यह ज्ञात होगा कि थोड़े ही पहले बड़े बड़े राजा लोग भी अपनी स्त्रियोंका कितना सत्कार करते थे। अथवा यह कल्पना करनी चाहिए कि जो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीका इतना भारी आदर करते हैं उन्हींके घरमें तीर्थंकर सरीखे पुत्र उत्पन्न हो सकते हैं, जो कि तीनों लोकका उद्धार कर अपना भी परम कल्याण करनेवाले हैं। इस उदाहरणको देखकर उन्हें संतोष करना चाहिए जो स्त्रीको सदा पैरोंमें कुचलना पसंद करते हैं; अपनी केवल दासी समझते हैं और उसका आदर करनेमें या होने देनेमें पुरुषजातिका अनादर समझते हैं या पाप समझते हैं।

—पं० वंशीधर शास्त्री।

(जैनमित्र, अंक ६)

आदर्शका अदर्शन।

समाजनेता महाशयो, आपलोग रूढियोंके, समाजके, धर्मगुरुओंके और राजाके झूठे—माने हुए डरसे लोगोंके सामने वास्तविक आदर्श नहीं रखते हैं और सत्यका जानबूझकर खून करते हैं; परन्तु याद रखिए आपको इसका बदला ज़रूर मिलेगा। समाजके एक समूहको वर्षोंतक दुःखमें पड़े रखनेवाले-पापमें डालनेवाले आप ही लोग हैं। आप दूसरोंको 'पुनर्जन्म' और 'कर्म' के सिद्धान्तका उपदेश दिया करते हैं; परन्तु इस सिद्धान्तमें यदि आपको ही श्रद्धा होती तो वास्तविक आदर्शको समाजके सामने निडर होकर रखनेमें आप कभी आनाकान न करते। लड़ाईके मैदानमें दश बीस रुपये महीनेकी तनख्वाहके लिए प्राणन्योछावर करदेनेका साहस करनेवाले तो बहुत मिलते हैं; परन्तु सत्यका जो स्वरूप आपने समझा हो वही स्वरूप समाजको आदर्शके रूपमें समझानेकी हिम्मत बहुत थोड़े लोगोंमें होती है। यदि मैं किसी बातका सत्यस्वरूप स्पष्टशब्दोंमें प्रतिपादन करूँगा तो अमुक प्रचलित रीति या रूढ़ी पर चोट पहुँचेगी और इससे उस रूढ़ीके गुलाम मेरी निन्दा करेंगे, अगुए शत्रु बन जावेंगे, धर्मगुरु या पण्डितजन अपनी भेड़ोंको मेरे विरुद्ध उत्तेजित कर देंगे, और प्रचलित राजनीतिके किसी नियमका भंग होनेसे मुझे सज़ा मिलेगी। इस प्रकारके भयोंके वशीभूत होनेका परिणाम यह हुआ है कि वास्तविक आदर्शका दर्शन इस देशमें बहुत कठिन होगया है और यही इस देशके आत्मिक मरणका कारण है। इस आत्मिक मरणसे राजकीय परतंत्रता आदि अनेक फल उत्पन्न होते हैं। —**समयधर्म**।

जैनहितेच्छु अंक ९-१०।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गोत्रोंकी झंझट और जातिके ग़रीब।

जब खण्डेलवाल-जातिका अस्तित्व कायम हुआ तब गोत्र थे या नहीं, इस विषयमें हम कुछ भी कह नहीं सकते। पर परम्पराकी किंवन्दती ऐसी है कि "खण्डेला एक बड़ा शहर था। उसके अधिकारमें चौरासी गाँव थे। जब जिनसेनाचार्यके उपदेशसे खण्डेला और उसके प्रान्तवर्ति गाँवोंके रहनेवाले जैनी हुए तब गाँवके नाम पर तो खण्डेलवाल-जातिका नाम संस्करण हुआ और जो चौरासी गाँव थे, उनके नाम पर गोत्रोंकी कल्पना हुई।" यदि यह किंवदन्ती सत्य है तो कहना पड़ेगा कि वास्तवमें गोत्रोंका असली स्वरूप कुछ नहीं है। जैसे दक्षिणीयोंमें बीजापुरके रहनेवाले बीजापुरकर और कोल्हापूरके रहनेवाले कोल्हापुरकर कहलाते हैं, वैसे ही बाकली गाँवके रहनेवाले बाकलीवाल, और काशली गाँवके रहनेवाले काशलीवाल कहलाने लगे और ऐसी हालतमें एक गोत्रमें भी यदि परस्पर शादी ब्याह होने लगे तो हमारी समझमें कोई हानि नहीं। क्योंकि पहले भी तो एक गाँवके रहनेवालोंमें ब्याह शादी होते थे। हम नहीं कह सकते कि खण्डेलवाल जातिमें ब्याह शादीके समय यह परस्पर गोत्रोंके मिलानेकी झंझटका कबसे सूत्रपात हुआ। पर पहले जब मामाकी लड़कीसे ब्याह होता था तब यह कहा जा सकता है कि यह पद्धति पुरानी नहीं है। इसके लिए और भी एक सुबूत यह है कि महाराष्ट्र-प्रान्तके खण्डेलवालोंमें अब भी सिर्फ़ दो ही गोत्र टाले जाते हैं। इस विषयको बिलकुल नया देखकर बहुतसे लोग हमसे सवाल करेंगे कि "तुम इन गोत्रोंके बचावको झंझट क्यों समझते हो और इसके उठा देनेसे लाभ क्या?" इसका उत्तर यह है कि यदि जातिमें आज सरीखी अँधाधुन्धी नहीं होती, और पहले सरीखी उसकी शृंखला बनी रहती तो शायद इस विषय पर चर्चा करनेकी आवश्यकता नहीं भी पड़ती। क्योंकि उससे जातिके गरीबोंका काम अच्छी तरह चल सकता था। पर अब वह बात नहीं रही। धनवानोंका तो हर किसी तरह काम चल जाता है और बेचारे ग़रीब रोते ही रह जाते हैं। इसका कारण है, पहले चौरासी गोत्रोंका अस्तित्त्व था, तब तो गोत्रोंके भी बचावमें विशेष तरद्दुत नहीं उठाना पड़ती थी, पर अब कठिनतासे २५–३० गोत्रोंका अस्तित्व मिलता है। सो होता क्या है कि जो धनवान् होते हैं उनके यहाँ तो अपनी लड़के लड़कीका ब्याह करनेके लिए हज़ारों चातककी तरह नेत्र लगाये रहते हैं। ऐसी हालतमें उनकी एक जगह गोत्र अड़ भी जाय तो दूसरी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जगह, दूसरी जगह अड़ जाय तो तीसरी जगह और तीसरी जगह भी अड़ जाय तो चौथी जगह, मतलब यह कि कहीं न कहीं उनका चन्द्र रोहिणीका योग तो मिल ही जाता है। पर कष्ट है तो बेचारे गरीबोंको। क्योंकि एक तो वे बड़ी ही कठिनतासे थोड़ा बहुत पैसा इकट्ठा कर पाते हैं और इससे भी अधिक कठिनतासे या बड़ी दौड़ धूप करके वे कहीं अपना योग मिलाते हैं और वैसी हालतमें कहीं गोत्रोंका पचड़ा आकर अटक गया तो बस फिर रहे वे निरंजनके निरंजन ही। वे धनवान् तो हैं ही नहीं जो उन्हें भी मेघ समझकर हजारों चातक उनकी ओर भी टकटकी लगाये हुए हों। और फिर एक बात है, कहीं तो ४ लड़केकी और ४ लड़कीकी ऐसी आठ गोत्रें बचाई जाती हैं और यदि किसीके दो या तीन ब्याह हुए हों तो १०-१२ तक या इससे भी और आगे नम्बर पहुँचता है। ये सब असुविधाएँ हैं और खासकर गरीबोंके मरणकी कारण हैं। जातिका जीवन उसकी बढ़वारी पर टिका हुआ है। तब हमें गरीबोंको भी जीता रखना पड़ेगा। हम चाहते हैं उन्हें सब तरहसे सुभीता हो, इसीलिए गोत्रोंको एक अनावश्यक झंझट समझते हैं और यदि यह उठा दिया जाय तो जातिका बहुत कल्याण हो सकता है-साधारण स्थितिवालोंको भी थोड़ा बहुत सुभीता हो सकता है। यह हमारी कमजोरी और कायरता है जो ऐसी अनिष्ट रूढ़ियोंको उठा देनेसे हम काँपते हैं। माना जा सकता है कि यह गोत्रोंका टालना कभी किसी सुभीतेके लिए चला और उस समयके लिए जरूरी भी हो, पर इस समय तो इसकी कोई जरूरत नहीं दिखती, किन्तु और उलटा हमारी इससे अत्यन्त हानि हो रही है। इसलिए हमें उचित है कि हम इस चिरसंगिनी रूढि-राक्षसीका जातिसे काला मुँह करें। —सत्यवादी, अंक ११-१२।

AN INSIGHT INTO JAINISM.

अर्थात्

जैनमतादग्दर्शन।

इस पुस्तकमें बाबू ऋषभदासजी, बी. ए. ने जैनधर्मके प्रायः सभी मुख्य मुख्य विषयों पर महत्वशाली लेख लिखे हैं। यह पुस्तक अंग्रेजी जाननेवाले जैनी अजैनी सभी महाशयोंके लिए बड़ी लाभदायक है। इसकी बहुत ही थोड़ी प्रतियां रहगई हैं। मूल्य केवल चार आने।

पता—इयाचन्द्र जैन, बी. ए., बैरूनी खंदक, लखनऊ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नये छपे हुए जैन ग्रन्थ ।

भक्तामरचरित ।

इसमें प्रत्येक श्लोक, उसका अर्थ, प्रत्येक श्लोककी विस्तृत कथा, हिन्दी कविता, प्रत्येक श्लोकका मंत्र और यंत्र ये सब बातें छपाई गई हैं। कथायें बड़ी विलक्षण हैं । उनमें किस पुरुषने किस मंत्रका किस तरह जाप किया, उसको कैसी कैसी तक़लीफें भोगनी पड़ीं और फिर अन्तमें उसे किस तरह मंत्रकी सिद्धि हुई इन सब बातोंकी आश्चर्य-जनक घटनाओंका वर्णन किया है। भाषा बहुत सरल बनाई गई है। यह मूल संस्कृत ग्रन्थका नया अनुवाद है । कपड़ेकी सुन्दर जिल्द बँधी हुई पुस्तक है । मूल्य सवा रुपया ।

श्रेणिकचरित ।

यह अन्तिम तीर्थंकर महावीर भगवान्के परम भक्त महाराजा श्रेणिकका जो इतिहासज्ञोंमें विम्बिसारके नामसे विख्यात हैं—चरित है । इसे श्रेणिकपुराण भी कहते हैं । इसका अनुवाद मूल संस्कृत ग्रन्थ परसे पं. गजाधरलालजीने किया है । आज कलकी बोलचालकी भाषा-में है, पुष्ट चिकना कागज़, उत्तम छपाई, कपड़ेकी पक्की जिल्द, पृष्ठ संख्या ४०० । मूल्य १॥)

धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार ।

श्रीसकलकीर्ति आचार्यके संस्कृत ग्रन्थका सरल अनुवाद । इसमें प्रश्न और उत्तरके रूपमें श्रावकाचारकी सारी बातें बड़ी ही सरलतासें सम-झाई गई हैं । सब भाईयोंको मँगाकर पढ़ना चाहिए । साधारण पढ़े लिखे लोगोंके बड़े कामका ग्रन्थ है । मूल्य दो रुपया ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नाटक समयसार भाषाटीकासहित ।

कविवर पं० बनारसीदासजीके भाषा नाटकसमयसारको कौन नहीं जानता । उनकी भाषा कविता जैनसाहित्यमें शिरोमाणि समझी जाती है । इस अध्यात्मकी कविताका अर्थ सबकी समझमें नहीं आता था, इस कारण श्रीयुत नाना रामचन्द्र नाग (जैन ब्राह्मण) ने भाषा बचनिकासहित इस ग्रन्थको खुले पत्रोंमें छपाया है । छपाई सुन्दर है । मूल्य २॥)

बालक-भजनसंग्रह (द्वितीयभाग) ।

इसमें नई तर्ज़के, नई चालके २१ भजनोंका संग्रह है। इसके बनानेवाले लाला भूरामलजी (बालक) मुशरफ जयपुर निवासी हैं । मूल्य डेढ़ आना ।

महेन्द्रकुमार नाटकके गायन ।

जयपुरकी शिक्षाप्रचारकसमिति जो महेन्द्रकुमार नामका नवीन विचारोंसे परिपूर्ण नाटक खेलती थी उसमेंके गायन छपाये गये हैं । बड़े अच्छे हैं । मूल्य एक आना ।

विश्वतत्त्व चार्ट ।

यह बढ़िया काग़ज़ पर छपा हुआ नकशा है । इसमें जैनधर्मके अनुसार सात तत्त्व और उनका विस्तार बतलाया है । जैनधर्मकी सारी बातें इसमें आ गई हैं । प्रत्येक मन्दिरमें जड़वाकर टाँगने लायक है । मूल्य दो आना ।

आराधना कथाकोश ।

जैनकथाओंका भंडार । मूल संस्कृतसहित सुन्दरतासे छपा है । भाषा बोलचालकी सबके समझने योग्य है । पहले भागका मूल्य १।)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अनित्यभावना।

श्रीपद्मनन्दि आचार्यका अनित्यपंचाशत मूल और उसका अनुवाद। अनुवाद बाबू जुगलकिशोरजी मुख्तारने हिन्दी कवितामें किया है। शोक दुःखके समय इस पुस्तकके पाठसे बड़ी शान्ति मिलती है। मूल्य डेढ़ आना।

पंचपरमेष्ठीपूजा।

संस्कृतका यह एक प्राचीन पूजाग्रन्थ है। इसके कर्त्ता श्रीयशोनन्दि आचार्य हैं। इसमें यमक और शब्दाडम्बरकी भरमार है। पढ़नेमें बड़ा ही आनन्द आता है। जो भाई संस्कृत पूजापाठके प्रेमी हैं उन्हें यह अवश्य मँगाना चाहिए। अच्छी छपी है। मूल्य चार आना।

चौवीसी पाठ (सत्यार्थयज्ञ)।

यह कवि मनरँगलालजीका बनाया हुआ है। इसकी कविता पर मुग्ध होकर इसे लाला अजितप्रसादजी एम. ए. एल एल. बी. ने छपाया है। कपड़ेकी जिल्द बँधी है। मूल्य ॥)

जैनार्णव।

इसमें जैनधर्मकी छोटी बड़ी सब मिलाकर १०० पुस्तकें हैं। सफ़रमें साथ रखनेसे पाठादिके लिए बड़ी उपयोगी चीज़ है। बहुत सस्ती है। कपड़ेकी जिल्द सहित मूल्य १।)

श्रीपालचरित।

पहले यह ग्रन्थ छन्द बंध छपा था। अब पं. दीपचन्दजीने सरल बोलचालकी भाषामें कर दिया है जिससे समझनेमें कठिनाई नहीं पड़ती। पक्की कपड़ेकी जिल्द बँधी है। मूल्य १)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जम्बूस्वामीचरित ।

यह भी कवितासे बदलकर सादी बोलचालकी भाषामें कर दिया गया है । अन्तिम केवली जम्बूस्वामीका पवित्र चरित्र है । मूल्य ।)

दशलक्षणधर्म ।

इसमें उत्तम क्षमादि दशधर्मोंका विस्तृत व्याख्यान है । रत्नकरंडव-चनिका आदि ग्रन्थोंके आधारसे नये ढंगसे लिखा गया है । भाषा बोल-चालकी है । साथमें दशलक्षण व्रत कथा भी है । शास्त्रसभामें बाँचने योग्य है । भादोंके तो बड़े कामकी चीज़ है । मूल्य पाँच आना ।

आत्मशुद्धि ।

यह पुस्तक लाला मुंशीलालजी एम. ए. की लिखी हुई हालहीं प्रका-शित हुई है । विषय नामसे ही स्पष्ट है । जैनग्रन्थोंके आधारसे लिखी गई है । इसमें 'शील और भावना' भी शामिल है । मूल्य ।)

गृहिणीभूषण ।

स्त्रियोंके लिए बड़ी ही उपयोगी पुस्तक है । जैनस्त्रियोंके सिवाय दूसरी स्त्रियाँ भी लाभ उठा सकती हैं । स्त्रियोंके कर्तव्य, व्यवहार, विनय, लज्जा, शील, गृहप्रबन्ध, बच्चोंका लालनपालन, पातिव्रत, परो-पकार आदि-सभी विषयोंकी इसमें सुन्दर शिक्षा दी गई है । भाषा शुद्ध और सरल है । जैनसमाजमें स्त्रीशिक्षाकी इससे अच्छी और कोई पुस्तक प्रचलित नहीं । मूल्य आठ आना ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

महावीरचरित।

श्रीयुक्त ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने हालही लिख कर प्रकाशित कराया है। अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीरका साधारण परिचय पानेके लिए इसे ज़रूर पढ़ना चाहिए। मूल्य एक आना।

अकलंकचरित।

इसमें अर्थसहित अकलंकाष्टक, अकलंकदेवका चरित, अकलंकाष्टकका पद्यानुवाद और अकलंकदेवका कुछ ऐतिहासिक परिचय दिया है। फिरसे छपा है। मू० तीन आना।

हिन्दी भक्तामर-और कल्याणमंदिर।

दोनोंका जुदा जुदा मूल्य एक एक आना है। यह दोनों स्तोत्रोंका पं. गिरिधर शर्माका खड़ी बोलीमें किया हुआ पद्यानुवाद है।

सीताचरित।

इसमें सती सीताजीका पवित्र चरित है। बाबू दयाचन्द्रजी गोयलीय बी. ए. ने नये ढंगसे शिक्षाप्रद बनकर लिखा है। भाषा भी सहज है। स्त्री-पुरुष सब लाभ उठा सकते हैं। मूल्य तीन आना।

प्रद्युम्नचरितसार।

बड़े प्रद्युम्नचरितकी कथाका सार भाग इसमें दिया गया है। भाषा सरल है। लेखक; बाबू दयाचन्द्रजी गोयलीय बी. ए.। मूल्य छह आना।

सूतकी मालायें

जाप देनेके लिए बहुत अच्छी होती हैं। एक रुपयेकी दशके हिसाबसे हमारे यहाँ हर समय मिलती हैं।

मैनेजर, **जैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,**
हीराबाग, पो० गिरगाँव, बम्बई।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पवित्र केशर।

काश्मीरकी प्रसिद्ध केशर हमारे यहाँ हर समय बिक्रीके लिए तैयार रहती है। पवित्रतामें किसी प्रकारका सन्देह नहीं है। विश्वस्त आढतियाकी मार्फत मँगाई जाती है। मन्दिरोंके लिए यही केशर मँगाना चाहिए। मूल्य फी तोला एक रुपया।

सर्वसाधारणोपयोगी हिन्दी ग्रन्थ।

स्वर्गीय जीवन।

यह अमेरिकाके आध्यात्मिक विद्वान डा० राल्फ वाल्डो ट्राइनके सुप्रसिद्ध ग्रन्थ In Tune with the infinite का हिन्दी अनुवाद है। पवित्र, शान्त, नीरोगी और सुखमय जीवन कैसे बन सकता है, मानसिक प्रवृत्तियोंका शरीर पर और शारीरिक प्रकृतियोंका मन पर क्या प्रभाव पड़ता है आदि बातोंका इसमें बड़ा हृदयग्राही वर्णन है। प्रत्येक सुखाभिलाषी स्त्रीपुरुषको यह पुस्तक पढ़ना चाहिए। मूल्य ॥≈) ग्यारह आने।

बाबू मैथिलीशरणजी गुप्तके काव्य ग्रन्थ।

हिन्दीके सुप्रसिद्ध कवि बाबू मैथिलीशरणजीको कौन नहीं जानता। अपने ग्राहकोंके सुभीतेके लिए हमने उनके सब ग्रन्थ बिक्रीके लिए मँगाकर रक्खे हैं। बाजिब मूल्य पर भेजे जाते हैं:—

भारतभारती, सादी	१)	रंगमें भंग	।)
,, राजसंस्करण	२)	पद्यप्रबन्ध	॥≈)
जयद्रथवध काव्य	॥)	मौर्यविजय	।)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जयन्त नाटक।

कविशिरोमाणि शेक्सपियरके 'हेम्लेट' का हिन्दी अनुवाद। इस नाटककी प्रशंसा करना व्यर्थ है। अनुवादके विषयमें इतना कह देना काफी होगा कि इसे बिलकुल देशी पोशाक पहना दी गई है और इस कारण इस देशवासियोंके लिए यह बहुत ही रुचिकर होगा। रूपान्तरित होने पर भी यह अपने मूलके भावोंकी खूब सफलताके साथ रक्षा कर सका है। रंगमंच पर अच्छी तरह खेला जा सकता है। मूल्य ॥)

हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर-सीरीजकी नई पुस्तकें

स्वदेश—जगत्प्रसिद्ध कविसम्राट् डा० रवीन्द्रनाथ टागोरके ८ निबन्धोंका संग्रह। जो लोग असली भारतवर्षके दर्शन करना चाहते हैं, भारतके समाजतंत्र और राष्ट्रतंत्रका रहस्य समझना चाहते हैं, पूर्व और पश्चिमके भेदको हृदयंगम करना चाहते हैं और सच्चे स्वदेशसेवक बनना चाहते हैं उन्हें यह निबन्धावली अवश्य पढ़ना चाहिए। यह सीरीजकी आठवीं पुस्तक है। मूल्य दश आने।

चरित्रगठन और मनोबल—इसमें इस बातको बहुत अच्छी तरहसे बतला दिया है कि मनुष्य अपने चरित्रको जैसा चाहे वैसा बना सकता है। मानसिक विचारोंका चरित्र पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। सीरीजकी यह नवीं पुतक है। मूल्य तीन आने।

आत्मोद्धार—यह सीरीजका दशवाँ ग्रन्थ है। यह अमेरिकाकी नीग्रो (हबशी) जातिके नेता डा० बुकर टी. वाशिंगटनका आत्मचरित है। वाशिंगटन एक अतिशय दरिद्र गुलामकी झोपड़ीमें पैदा हुए थे। शिक्षाका कोई इन्तजाम न था। उनकी जातिका पशुओंके बराबर भी हक न था। ऐसे मनुष्यने अपनी उद्योगप्रियता, दृढविश्वास, अश्रान्त परिश्रम और परोपकार शीलतासे इस समय जो प्रतिष्ठा प्राप्त की है

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उसका इसमें सिलासिलेवार बड़ा ही मनोरंजक आकर्षक और शिक्षाप्रद वर्णन है । भारतवर्षके लिए यह पुस्तक कल्पवृक्षके तुल्य है। यह घर घर पढ़ी जाना चाहिए । कोई भी मनुष्य इसे बिना पढ़े न रहे । इससे जो जो शिक्षायें मिल सकती हैं उनका वर्णन नहीं हो सकता । मूल्य सादी जिल्दका १) पक्की जिल्दका १।) सवा रुपया। यह जैनहितैषीके उपहारमें भी दिया गया है ।

शान्तिकुटीर—यह सीरीजका ग्यारहवाँ ग्रन्थ हैं । यह बाबू अविनाशचन्द्रदास एम. ए. बी. एल. के बंगला ग्रन्थका अनुवाद है । अर्थात् 'प्रतिभा'के और इसके मूल लेखक एक ही हैं। जिन सज्जनोंने 'प्रतिभा'को पढ़ा है उनको इसकी उत्तमताका परिचय देनेकी ज़रूरत नहीं है। क्योंकि यह भी उसीके ढंगका सुन्दर, भावपूर्ण, पवित्र और शिक्षाप्रद है । इसमें भी प्रकृतिका बहुत ही अच्छा वर्णन है और सादा पवित्र और लोकहितकारी जीवन कैसा होता है यह बतलाया गया है। गार्हस्थ्यजीवनका इससे अच्छा, उन्नत और उदार आदर्श शायद ही और कहीं मिले । बालक—बालिका स्त्रीपुरुष सब ही इसे निःसंकोच होकर पढ सकते हैं । हिन्दीमें इस ढंगके उपन्यास बहुत ही कम हैं । मूल्य सादी जिल्दका ॥।) पक्की जिल्दका एक रुपया ।

बूढ़ेका ब्याह ।

एक सामाजिक काव्य है । एक १० वर्षकी लड़की और साठ वर्षके बूढ़ेके ब्याहकी कथाको लेकर इसकी रचना की गई है । रचना बहुत सुन्दर है । इसके लेखक हिन्दीके प्रसिद्ध कवि श्रीयुक्त सय्यद अमीर अली सा० हैं । साथमें पाँच सुन्दर चित्र दिये हैं । छपाई सफाई और आवरण पृष्ठको देखकर पाठक मुग्ध हो जावेंगे । मूल्य छह आना ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रेमप्रभाकर ।

रूसके प्रसिद्ध विद्वान् महार्षि टाल्सटायकी शिक्षाप्रद कहानियोंका हिन्दी अनुवाद । बालक, वृद्ध, युवा सबके पढ़ने लायक । मूल्य एक रुपया ।

शुश्रूषा ।

इन्दौरके नामी डाक्टर ताम्बेसाहबकी प्रसिद्ध पुस्तकका अनुवाद है । निरोगी रहनेके लिए और रोगियोंकी सेवा सिखानेके लिए यह पुस्तक बहुत अच्छी है । इसे पं० गिरिधर शर्माने लिखा है । मूल्य एक रुपया ।

कठिनाईमें विद्याभ्यास ।

बडी बड़ी कठिनाइयोंके रहते हुए भी जिनके हृदयमें विद्याके प्रति भक्ति होती है वे किस तरह विद्वान् बन जाते हैं, मोची, कुम्हार, खेतिहर बढ़ई, मल्लाहों जैसे नीच कुलोंमें भी जन्म लेकर दरिद्रताके दुःखोंमें पड़े रहकर भी उद्योगी पुरुष कैसे बड़े बड़े विद्वान बन गये हैं, अन्धों और पतितोंने भी अपनी विद्यावृद्धि किस तरह की है, इन सब बातोंके ऐतिहासिक उदाहरण इस पुस्तकमें दिये हुए हैं । पढ़कर तबियत फड़क उठती है । विद्याभिरुचि उत्पन्न करने—और उद्योगसे प्रेम करना सिखानेके लिए यह पुस्तक जादूका काम करती है । प्रत्येक भारतवासीके कानों तक इसके शब्द पहुँचना चाहिए । विद्यार्थियोंको तो अवश्य पढ़ना चाहिए । अँगरेजीमें इसकी लाखों प्रतिया बिक चुकी हैं । भाषा सुगम है । मूल्य ॥) पक्की जिल्दका दश आना ।

विद्यार्थीजीवनका उद्देश्य ।

एक छोटासा निबन्ध है । एक नामी विद्वान्के उर्दू निबन्धका अनुवाद है । अनुवादक बाबू दयाचन्द्रजी गोयलीय बी. ए. । विद्यार्थी मात्रको पढ़ना चाहिए । मूल्य एक आना ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दियातले अँधेरा ।

एक छोटीसी शिक्षाप्रद गल्प है । पढ़कर आप बहुत प्रसन्न होंगे और यदि आप अपनी स्त्रीको पढ़ानेमें लापरवाही करते होंगे तो चिन्तापूर्वक पढ़ाने लगेंगे । मूल्य डेढ़ आना ।

सदाचारी बालक ।

यह भी एक छोटीसी सुन्दर गल्प है । बालकों और विद्यार्थियोंके कामकी है । मूल्य डेढ़ आना ।

सामाजिक चित्र ।

इस गल्पमें एक उदारहृदय युवाके सुन्दर चरित्रका चित्र खींचा गया है । मूल्य एक आना ।

मनोहर सच्ची कहानियाँ ।

राजपूतानेके प्रसिद्ध प्रासिद्ध वीर पुरुषों और वीरबालाओंकी कहानियाँ फड़कती हुई भाषामें लिखी गई हैं । इसके लेखक पं० द्वारकाप्रसादजी चतुर्वेदी हैं । मूल्य आठ आना ।

कहानियोंकी पुस्तक ।

यह लाला मुशीलालजी एम. ए. की लिखी हुई है । इसमें छोटी छोटी सच्ची कहानियोंका संग्रह है जो कि बहुत ही शिक्षाप्रद हैं । विद्यार्थियोंके विशेष कामकी है । मूल्य पाँच आना ।

मैनेजर, **हिन्दीग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,**
हीराबाग, पो० गिरगाँव, बम्बई ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

-:राष्ट्रीय ग्रन्थः-

१ सरल-गीता । इस पुस्तकको पढ़कर अपना और अपने देशका कल्याण कीजिये । यह श्रीमद्भगवद्गीताका सरल-हिन्दी अनुवाद है । इसमें महाभारतका संक्षिप्त वृत्तान्त, मूल श्लोक, अनुवाद और उपसंहार ये चार मुख्य भाग हैं। सरस्वतीके सुविद्वान संपादक लिखते हैं कि यह 'पुस्तक दिव्य है ।' मूल्य ॥)

२ जयन्त । शेक्सपियरका इंग्लैंडमें इतना सम्मान है कि वहांके साहित्यप्रेमी अपना सर्वस्व उसके ग्रन्थोंपर न्योछावर करनेके लिए तैयार होते हैं। उसी शेक्सपियरके सर्वोत्तम 'हैम्लैट' नाटकका यह बड़ा ही सुन्दर अनुवाद है। मूल्य ॥=); सादी जिल्द ॥)

३ धर्मवीर गान्धी । इस पुस्तकको पढ़कर एक बार महात्मा गान्धीके दर्शन कीजिये, उनके जीवनकी दिव्यताका अनुभव कीजिये और द० अफ्रिकाका मानचित्र देखते हुए अपने भाइयोंके पराक्रम जानिये । यह अपूर्व पुस्तक है। मूल्य ।)

४ महाराष्ट्र-रहस्य । महाराष्ट्र जातिमें कैसे सारे भारतपर हिन्दू साम्राज्य स्थापित कर संसारको कंपा दिया इसका न्याय और वेदान्तसंगत ऐतिहासिक विवेचन इस पुस्तकमें है । परन्तु भाषा कुछ कठिन है। मूल्य-)॥

५ सामान्य-नीतिकाव्य । सामाजिक रीतिनीतिपर यह एक अनूठा काव्य ग्रन्थ है। सब सामयिक पत्रोंने इसकी प्रशंसा की है । मूल्य =)

इन पुस्तकोंके अतिरिक्त हम हिन्दीकी चुनी हुई उत्तम पुस्तकें भी अपने यहाँ विक्रयार्थ रखते हैं ।

नवनीत-मासिक पत्र । राष्ट्रीय विचार । वा० मूल्य २)

यह अपने ढंगका निराला मासिक पत्र है । हिन्द देश, जाति और धर्म इस पत्रके उपास्य देव हैं। आत्मिक उन्नति इसका ध्येय है । इतना परिचय पर्याप्त न हो तो ।-) के टिकट भेजकर एक नमूनेकी कापी मंगा लीजिये ।

ग्रन्थप्रकाशक समिति, नवनीत पुस्तकालय.
पत्थरगली, काशी.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

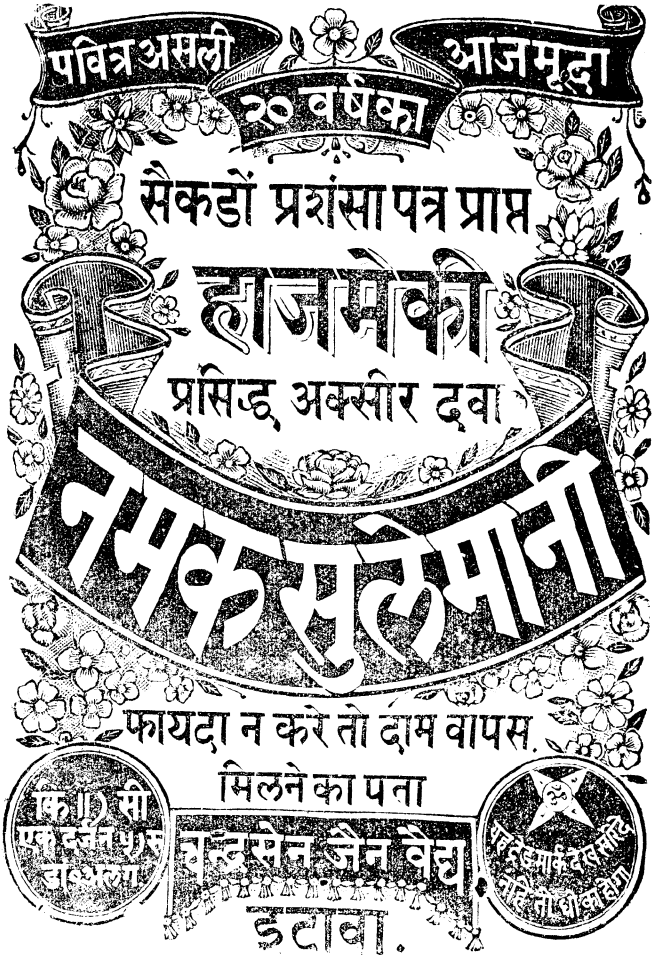

दद्रुदमन—दादकी अकसीर दवा फी डबी ।)
दन्तकुमार—दांतोंकी रामबाण दवा । डबी ।)
नोट—सब रोगोंकी तत्काल गुण दिखानेवाली दवाओंकी बड़ी सूची

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चित्रशाला स्टीम प्रेस, पूना सिटिकी अनोखी पुस्तकें ।

चित्रमयजगत्–यह अपने ढंगका अद्वितीय सचित्र मासिकपत्र है । "इलेस्ट्रेटेड लंडन न्यूज" के ढंग पर बड़े साइजमें निकलता है । एक एक पृष्ठमें कई कई चित्र होते हैं । चित्रोंके अनुसार लेख भी विविध विषयके रहते हैं । साल भरकी १२ कापियोंको एकमें बंधा लेनेसे कोई ४००, ५०० चित्रोंका मनोहर अलबम बन जाता है । जनवरी १९१३ से इसमें विशेष उन्नति की गई है । रंगीन चित्र भी इसमें रहते हैं । आर्टपेपरके संस्करणका वार्षिक मूल्य ५॥) डॉ० व्य० सहित और एक संख्याका मूल्य ॥) आना है । साधारण कागजका वा० मू० ३॥) और एक संख्याका ।≈) है ।

राजा रविवर्माके प्रसिद्ध चित्र–राजा साहबके चित्र संसारभरमें नाम पा चुके हैं । उन्हीं चित्रोंको अब हमने सबके सुभीतेके लिये आर्ट पेपरपर पुस्तकाकार प्रकाशित कर दिया है । इस पुस्तकमें ८८ चित्र मय विवरणके हैं । राजा साहबका सचित्र चरित्र भी है । टाइटल पेज एक प्रसिद्ध रंगीन चित्रसे सुशोभित है । मूल्य है सिर्फ १) रु० ।

चित्रमय जापान–घर बैठे जापानकी सैर । इस पुस्तकमें जापानके सृष्टिसौंदर्य्य, रीतिरवाज, खानपान, नृत्य, गायनवादन, व्यवसाय, धर्मविषयक और राजकीय, इत्यादि विषयोंके ८४ चित्र, संक्षिप्त विवरण सहित हैं । पुस्तक अव्वल नम्बरके आर्ट पेपर पर छपी है । मूल्य एक रुपया ।

सचित्र अक्षरबोध–छोटे २ बच्चोंको वर्णपरिचय करानेमें यह पुस्तक बहुत नाम पा चुकी है । अक्षरोंके साथ साथ प्रत्येक अक्षरको बतानेवाली, उसी अक्षरके आदिवाली वस्तुका रंगीन चित्र भी दिया है । पुस्तकका आकार बड़ा है । जिससे चित्र और अक्षर सब सुशोभित देख पड़ते हैं । मूल्य छह आना ।

वर्णमालाके रंगीन ताश–ताशोंके खेलके साथ साथ बच्चोंके वर्णपरिचय करानेके लिये हमने ताश निकाले हैं । सब ताशोंमें अक्षरोंके साथ रंगीन चित्र और खेलनेके चिन्ह भी हैं । अवश्य देखिये : फी सेट चार आने ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सचित्र अक्षररलिपि–यह पुस्तक भी उपर्युक्त "सचित्र अक्षरबोध" के ढंगकी है। इसमें बाराखडी और छोटे छोटे शब्द भी दिये हैं। वस्तुचित्र सब रंगीन हैं। आकार उक्त पुस्तकसे छोटा है। इसीसे इसका मूल्य दो आने हैं।

सस्ते रंगीन चित्र—श्रीदत्तात्रय, श्रीगणपति, रामपंचायतन, भरतभेट हनुमान, शिवपंचायतन, सरस्वती, लक्ष्मी, मुरलीधर, विष्णु, लक्ष्मी, गोपीचन्द, अहिल्या, शकुन्तला, मेनका, तिलोत्तमा, रामवनवास, गजेंद्रमोक्ष, हरिहर भेट, मार्कण्डेय, रम्भा, मानिनी, रामधनुर्विद्याशिक्षण, अहिल्योद्धार, विश्वामित्र मेनका, गायत्री, मनोरमा, मालती, दमयन्ती और हंस, शेषशायी, दमयन्ती इत्यादिके सुन्दर रंगीन चित्र। आकार ७×५, मूल्य प्रति चित्र एक पैसा।

श्री सयाजीराव गायकवाड बड़ोदा, महाराज पंचम जार्ज और महारानी मेरी कृष्णशिष्टाई, स्वर्गीय महाराज सप्तम एडवर्डके रंगीन चित्र, आकार ८×१० मूल्य प्रति संख्या एक आना।

लिथोके बढियाँ रंगीन चित्र—गायत्री, प्रातःसन्ध्या, मध्याह्न सन्ध्या सायंसन्ध्या प्रत्येक चित्र।) और चारों मिलकर ॥) नानक पंथके दस गुरू स्वामी दयानन्द सरस्वती, शिवपंचायतन, रामपंचायतन, महाराज जार्ज, महारानी मेरी। आकार १६ × २० मूल्य प्रति चित्र।) आने।

अन्य सामान्य—इसके सिवाय सचित्र कार्ड, रंगीन और सादे, स्वदेशी बटन, स्वदेशी दियासलाई, स्वदेशी चाकू, ऐतिहासिक रंगीन खेलनेके ताश आधुनिक देशभक्त, ऐतिहासिक राजा महाराजा, बादशाह, सरदार, अंग्रेज राजकर्ता, गवर्नर जनरल इत्यादिके सादे चित्र उचित और सस्ते मूल्य पर मिलते हैं। स्कूलोंमें किंडरगार्डन रीतिसे शिक्षा देनेके लिये जानवरों आदिके चित्र सब प्रकारके रंगीन नकशे, ड्राईंगका सामान, भी योग्य मूल्यपर मिलता है इस पतेपर पत्रव्यवहार कीजिये।

मैनेजर चित्रशाला प्रेस,
पूना सिटी।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

श्रीपरमात्मने नमः ।

रिपोर्ट

भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनीसंस्थाकी

वी.नि.सं. २४३९ से २४४० की दीवालीतक ।

जिसको

पन्नालाल बाकलीवाल

मंत्री-भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनीसंस्था काशीने

बनारसके

चंद्रप्रभाप्रेसमें बाबू-गौरीशंकरलालके प्रबंधसे छपाया ।

वीरनिर्वाण संवत् २४४१ इस्वी सन् १९१५ ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जैनप्रेसकी आवश्यकता।

यहां बनारसमें कोई प्रेस ५-६ फारमसे जियादा काम नहिं देता संस्कृतका काम बड़ा ही कठिन है ५-६ बार प्रूफ देखे विना ग्रंथ शुद्ध नहिं हो सकते। यहांके प्रेस ४ बारसे जियादा शुद्ध करनेको प्रूफ नहिं देते। सो भी सामको प्रूफ देते हैं सवेरे ही ८ बजे ८ पेज शुद्धहुयें चाहते हैं। हमारे संपादक सब उच्च कक्षाके विद्यार्थी हैं विद्यार्थियों को पढने घोकनेका प्रातःकाल ही उत्तम समय है। इसलिये रात्रिके ही निद्रा छोड़ शोधना पड़ता है। दिनभरकी कड़ी पढ़ाईसे मगज खाली होजाता है ऐसी अवस्थामें इन प्राचीन महान् ग्रंथाकों संशोधन ठीक होना अत्यंत कष्टसाध्य है। यदि घरका प्रेस हो तौ ४ बारकी जगह ८ बार प्रूफ देख सकते हैं। रातको सवेरे न देखकर दुपहरको अच्छे मग्जसे निराकुलतासे देखकर बहुत ही शुद्ध ग्रंथ छपा सकते हैं। इसके सिवाय जो काम दूसरोंके प्रेसमें ३०००) रुपये देनेपर छपता है वह घरके प्रेसमें २०००) में ही छप जायगा। दूसरेके प्रेसमें कभी २ स्याही घटिया लगा देते हैं जल्दी जल्दी छापकर खराब छपाई कर देते हैं, घरके प्रेसमें अच्छे कारीगर रखकर धीरें २ निर्णयसागरप्रेसकी छपाईसे भी बढ़िया छपाई करके सुंदर मनोरंजक ग्रंथ निकाल सकते हैं। इसलिये यदि कोई महाशय इस संस्थाको कमसे कम २०००) रुपयेका दान व सहायता करैं तौ संस्थाका काम बहुत ही उत्तमतासे स्थायी चल सकता है। यदि कोई महाशय दान नहिं कर सकैं तौ २०००) रुपया ।।) या ।।।) सैकड़ेके व्याजपर ही दें। यदि रकम जानेका डर हो तौ वे प्रेस, वगैरह सब सामान बतौर गिरवीके रख सकते हैं। आशा है कि चैत्रतक कोई महाशय इस प्रार्थना पर भी ध्यान देकर हमे सहायताकी स्वीकारता भेजैंगे।

प्रार्थी—पन्नालाल बाकलीवाल,

ठि—मदागिन जैनमंदिर पोष्ट-बनारस सिटी।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

श्रीवीतरागाय नमः ।

भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनीसंस्थाकाशीकी द्विवार्षिक-रिपोर्ट ।

वी. नि. सं. २४३९ से २४४० की दीवाली तक ।

संस्थाकी उत्पत्तिके कारण ।

पाठकमहाशय मैं बंबईके निवास तथा रोजगारसे विरक्त होकर किसी तीर्थस्थानमें रहकर किसी भी धार्मिक संस्थाकी सेवा करके शेषजीवन बितानेकी इच्छासे निकला था, फिरते घूमते शेषमें जब हस्तिनापुरके नवीन स्थापित ऋषभब्रह्मचर्याश्रममें चार महीने निवास किया तो वहीं पर बंगला अखवारोंके पढनेसे विचार हुआ कि— "इस समय बंग देशमें साहित्यकी उन्नति व नवीन विषयकी खोज में विद्वानोंकी बड़ी भारी उत्कंठा है । यदि वहांपर बंगभाषामें कुछ जैनग्रंथ प्रकाशित करके जैनधर्मका परिचय कराया जाय तो चिरकालसे मत्स्यमांसभोजी कालीभक्त बंगाली विद्वानोंके हृदय में अहिंसाधर्मका प्रकाश वा प्रभाव अवश्य ही पड़ सकता है" ऐसा विचार होनेपर बंगभाषाके साहित्यसे अनभिज्ञ होतेहुये भी मैंने वहीं पर 'जैनधर्मका परिचय' और 'जैनसिद्धांतप्रवेशिका' नामकी दो पुस्तकोंका बंगानुवाद कर डाला और अपने एक प्राचीन मित्र बंगाली विद्वान् से भाषाका संशोधन कराकर प्रेसकापी भी तैयार कराकर मगाली परंतु छपानेकेलिये द्रव्य व बंगला प्रेसका प्रबंध वहां जंगलमें होना असंभव था । तब विचार किया गया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कि–इनका मुद्रणकार्य व प्रचार कलकत्ता रहनेसे हो सकता है परंतु कलकत्तेमें अनेक छापेके विरोधी भाइयोंका निवास विशेष देख वहां जानेका साहस न हुवा तब तीर्थस्थान, और अपने प्रयत्नसे स्थापित स्याद्वादपाठशालाके सुधार करनेकी भी इच्छा रखकर काशीमें ही रहना स्थिर कर लिया और यहींपर आकर श्रीयुत बाबू नंदकिशोरजी व देवेंद्रप्रसादजीसे मिलकर उन्हींको सभापति मंत्री आदि बना कर 'वंगीयसार्वधर्मपरिषत्' नामकी एक संस्था स्थापन करके यथाशक्य परिश्रम करने लगा और श्रेष्ठिवर्य नाथारंगजी गांधीकी विशेष उदारतासे उत्साहके साथ कार्य प्रारंभ हो गया। परंतु अचिरकालमें ही उक्त महाशयोंका विशेष परिचय मिलनेसे और हमारे स्वभावसे सर्वथा विरुद्धप्रकृति पानेसे लाचार होकर उक्त परिषदसे सर्वथा ही संबंध छोडदेना पडा और अपने उद्देश्यकी सिद्धि केलिये 'श्रीजैनधर्मप्रचारिणीसभा काशी' नामकी एक नवीन संस्था स्थापन करना पडी और श्रीमान् श्रेष्ठिवर्य गांधी नेमिचंद बहालचंदजी वकील उस्मानाबाद निवासीकी विशेष द्रव्यसहायता होने से सांख्य, न्याय वेदांतके ज्ञाता अजैन विद्वानोंमें अहिंसा धर्म वा अनेकांत जैनसिद्धांतोंका प्रकाश करनेकेलिये तो "**सतातनजैनग्रंथमाला**" का प्रारंभ किया गया और सर्वसाधारण अजैनोंमें वा बंगदेश में जैनधर्मका प्रचार करनेकी इच्छासे हमारे प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद गुरुवर्य पं. चुन्नीलालजी मुरादाबाद निवासीके नामस्मरणार्थ '**चुन्नीलालजैनग्रंथमाला**' और बंगलाके पेपरोंमें जैनधर्म संबंधी लेख प्रकाशित करनेमें प्रयत्न करना प्रारंभ किया गया। परंतु विरोधियोंकी तरफसे हमारे कार्यसाधनमें ऐसे २ विरोध पदपद पर खडे किये गये जिनका कुछ भी जवाब न देकर यथाशक्ति कार्य करनेमें ही ध्यान लगाया गया। तथापि इस विरोधके कारण हमारे ग्रंथप्रकाशनकार्यमें परमसहायक दानवीर श्रेष्ठिवर्य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नाथारंगजी गांधीवालोंके साथ भी ऐसा विरोध हो गया कि उन से सहायता मिलना तो दूर रहा पत्रव्यवहारतक बंद हो गया और उनके द्रव्यसे उनके नामसे जैनेंद्रव्याकरणादिका पूरा पूरा उद्धार होनेका कार्य चलते चलते ही बंद हो गया तथा इस धर्म कार्यके परमसहायक श्रीयुत पंडित लालारामजी थे, उनकोभी आदि-पुराणजीके बडे भारी कार्यसहित बनारस छोडकर कोल्हापुर चले जाना पडा और २० वर्षसे गणेशप्रसाद न्यायाचार्यके साथ अत्यंतप्रीतिमय गुरुशिष्यभाव था वह भी नष्ट होगया। इत्यादि अनेक कारणोंसे सभाके समस्त उद्देश्योंकी पूर्ति करनेमें असमर्थ होनेसे लाचार होकर गतवर्ष स्याद्वादमहाविद्यालयके उत्सवके समय अनेक महाशयोंकी संमतिसे ग्रंथप्रकाशनमात्रका एक ही उद्देश्य रखकर संस्थाका नाम बदलकर **'भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनी-संस्था'** रखना पडा। इसके शिवाय इस धार्मिक संस्थाकी उत्पत्तिके दो प्रधान कारण और भी हैं-एक तो स्याद्वादमहाविद्यालयमें पढाई का उचित प्रबंध न होने आदिके ९३ कारणोंसे होनहार ७ विद्यार्थियोंका अलग होकर विद्याध्ययनका सहारा न होना, दूसरे कलकत्ता संस्कृतयूनिवर्सिटीमें श्वेतांबरी जैनग्रंथोंकी तरह दिगंबरी ग्रंथ भी मुद्रण कराकर भरती करानेकी प्रबल इच्छाका होना। इन ही कारणोंसे इस संस्थाका प्रादुरभाव हुवा है और मुख्यतासे संस्कृत ग्रंथ और गौणतासे हिंदीबंगलामें जैनग्रंथ प्रकाशकर अजैन विद्वानोंमें जिनधर्म की प्रभावना करनेका ही एकमात्र उद्देश्य निश्चित किया गया।

कार्यारंभका विचारविभ्रम और अंत।

पाठक महाशय! उक्त उद्देश्यके साधनार्थ कार्य प्रारंभ करने का विचार तो कर लिया गया परंतु इस कार्यकी गुरुतापर विचार करनेसे हमारे सब विचार प्रायः हवा हो गये क्योंकि इसमें अत्यंत

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिश्रमके अतिरिक्त द्रव्यकी बड़ी भारी आवश्यकता दीखने लगी। सनातनजैनग्रंथमालाका १० फारमका एक अंक छपाकर तैयार करनेका हिसाब लगाया गया तौ माळूम हुवा कि कमसे कम ८) रु० फारम तौ उत्तम छपाईका और ८) ही रुपये ५० पौंडके कागजका ५) या ६) रुपये प्रत्येक फारमका संपादकीय व्यय (लिखाई सुधाई वगेरह) इस प्रकार २१) २२) रुपया एक फारमके अंदाज खर्च होनेसे १० फारमके अंककी छपाई मयटाइटलपेजके अनुमान २३०) रुपये खर्च पड़ेंगे इसके सिवाय एक मकान या गुदाम चाहिये एक सिपाही प्रूफ पहुंचानेवाला डॉक लेजानेवाला तथा मकानकी सफाई, तेलबत्ती, इस्तहार, बारदाना, चिट्ठीलिफाफा, पुस्तकें रखने वगेरहको फर्नीचर बनवाने वगेरहके अनेक खर्च सूझने लगे। करीब करीब तीनसौ रुपये महीनेके खर्चसे कम खर्च नहीं पड़ैगा, ऐसा निश्चय होनेपर हमारे विचार फिर उडने लगे तब खर्च कम करनेका विचार किया गया तौ छपाई कम देनें, कागज पतले घटिया लगाने, सुधाई कम देनेका खर्च तौ किसी प्रकार भी कम नहीं करसके। तब फुटकर खर्चकी कमी करनेका प्रयत्न किया गया जब उसमें भी कमी नहिं हो सकी तब श्रीयुत पंडित लालारामजीके स्याद्वादरत्नाकरकार्यालयका बड़ा भारी सहारा मिल गया, अर्थात् मकानभाड़ा, तेलबत्ती, कागज सुतली, आदमी, फर्नीचर वगेरह कुछ भी जुदे नहिं करना इसीमें सब चलाते रहना, जब आमदनी हो, स्टाक बढ़जाय तब मकान आदिके भाड़ेकी फिकर करना, तब ऐसा ही हुवा ७) रुपये महीने का मकान भाड़ा वगेरहका प्राय कुल खर्च १२ महीने तक स्याद्वादरत्नाकरकार्यालयमेंसे ही बराबर होता रहा। इसप्रकार फुटकर खर्चका हिसाब बिठाकर शेष छपाई वगेरहका कुल खर्च २५०) के अनुमान समझा गया। तदनंतर जब आमदनीका हिसाब लगाया गया तौ ऐसा विचार उत्पन्न हुवा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कि जब यह धार्मिक संस्था है, इसका लाभ नुक्सान इसी का है और हमलोग इसकी निःस्वार्थ सेवा करेंगे तो हमारे दानवीर धनाढ्य गण इस कार्यको समस्त धर्मकार्योंकी एकमात्र जड़ अत्यंत उपयोगी समझ कर क्यों न सहायता करेंगे ? अवश्य ही करेंगे। परंतु जब धनाढ्य महाशयोंकी पूर्वकालकी स्थितिपर विचार किया गया तो धनाढ्य महाशयोंसे धनाशा रखनेवाली महाविद्यालय, बंबई जैन विद्यालय, स्याद्वादशपाठशाला, मोरेनाविद्यालय परीक्षालय आदि धर्मसंस्थायें अबतक धनाभावके अंधकूपमें दुर्दशागस्त पड़ीहुई पाई गई ? ऐसी दशामें वे इस संस्थापर क्यों विचार करने लगे ? इसके सिवाय छापेके विरोधीकंटक भी रास्तेमें जहांतहां विघ्नविनायक बननेकेलिये तत्पर खडे हुये हैं ? तब धनाढ्यमहाशयोंसे सहायता मिलेगी ऐसी आशापर तो कार्यप्रारंभ करना सर्वथा खामखयाली है। तब दूसरा विचार हुवा कि धनपात्रोंसे भारी आशा न रखकर थोड़ी २ आशा करके सबसे सौसौ रुपयोंकी सहायता लेना और उन रुपयोंके बदलेमें उनको शास्त्रदान करनेकेलिये प्रत्येक अंककी पंद्रह १ प्रति (१८०) रुपयोंके शास्त्र) भेजदेनेसे सायद वे लोग सौसौ रुपयोंके दानीग्राहक खुशीके साथ हो जांयगे, तब संभव है कि इतनी बड़ी भारी धनिक जैनसमाजमेंसे ऐसे२ कमसे कम२५ महाशय तो अवश्य ही मिल जांयगे। इसप्रकारका विचार निश्चय होनेपर हमने एकप्रार्थना पत्र छपाकर जितने ठिकाने नाम धनाढ्य महाशयोंके मिले सबके पास भेज दिये। एकबार सायद खयालमें न आवे, दूसरीबार भेजेगये फिर अनेक महाशयोंके पास तीसरी बार भी भेजेगये परंतु सिवाय ४ महाशयोंके अन्य किसीका भी एककार्डद्वारा हां नां का जबाबतक न मिला उन चारमें सबसे प्रथम तो- छपरानिवासी श्रीमान् बाबू-रामेश्वरलाल जीजैनी रईस हैं जिनोंने पहिलापत्र पहुंचने ही सहर्ष १००) रुपये देकर दानीग्राहक बनना स्वीकार किया। दूसरे महाशय श्रीमान् लाला

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बद्रीप्रसादजी महावीरप्रसादजी वकील विजनौर निवासी हैं। इन्होंने भी १००) रुपये देकर दानीग्राहक बनना स्वीकार किया–तीसरे महाशय शोलापुरनिवासी शेठ हीराचंद अमीचंदजी शाह हैं जिन्होंने २४ ग्राहक और हो जांय तौ २५ वाँ मुझे समझना ऐसा लिखा। चौथे महाशय बमराना वा ललितपुर निवासी सेठ लक्ष्मीचंदजी साहब हैं जिन्होंने लिखा कि १००) रुपयोंका दानी ग्राहक तौ मैं नहिं बनता किंतु ८) रुपयोंका ग्राहक बनता हूं। जब धनाढ्य महाशयोंकी ऐसी धर्मप्रीति वा जिनवाणी जीर्णोद्धारमें अत्यंतप्रीति देखीगई तब एकदम हताशहोना पडा, दो दिन दोरात इसी विचारमें मग्न रहा कि अब क्या करना चाहिये ? तब स्मरणआनेपर पद्मनंदिपचीसी आदि शास्त्रोंके प्रकाशक दानवीर श्रेष्ठिवर्य नेमिचंद बहालचंदजी वकीलकी सेवामें वही प्रार्थनापत्र भेजकर एकांत प्रार्थना की गई कि–"कमसे कम यदि दोहजारकी द्रव्यसहायता मिल जाय तौ हम १२ महीनेतक इसीसहायतापर ही १२ अंक निकाल देंगे–तब अनेक धनाढ्यमहाशय हमारे परिश्रमपर खयालकरके सहायता देने लग जांयगे अगर किसीने नहीं भी दी तौ तबतक हम इस्तहारों और अपीलोंसे आठ २ रुपये देनेवाले कमसे कम २०० ग्राहक और सौ सौ रुपयोंके ८–१० दानीग्राहक बना लेंगे और आगेकेलिय काम चल जायगा। इसप्रकारका प्रार्थनापत्र भेजनेपर हर्ष है कि–उक्तमहाशयने तत्काल ही दोहजार रुपये देनेकी स्वीकारताका पत्र भेजकर हमारे उत्साह को कार्यमें परिणत करा दिया। उस पत्रकी अक्षरशः नकल भी हम यहाँ देदेना उचित समझते हैं—यथा—

ता० २ जुलै सनू १९१२ ईसवी

"बाद जयजिनेंद्रके विशेष आपका पत्र नंबर ९७३ मु० २१–६–१२का पोहंचा० इसमें शंका नहीं के जिनवाणीके उद्धारार्थ आप बहोत प्रयत्न करते हैं आपके पत्रसे यह मालूम हुवाके दो हजार

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रुपये आपको दिये जायें तौ आप काम शुरू करदेनेपर तयार हैं हम इस वक्त एकहजार और सात आठ महीने बाद एक हजार ऐसें दोहजार रुपये आपको दे देते हैं। आप काम शुरू कर दीजिये लेकिन शरायत यह होंगे—

१-ग्रंथ छपनेबाद बेचकर उससे जो रुपया वसूल होता जायगा वह हमको भेजते जाइये तौ हम फिर उस रुपयेको इसीकाम में लगावेंगे।

२-ग्रंथपर बालचंद कस्तूरचंद धागाशि वाले (हमारेपिताजी) का नाम मुद्रित होना चाहिये क्योंकि उनके स्मारकफंडसे यह रकम दी जायगी।

इस वक्त जो एकहजार रुपया भेज देना है उसके बाबत बंबई की हुंडवी यहांसे आप जिस पतेपर कहो भेज देताहूं। काम शुरू होनेके बाद बाकी रुपया भी ऊपर लिखे मूजब भेजदूंगा।

उत्तराभिलाषी—

नेमचंद बालचंद वकील उस्मानाबाद।

वश फिर क्या था हमने भी सहर्ष उपर्युक्त दोनों शर्तें स्वीकार करके हुंडियोंसे रुपये मगा २ कर काम छपाना सुरू कर दिया। और सवासौ कापी तौ जर्मन, लंदन, कलकत्ता, आदिके अजैनविद्वानों पत्रसंपादकोंके समीप और लाइब्रेरियोंमें विनामूल्य भेजना सुरू करदिया और करीब १०० प्रतियें जैनीमहाशयोंको मूल्यप्राप्ति की इच्छासे भेजना सुरू किया परंतु अनेकमहाशयोंने तौ पहुंचतक नहीं लिखी, अनेक धनाढ्यमहाशयोंको जब वी. पी. किया गया तो वापिस कर दिया और अनेकमहाशयोंको कई पत्र दिये तौ कुछ भी जवाब नहिं आया तब उन्हें भेजना ही बंद कर दिया। इसके सिवाय विज्ञापन, प्रार्थना, अपीलें जैनमित्र जैनहितैषी दिगंबरजैन आदिमें बहुत कुछ छपायीं परंतु दो बर्षके साल खतमतक कुल ७७ ग्राहक आठ २ रुपये देनेवाले और तीन महाशय सौ सौ रुपये देनेवाले दानी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ग्राहक बना पाये। उक्त दो हजार रुपये तो आठही अंकोंतक खतम हो गये परंतु ग्राहकोंकी आमदनीसे काम धीरें २ चलता रहा जिससे एकवर्षका कामदो वर्षमें कर पाये। इसदेरीका दूसरा कारण यह भी है कि एक तो यहांका कोई भी प्रेस इसग्रंथमालाके १० फारम एक महीनेमें नहिं दे सकता क्योंकि प्रूफ चार २ बार देखना पडता है बारीक टाइप में होनेसे प्रेसवाले रोजकी रोज प्रूफ सशोधन कर वापिस नहिं भेज सकते थे। दूसरे इसके संपादकगण बनारस कलकत्ता बंबईकी तीन तीन परीक्षावोंके ग्रंथ पढते तथा और २ विद्यार्थियोंको पढाने वगैरह में अहोरात्र लगे रहते हैं तथा ये सब ग्रंथ गुरुमुखसे अपठित व कर्णाट की लिपीमें होनेसे इनका संशोधन संपादन करना बहुत ही मनोनिवेशपूर्वक उत्कटपरिश्रमसाध्य कार्य हैं सो ठीक समयपर प्रूफ नहिं दे सकते थे तथा मेरे पावोंमें झंझनीवातका उत्कट रोग होजानेके कारण मैं तीनबार मोरादाबाद नगीना बिजनौर इलाज करानेको गया, तीन महीने कोल्हापुर और एक महीना नागौरको चलागया था जिससे मेरे पीछे जैसा चाहिये वैसा शीघ्रतासे काम नहिं चला। इसके सिवाय कागज बढिया बाजारमें न मिलनेसे मेरे पीछे कागजके अभावसे भी बहुतकुछ समय व्यर्थ चला गया इत्यादि अनेक विघ्न इसकार्यके संपादन करनेमें विलंबके कारण हो गये।

इसप्रकार बडे कष्टसे काम चलाया गया, इतनेहीमें सब रुपये लग गये। कागजदेनेवाली कंपनीका कर्ज होगया तब लाचार होकर काम बंदकर देनेकी सूचना छपाई गई और कई शेठोंसे पत्रव्यवहार भी किया गया तो—जैनेंद्रप्राक्रिया पूर्ण करानेके लिये तो १००) रुपये शोलापुर निवासी शेठ रावजी सखारामजी दोशीने भेजे और ५००) रुपये राजवार्त्तिकजी पूर्णकरानेकेलिये शोलापूर निवासी श्रेष्ठिवर्य हीराचंद नेमिचंदजी दोशी आनरेरी मजिष्ट्रेट महाशयने बदलेमें पुस्तके लेलेनेके वायदेपर भेजे और ५००) इंदौर निवासी दानवीर

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शेठ कस्तूरचंदजी महाशयने एक मुस्त दान करके भेजे । इनमेंसे शेठहीराचदजीके ५००) रुपये तौ वापिस भेजदेनेको लिखा गया और ३००) भेज भी दियेगये क्योंकि उससमय हमें कलकत्ता यूनिवर्सिटी में भरतीहुये जैनेंद्रशाकटायन व्याकरणको परीक्षातक पूर्णकरनेकी शीघ्रता थी, राजवार्त्तिकजी परीक्षामें नहीं था इसकारण इसका काम पहिले चलाना इष्ट नहीं था । और शेष रुपये जैनेंद्रप्रक्रिया, शब्दार्णवचंद्रिका और शाकटायनके अंक छपानेमें लगाये गये । परंतु प्रेस तीसरा न मिलनेसे तथा आगेको रुपये खुट जानेपर फिर दूसरी सहायताकी उम्मेद न रहनेके कारण वर्तमानवर्षमें शाकटायनकी चिंतामणि टीका तौ चौथाई छपाकर एकदम बंदकरदिया उसकी जगह राजवार्त्तिकजी और शब्दार्णवचंद्रिका ही छपाना जारी रखा परंतु रुपया जा आया था सब कर्जचुकाने वगेरहमें पूरा होगया तब लाचार होकर पुरानेग्राहकोंको ११ वां १२ वां अंक नये नियमोंके अनुसार दशकी जगह आठ२ रुपये ही अगले शालके पेशगी लेनेकी इच्छासे सबको वी.पी. से भेज गये जिसकी मुद्रित सूचना पहिले दे चुकेथे उसमें प्रार्थना कर दीगई थी कि अगले दोनोंअंक आठ २ रुपयोंके वी.पी. से भेजेंगे जिनको ग्राहक न रहना हो एककार्डद्वारा सूचना देदें जिससे संस्था के चार २ आने व्यर्थ नष्ट न हों परंतु दोचारके सिवाय किसीने भी सूचना नहीं दी, लाचार 'तूष्णं अर्धसम्मति' का अवलंबनकर सबको वी.पी. कियेगये परंतु खेद है कि-कुल ४२ ही महाशयोंने आगामी वर्षमें ग्राहक रहकर शेषमहाशयोंने राजवार्त्तिकादि ग्रंथपूर्ण न लेना चाहा और सबने वी.पी, लोटा दिये । जब हमारे बडे २ धनाढ्य गण व पढे लिखे वकील विद्वान् भी इसप्रकारके जिनवाणी भक्त व जैन धर्मके प्रचारक हैं तब इस ग्रंथमालाका चलना कठिन ही नहीं किंतु असंभव है। तथापि हमे फिर भी इसके ग्राहक वा सहायक बढाकर-इसके चलानेकी प्रबल इच्छा है इसकारण यह रिपोर्ट इस संस्थाकी असली

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

हालत दिखानेकी इच्छासेही प्रगटकी है सो जो कोई महाशय इससंस्था वा दोनों ग्रंथमालाओंके जीवन रखनेसे यदि कुछ भी लाभ समझते हों तौ बिनाविलंब विद्वान् महाशय तौ अपने २ प्रांतमें उपदेश देकर मंदिरजीके भंडारको, पाठशालाको, पुस्तकालयको, साधारण ग्राहक बनावें और धनाढ्यमहाशयोंको दानीग्राहक बनाकर १००) सौ सौ रुपये प्रथमवर्षके १२ अंकोंके और १००) वर्त्तमान वर्षके १२ अंकोंके भिजवाकर १२ अंकोंकी १८० प्रति मगादेवें । तथा जो धनाढ्य दानवीर हैं अपना नाम वा शास्त्रदानका पुण्यसंचय करना चाहते हैं, वे-अपने पिता वगैरहके नामस्मणार्थ एकएक ग्रंथ छपानेके लिये २००) ४००) ५००) या जितना वे चाहें एकएक रकम भेज कर यश वा पुण्यसंचय करें । जबतक दशदशरुपयोंके २०० ग्राहक और सौसौरुपयोंके १०-१५ दानीग्राहक न होंगे तबतक हम आगेको यह काम नहिं चलावेंगे हमने जैनहितैषी आदि पत्रोंमें भी नये नियमोंके इस्तहार दिये हैं और यह रिपोर्ट वा अपील भी आप महाशयोंकी सेवामें भेजी जाती है। यदि चैतसुदी १५तक साधारण २०० ग्राहकोंके बननेकी वा दानीमहाशयोंसे काफी द्रव्यकी स्वीकारता न आजायगी तबतक हम इसग्रंथमालाको सर्वथा बंद रखते हैं। अतएव अभी कोईभाई रुपया न भेजें सिर्फ ग्राहक होनेकी वा ग्रंथछपानेकी द्रव्यस्वीकारता मात्र भेजें जब चैत्रसुदी १५ को हम देखलेंगे कि ग्रंथमाला चलानेलायक ग्राहक वा सहायता आगई है तब तो हम फिर नये उत्साह नये परिश्रम वा नये ढंगसे इस कामको सुरू कर देंगे। यदि ग्रंथमाला चलानेलायक ग्राहक वा पूरी सहायता न आई तौ वैसाखसुदी १५ तक ४२ ग्राहकोंके रुपये लोटाकर तथा कर्जदारों को पुस्तकें वगैरह देकर शेष रिपोर्ट निकालकर सनातनजैनग्रंथमाला सर्वथा बंद करदेंगे ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चुन्नीलालजैनग्रंथमाला ।

पाठक महाशय ! इसग्रंथमालाद्वारा हिंदी, मराठी, गुजराती, बंगला, अंगरेजी इन सब ही भाषाओंमें जैनधर्मसंबंधी नये ढंगके ट्रैक्ट पुस्तकें छपा २ कर अजैनोंमें विनामूल्य वा स्वल्पमूल्यसे प्रचार करनेका उद्देश्य था परंतु विशेष सहायता न मिलनेसे महावीरस्वामीका ऐतिहासिक चरित्रआदि कोई भी बडा ग्रंथ प्रकाशित नहिं कर सके और न ट्रैक्टें ही १०—२० प्रकाशित कर सके। दो वर्षमें कुल २००) रुपयोंकी ६ ट्रैक्टें करीब १६००० के वितरण कर सके। यदि अनेक महाशय एक एक ग्रंथ सौ सौ दोदोसौ रुपयोंकी लागतके अपने पितामाता आदिके नामस्मरणार्थ छपानेकी सहायता देते तौ हम बहुतकुछ प्रचार कर सकते थे, जिससे तमाम अजैन बंगला मासिकपत्रोंमें जैनधर्मकी चर्चा छपने लगती, अनेक बंगाली-विद्वान् जैनधर्मकी आलोचनामें लग जाते, भाषाग्रंथ कुछ जैनियोंमें बिक जानेसे आगको या सनातनजैनग्रंथमालाको भी सहायता मिल-जाना संभव था परंतु आप महाशयोंके विचार वैचित्र्यसे इस विशेष उपकारीकार्यमें भी सहायता नहिं मिली और हम कुछ भी न कर पाये। श्वेतांबरीभाई इसविषयमें बहुतही आगे बढ़गये हैं कई संस्थायें धारा-प्रवाह ग्रंथ छाप२ कर विनामूल्य वा लागतके मूल्यसे भी कम मूल्यपर बड़े २ ग्रंथ वितरण कर रहे हैं दो संस्थायें तौ सूरत और अहमदा-बादमें लाख २ रुपयोंकी पूंजीसे खुली हुई हैं परंतु हमारे यहां ऐसी एक भी संस्था नहीं है। बरसोंसे इटावेकी जैनतत्त्वप्रकाशिनीसभा इस कामकेलिये खुली हुई है जिसके ट्रैक्ट प्रचारादि कार्यसे समाज भर खुश है परंतु अभी तक किसी भी दानवीरने कोई बड़ी सहायता उस संस्थाको नहीं दी और न थोडी बहुत सहायता इस संस्थाको ही दी यह कितने भारी खेद और लज्जाका स्थान है ?

बडे आश्चर्यकी बात तौ यह है कि—श्वेतांबरीभाई तौ सैकडों

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रकमें एकदम दान करके एक एक पुस्तकमें अपना नाममात्र छपवा देते हैं और हमने इस ग्रंथमालामें रकम देनेवालोंका नाम छापनेके सिवाय प्रत्येकपुस्तककी दोसौ तीनसौ प्रति दान देनेकेलिये प्रदानकरके उनकी दीहुई रकम कायम रखकर विनाटका पैसे सैकडों शास्त्रोंके दान करनेका वा नाम करनेका सरल तरीका बताया था परंतु तब भी किसीने एक दो रकम इसउपकारीकार्यकेलिये नहीं दी। अस्तु अब भी समय है यदि दानवीरमहाशय थोडी २ द्रव्यसहायता दें तौ सनातनजैनग्रंथमाला न सही। इसचुन्नीलालजैनग्रथमालामें ही सब भाषाओंके ग्रंथ छपा २ कर वितरण करानेका कार्य कराके इस संस्थाको जीवित रख सकते हैं।

सनातनजैनवाचनालय।

जब कि इस संस्थाका नाम **जैनधर्मप्रचारिणीसभा** और धर्मप्रचारके कई उद्देश्य थे? तब सर्वसाधारणको जैनधर्मके ग्रंथ अखबार देखनेके लिये सुभीता करदेने की इच्छासे **सनातनजैनवाचनालय** नामकी एक पब्लिक फ्री लाइब्रेरी खोलदेनेका भी प्रस्ताव हुआ था परंतु बाहरी कुछ भी सहायता न मिलनेके कारण न खुलसकी तथापि अनेक विनामूल्य प्राप्तहुई पुस्तकोंके सिवाय संस्थासे हौ आजतक ८१=)॥। पुस्तकें हिंदी बंगला उत्तमोत्तम मासिकपत्र संग्रहकरने आदिमें लगादिये हैं। यदि आलमारी मकानभाडा, पुस्तक अखबारोंकेलिये दो तीनसौ रुपयोंकी सहायता मिल जाय तौ यह भी धर्मप्रचारका एक उत्तम साधन प्रारंभ हो सकता है। यदि चैत सुदी १ तक कोई सहायता नहिं मिली तौ लाचार अंगरेजी पढ़नेवाले जैनीलडकोंके जैनस्पोर्टसक्लबकी लाईब्रेरीमें ये सब पुस्तकें प्रदान करदी जांयगी।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

हाथचिट्ठा-

वीरनिर्वाणसंवत् २४३९ आश्विनसुदी १ से लगाकर वीरनिर्वाण सं. २४४१ की दीवाली तक।

जमा-

|||≡) बाबू रामेश्वरलालजी रईस छपरा

२००१≈) शेठ नेमिचंद बहालचंदजी वकील उस्मानाबाद

२३४॥)॥ शेठ नाथारंगजी गांधी मुंबईवाले

१९३॥=) बंगला महावीरचरित्र खाते शेठ नाथारंगजीसे मिले

११॥) प्रो. प्रा. कृष्णप्रिंटिंग्प्रेस

॥)॥ प्रो. प्रा. जार्जप्रिंटिंवर्क्स

१४॥-)॥ मुन्नालाल विद्यार्थी

३।) लाला उम्मेदसिंह मुसद्दीलालजी

१२॥।-) उदरतख तमे फुटकरजमा

२४।-) लाला गुरुदत्तामलजी पन्नालालकसूरवाले

२०॥≡) सुंदरलाल लुहाड्या टोंकवाला

३९९॥≈)॥ प्रो. प्रा. जनरलट्रेडिंकंपनी पेपरमर्चेंट काशी

५०) श्रीस्याद्वादमहाविद्यालय काशीका

२१) शांतिनाथ उपाध्याय कोल्हापुरका

२) बाबू जगमोहनवर्मा काशी

१)॥ भट्टारकविजयकीर्तिजी ईडर

नावें-

३११) पुस्तक खरीद विक्री खाते

३२१)। प्रबंधखाते वा खर्चखाते

१४८॥।-)॥। पोष्टजबारदानाखाते

५७॥=)॥। फर्नीचर खाते

१५०८॥।-)॥ सनातनजैनग्रंथमाला खाते

३॥=) मुन्नीलालजैनग्रंथमाला खाते

८१=)॥ सनातनजैनवाचनालय खाते

१४=) मूलचंद किसनदास कापडिया सूरत

≡) पं. बनवारीलालजीजैन

२०७॥=)॥ जैनग्रंथरत्नाकर कार्यालय व पन्नालालजैन

८॥)। प्रो.प्रा. चंद्रप्रभाप्रेसबनारस

१४॥=)॥ लालारामजी श्रीलालजैन

१११॥≠)॥ संपादकीपेट पेशगी

२) अतरसेन विद्यार्थी

७४।-) बाबूबनारसीदासकाशी प्रसादजी जौहरीकापाध्यक्ष संस्थाके पास जमा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१८०) प्रो. प्रा. औदुंबरप्रेसका
१००) अधिष्ठाता ऋषभब्रह्मचर्याश्रम हस्तिनापुर
५) श्रीजैनसिद्धांत विद्यालय मोरेना
८०।) शेठ रावजीसखारामजी दोशी शोलापुरवालोंके
२००) शेठ हीराचंदनेमिचंदजी दोशी शोलापुरवालोंके

३२९६।≡)॥।

८॥।-) हस्ते बा. दयाचंदजीगोयलके
।)। लाला बद्रीदासजी वकील
५≡)॥ शेठ खरूपचंद हुकुमचंदजी
१६॥=)। डा. सतीशचंद्रजीविद्याभूषण
१॥) नयी बहीखाते
११॥≡) श्रीरोकडपाते दिवालीकेदिन

३२९६।≡)॥।

हिसाब सनातनजैनग्रंथमालाका।

६०१) आमदनी साधारणग्र हक ७७ से
३००) आमदनी दानी ग्राहक ३ से रामेश्वरलालजी रईस छपरा बद्रीप्रसादजी वकील और पं. बनवारीलालजी जैनके
५००) श्रीयुत रायबहादुर शेठ कस्तूरचंदजी इंदौरवालोंका एक मुश्तदान
९८।॥)॥। आमदनी फुटकर अंकोंकी बिक्रीसे

१५००॥।)॥।

१५०८॥।-)॥ शेष ग्रंथोंमें लगते रहे हैं जिनमेंसे आप्तपरीक्षा ५०० जैनेंद्रप्रक्रिया ६०० और शेष पुस्तकें करीब सात सात सौ प्रतिके मौजूद हैं।

३००९॥=)।

२५५।) छपाई आप्तपरीक्षा पत्रपरीक्षा १००० की
६८५॥=)। छपाई समयप्राभृत प्रति १००० की
७९७॥≡) छपाई तत्त्वार्थराजवार्तिक प्रति १००० की
४२८॥)॥ छपाई जैनेंद्रप्रक्रिया १०००
२६२।≡)॥ छपाई आप्तमीमांसा व प्रमाणपरीक्षाकी
२८९॥।-)। छपाई शब्दार्णवचंद्रिका प्रथम खंडकी
२३५-)। छपाई शाकटायन चिंतामणि १ खंडकी
५४॥=)॥ फुटकर खर्च

३००९॥=)।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

हिसाब चुन्नीलालजैनग्रंथमालाका।

२०) फतेचंदहीराचंद ईडर
२०) दौलतरामबनारसीदासबाग
१५) नेमासासोनासानागपुर
५) महावीरसहायपांडेखुरई
२५) गांधीकुबेरचंदकस्तूर ईडर
४) मक्खनलाल तेजपाल
१५॥)। साहू विमलप्रसादजी नजीबाबाद
५०) रायनांदमलजी अजमेरा फारष्टकालेज देहरादून
६०॥≈) फुटकरमें ट्रेक्टोंकीविक्री

२१५॥)।

३॥≈) लगतेरहे जिसमें ट्रेक्टनं. १ की ५०० प्रति नं ३ की ५०० प्रति नं. ६ की ११०० प्रति मौजूद हैं।

२१८॥)।

१९॥≈)॥। ट्रेक्टनं.१ सनातनजैनधर्म २००० की छपाई
२९॥।)। ट्रेक्टनं.२ महावीरस्वामी काचरित्र २००० छपाई
२०।-)। ट्रेक्टनं.३ षड्द्रव्यदिग्दर्शन प्रति २००० छपाई
२४॥≡)॥। ट्रेक्टनं.४-५ हिंदीबंगला जैनधर्म ४००० छपाई
५॥) ट्रेक्टनं.१का बंगानुवाद कराई
१९॥) ट्रेक्टनं. १ दूसरीबार २००० छपाई
२५॥≡) ट्रेक्टनं. ३ दूसरीबार २५०० छपाई
१५) विधुशेखरभट्टाचार्यको काशीका राहखर्च दिया
४३) ट्रेक्टनं. ६ महावीरचरित्र नया २००० छपाया
४॥-) फुटकर खर्च

२१८॥)।

हिसाब प्रबंधखाता वा खर्चखाता।

११) फीस जैनधर्मप्रचारणी सभाके मेंबरोंकी
१) बखारिया प्रेमजीशिवजी
१) महावीरपांडे खुरई
१) उम्मेदसिंह मुसद्दीलाल

४५) मकानभाडा १ वर्ष का
८५) तनखा मैनेजरकी
४९=)। तनखा सिपाहीकी
६४।)। छपाई नियमावलीविज्ञापन वगैरहकी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१)सूरजमल अजमेरा गया
१)ब.बू.गुणेंद्रप्रसादजी आरा
१)बनारसीदासजैन कांधला
१)मुखरामजी कलकत्ता
१)रामविलासजी पाटणी गया
१)रंखचंदछाबड़ा गया
१)पुरुषोत्तमलालजी छपरा
१)भूरालाल कंछेदीलाल
१॥।) बंगीयसार्वधर्मपरिषदका
॥।)॥ पं.मोतीलालजी का आया
१३॥)॥
३२१)। शेष रहे
३३४॥)॥।

२९।८)॥। दौराखर्च कोल्हापुर इंदौरका
६१।८)॥ फुटकरखर्च तलबत्ती लिफाफेवगैरहका
३३४॥)॥।

ये संक्षिप्त हिसाब है परंतु खाते रोजनावेमें व्यौरेवार सब हिसाब है किसी महाशयको किसी हिसाबके देखनेकी इच्छा हो तो पत्र द्वारा आज्ञा करने पर तत्काल ही व्यौरेवार लिखकर भेज दिया जायगा।

जैनसमाजका दास—

पन्नालाल बाकलीवाल

मंत्री-भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था

ठि०—मदागिनंजनमंदिर पोष्ट-बनारस सिटी।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आगामी सूचना ।

विदित हो कि-**सनातनजैनग्रंथमाला**में अपूर्णग्रंथ पूर्ण हो जानेके पश्चात् एक तो श्लोकवार्त्तिकजी बड़े अक्षरोंमें छपाया जायगा (जिसमें २०००) रुपये खर्च पड़ेंगे) क्योंकि यह कलकत्तेकी न्यायतीर्थपरीक्षामें भरती है। दूसरे अजैनविद्वानोंमें प्रभावना करनेकेलिये रविषेणाचार्यकृत पद्मपुराणजी बड़ा छपावेंगे इसमें अनुमान १५००-१६००) रुपये खर्चपड़ेंगे सो सब भाइयों को सौसौ दोदोसौ रुपयोंकी सहायता भेजना चाहिये। जो महाशय १००) रुपये भेजेंगे उनको हम दोनों ग्रंथोंकी पंद्रह २ प्रति या किसी भी एक ग्रंथ की ३० प्रति भेज देंगे और व्याजमें उनका नाम जिनवाणीजीर्णोद्धारक महाशयोंकी फेहरिस्तमें ग्रंथके एक पृष्ठमें छपा देंगे। आशा है कि जो महाशय इस जिनवाणीजीर्णोद्धार और अजैनोंमें धर्मप्रचारार्थ सहायता दें, वे चैतसुदी १५ तक हमें सूचना दें। अभी रुपया कोई न भेजें।

इसके सिवाय चुन्नीलालजैनग्रंथमालामें नीचे लिखे ग्रंथ छपेंगे सो एक एक दानी महाशय एकएक ग्रंथ छपानेका खर्च भेजकर एक तो ग्रंथ पर अपना या अपने पिताजी वगैरह का नाम छपाकर नाम करें। दूसरे हम २०० प्रति ग्रंथकी देंगे सो दान करकें पुण्योपार्जनकरैं तीसरे-शेष पुस्तकें हम अजैनोंको प्रायः विनामूल्य वितरण करैंगे उसका पुण्य भी लूटैं।

१। जैनेंद्रव्याकरणकी पंचसंधि भाषाटीका सहित छपाई १००० प्रति ५०)
२। जैनधर्मका परिचय हिंदीमें ,, २०००० प्रति १००)
३। द्रव्यसंग्रह बंगला अनुवाद सहित ,, १००० प्रति १००)
४। तत्त्वार्थसूत्र बंगानुवाद सहित ,, १००० प्रति ४००)
५। पुरुषार्थसिद्ध्युपाय बंगानुवाद सहित ,, १००० प्रति ५००)
६। परीक्षामुख न्याय हिंदी अनुवाद सहित ,, १००० प्रति १५०)
७। परीक्षामुख न्याय बंगानुवाद सहित ,, १००० प्रति १५०)
८। महावीरस्वामीका ऐतिहासिक जीवनचरित्र बड़ा १००० प्रति ३००)
९। महावीरस्वामीका ,, जीवनचरित्र बंगलामें १००० प्रति ४००)
१०। महावीरस्वामीका ,, जीवनचरित्र मराठीमें १००० प्रति ३००)
११। महावीरस्वामीका ,, जीवनचरित्र अंगरेजीमें १००० प्रति ५००)

पत्र भेजने का पता-पन्नालाल बाकलीवाल
मंत्री-भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था
ठि० मदागिन जैनमंदिर पो० बनारस सिटी।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्यावश्यकीय प्रार्थना।

दानवीरमहाशयों! इस संस्थामें नीचेलिखे संस्कृत व भाषा ग्रंथ तैयार हैं यदि आपलोग सबकी एकएक प्रतिमंदिरजीके भंडारमें खरीदकर विराजमान करेंदेंगे तौ इस संस्थाका काम जो जिनवाणीजीर्णोद्धार और प्रचारका है बराबर चलता रहैगा। यदि आप कहैं कि भाषा ग्रंथ तौ स्वाध्यायमें कामभी आवैंगे संस्कृतग्रंथ हमारे किसकामके? सो ऐसा विचार नहिं करनाचाहिये। प्रथम तौ कोई न कोई आपका लड़का संस्कृतका जानकार पैदा होजायगा नहीं तौ कोई भी अजैन विद्वान् आपके यहां आवेतौ उसे दिखाना इन ग्रंथोंको देखते ही उसके दिलमें जैनधर्मका बड़प्पन बैठ जायगा। तीसरे—भगवानकी प्रतिमाजीकी तरह इन शास्त्रोंकी भी नित्यपूजन विनय और रक्षा करनेसे भी अवश्य पुण्यकी प्राप्ति होगी-इस पंचमकालमें देवगुरुशास्त्रमेंसे ये देव और शास्त्र दो ही तौ रहगये हैं इनकी रक्षा, प्रचार करना आपका परमधर्म व अत्यावश्यकीय कार्य है।

आप्तपरीक्षा व पत्रपरीक्षा स.	२)
समयसारजी दो टीकासहित	५)
तत्त्वार्थराजवार्तिकजी पूर्ण	६)
जैनेंद्रप्रक्रिया—गुणनंदि कृत	१॥)
शब्दार्णवचंद्रिका(जैनेंद्रव्या.)	५)
आप्तमीमांसा व प्रमाणपरीक्षा	२)
शाकटायनचिंतामणि १ खंड	२)

ये नौ ग्रंथ सनातनजैनग्रंथमालाके १२ अंकोंमें छपे हैं कुल न्योछावर २६॥) है परंतु एकसीट (सबके सब) लेनेसे १०) रुपयेमें ही भेजदेंगे डांकखर्च १) रुपया जुदा लगेगा। अगर कोई महाशय दान करना चाहें तो १००)रुपयों में हर ग्रंथकी पंद्रह २ प्रति भेजदेंगे।

भाषा ग्रंथ।

जिनशतक संस्कृत भाषाटीका	॥)
धर्मरत्नोद्योत-चौपाईबंध	१)
धर्मप्रश्नोत्तर-वचनिका	२)
शाकटायन धातुपाठ	।=)
श्रीमहावीरचरित्र सैकड़ा	३)
सनातन जैनधर्म सैकड़ा	१॥)
षट्द्रव्यदिग्दर्शन सैकड़ा	१॥)

मिलनेका पता—

पन्नालाल बाकलीवाल,

मंत्री-भारतीयजैनसिद्धांत प्रकाशिनीसंस्था-बनारस सिटी।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रियोंके पढ़ने योग्य नई पुस्तकें।

सदाचार, पातिव्रत, गृहकर्म, शिशुपालन आदिकी शिक्षा देनेवाली सरल भाषामें लिखी हुई स्त्रियोपयोगी पुस्तकोंकी जैनसमाजमें बहुत ज़रूरत है। यह देखकर हमने नीचे लिखी पुस्तकें मँगाकर बिक्रिके लिए रक्खी हैं।

१ **सरस्वती**—गृहस्थजीवनका बहुत ही शिक्षाप्रद उपन्यास। बड़ा ही दिलचस्प है। मूल्य १) पक्की जिल्दका १।)

२ **वीरवधू**—चौहानराजा पृथ्वीराज और उसकी वीर राणी संयोगिताका वीररसपूर्ण चरित्र। पाँच चित्र कई रंगके छपे हुए हैं। मू० ॥)

३ **आदर्श परिवार**—प्रत्येक कुटुम्बमें पढ़े जाने योग्य। मू०।॥)

४ **शान्ता**—एक आदर्शस्त्रीका चरित्र। मू० ॥)

५ **लक्ष्मी**— ,, ,, ।)

६ **कन्या-सदाचार**—लड़कियोंके कामकी। मू० ।)

७ **कन्यापत्रदर्पण**— ,, ,, म० -)

८ **बनवासिनी**—बहुत ही हृदयद्रावक उपन्यास। मू० ।)

मँगानेका पता—

मैनेजर, जैनरत्नाकर कार्यालय, गिरगांव बम्बई।

Printed by Nathuram Premi at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building, Sandhurst Road, Girgaon Bombay, & Published by him at Hirabag, Near C. P. Tank Girgaon Bombay.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कलकत्ते के प्रसिद्ध डाक्टर बर्म्मन की

कठिन रोगों की सहज दवाएं।

गत ३० वर्ष से सारे हिन्दुस्थानमें घर घर प्रचलित हैं। विशेष विज्ञापन की कोई आवश्यक्ता नहीं है, केवल कई एक दवाइयों का नाम नीचे देते हैं।

हैजा गर्मी के दस्त में

असल अर्ककपूर

मोल ।) डाःमः-) १ से ४ शीशी

पेचिश, मरोड़, ऐंठन, शूल, आंव के दस्तमें-

क्लोरोडिन

मोल ।-) दर्जन ४) रुपया

कलेजे की कमजोरी मिटाने में और बल बढ़ाने में—

कोला टौनिक

मोल १) डाः ।-) आने।

पेट दर्द, बादीके लक्षण मिटानेमें

अर्कपूदीना [सब्ज]

मोल ॥) डाःमः ।-) आने।

अन्दरके अथवा बाहरी दर्दमिटानेमें

पेन होलर

मोल ॥) डाः मः ।-) पांच आने

सहज और हलका जुलाबके लि.

जुलाबकी गोली

२ गोली रातको खाकर सोवे सबेरे खुलासा दस्त होगा। १६गोलियोंकी डिब्बी।-) डाःमः १ से ८ तक ।-) पांच आने.

पूरे हाल की पुस्तक विना मूल्य मिलती है दवा सब जगह हमारे एजेन्ट और दवा फरोशोंके पास मिलेगी अथवा—

डाः एस, के, बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

(इस अंकके प्रकाशित होनेकी तारीख ७-२-१५।)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org